मक्सिम गोर्की

इटली की कहानियां

एक प्रमुखतम रूसी लेखक, सोवियत साहित्य के प्रवर्तक मक्सिम गोर्की (१८६८–१९३६) के कृतित्व से सारी दुनिया के पाठक भली-भांति परिचित हैं। उनका 'मां' उपन्यास, 'बचपन', 'जीवन की राहों पर', 'मेरे विश्वविद्यालय' त्रिखण्डीय आत्मकथा, 'क्लिम समगीन का जीवन' नामक उनका विराट उपन्यास, 'रसातल', 'करवट', 'दुश्मन', 'वास्सा जेलेज्नोवा' आदि नाटक, कहानियां, व्ला० इ० लेनिन, लेव तोलस्तोय, अन्तोन चेखोव के शब्दचित्र अनेक विदेशी भाषाओं में निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं।

सोवियत देश के पहले शिक्षा-मंत्री अनातोली लुनाचार्स्की ने गोर्की के बारे में लिखा था – "मक्सिम गोर्की के भाग्य, उनके व्यक्तित्व की सबसे लाक्षणिक और विलक्षण बात तो सतत ऊपर को उठती हुई वह रेखा है जो हमारे समाज के बहुत ही नीचे बिन्दु लगभग तल से जैसा कि क्रान्तिपूर्व का रूस था, आरम्भ होती है और उन शिखरों को जा छूती है जिन्हें विश्व इतिहास में बहुत कम लोग ही छू पाये हैं।"

'इटली की कहानियां' वह कथा-माला है जिसे गोर्की ने इटली में पहली बार बिताये गये १९०६ से १९१३ तक के वर्षों में रचा और ये इटली के जनसाधारण के जीवन को समर्पित हैं। गोर्की ने इनके लिये एंडर्सन के इस वाक्य को "स्वयं जीवन जिनका सृजन करता है, उनसे श्रेष्ठ किस्से-कहानियां नहीं होतीं" आदर्श-वाक्य माना है।

"लोगों के कठिन और शीघ्र ही उबा देनेवाले जीवन में कुछ प्रफुल्लता लाना" इस पुस्तक के विचार को गोर्की ने यही अभिव्यक्ति दी है।

स्वय जीवन जिनका सृजन करता है, उनमे श्रेष्ठ विस्मे-कहानिया नही होनी।

एडर्मन



नेपल्ज के ट्राम-कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी थी। रिव्येरा क्याया सड़क की पूरी लम्बाई में ट्राम के खाली डिब्बे खड़े थे और विजय-चौक में ड्राइवरों

तया कडक्टरो की भीड जमा थी – बडे ही मुशमिजाज, हो-हल्ला करनेवाले और पारे की तरह चचल नेपल्जवामियों की भीड। इन लोगों के मिरो और बाग के जगले के ऊपर तलवार की तरह पतली फव्वारे की धार हवा मे चमक रही थी। जिन लोगो को इस बडे नगर के सभी भागो मे काम-काज से जाना था, उनकी भारी भीड शत्रुता की भावना अनुभव करते हुए इन हडतालियो को घेरे थी। ऐसे सभी कारिन्दे, कारीगर, छोटे-मोटे व्यापारी और दर्जी आदि हडतालियो को ऊचे-ऊचे और खीभते हुए भला-बुरा कह रहे थे। गुस्से मे भरे शब्द, चुभते व्यग्य-वाक्य हवा मे गूज रहे थे, हाथ लगातार लहरा रहे थे जिनकी मदद से नेपल्जवामी कभी न रुकनेवाली अपनी जबान की तरह ही बहुत अभिव्यक्तिपूर्ण तथा अच्छे ढग से अपने को व्यक्त करते हैं।

सागर की ओर से मन्द-मन्द समीर बह रहा था। नगर-उपवन के बहुत बडे-बडे ताड वृक्ष गहरे हरे रग की अपनी शाखाओ के पखो को धीरे-धीरे हिला रहे थे। इन ताड वृक्षो के तने भीम-काय हाथियो के भद्दे पैरो से बहुत मिलते-जुलते थे। बच्चे – नेपल्ज की सडको-गलियो के अधनगे बच्चे – गौरैयो की तरह फुदक रहे थे, हवा को अपनी किलकारियो और ठहाको से गुजा रहे थे।

नक्काशी की प्राचीन कलाकृति से मिलता-जुलता शहर रश्मि-स्नात था और पूरे का पूरा मानो आर्गन बाजे के सगीत मे डूबा था। खाडी की नीली लहरे तट-बध से टकराती थी, खजडी जैसी छनक पैदा करती हुई लो

के शोर और चीख़-चिल्लाहट का साथ देती थीं।

भीड़ की ग़ुस्से भरी आवाज़ों का लगभग जवाब दिये बिना हड़ताली एक-दूसरे के साथ सटते जाते थे, बाग़ के जंगले पर चढ़कर लोगों के सिरों के ऊपर से सड़क की ओर बेचैनी से देखते थे और कुत्तों से घिरे हुए भेड़ियों जैसे लगते थे। सभी यह जानते थे कि एक जैसी वर्दी पहने हुए हड़ताली इस दृढ़ निर्णय के सूत्र में कसकर बंधे हुए हैं कि किसी भी हालत में क़दम पीछे नहीं हटायेंगे और भीड़ को इस बात से और भी अधिक ग़ुस्सा आ रहा था। किन्तु भीड़ में कुछ दार्शनिक क़िस्म के लोग भी थे जो बड़े इतमीनान से सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए हड़ताल के बहुत ही कट्टर विरोधियों के साथ इस प्रकार तर्क-वितर्क कर रहे थे –

"अजी महानुभाव! अगर बच्चों को सेवैयां तक खिलाने को पैसे काफ़ी न हों तो आदमी करे भी तो क्या?"

नगरपालिका के बने-ठने पुलिसवाले दो-दो, तीन-तीन की टोलियों में खड़े हुए इस बात की ओर ध्यान दे रहे थे कि लोगों की भीड़ के कारण ट्रामों की गति-विधि में बाधा न पड़े। वे कड़ाई से तटस्थता का अनुकरण कर रहे थे, हड़तालियों तथा हड़ताल-विरोधियों को एक जैसी शान्त नज़र से देखते थे। और जब चीख़-चिल्लाहट तथा हाव-भाव बहुत ही उग्र रूप धारण कर लेते थे तो दोनों पक्षों का ख़ुशमिज़ाजी से मज़ाक उड़ाते थे। कोई गम्भीर भिड़न्त हो जाने की हालत में दखल देने को तैयार फ़ौजी-पुलिस के दस्ते छोटी-छोटी और हल्की-हल्की बन्दूक़ें

हाथ मे लिये हुए पास की तग-सी गली के घरो की दीवार के साथ सटे खडे थे। तिकोने टोप, छोटे-छोटे लबादे और पतलूनो पर रक्त की दो धाराओ जैसी पट्टियोंवाले पतलून पहने ये लोग खासे मनहूस लग रहे थे।

आपसी तू-तू मैं-मैं, ताने-बोलिया, व्यग और तर्क-वितर्क – अचानक यह सब कुछ बन्द हो गया, लोगो मे एक नयी, मानो शान्ति देनेवाली भावना की लहर-सी दौड गयी, हडतालियो के चेहरो पर अधिक गम्भीरता छा गयी, साथ ही वे एक-दूसरे के अधिक निकट हो गये और भीड चिल्ला उठी –

"फौजी आ गये!"

हडतालियो की मजाक उडाती और खुशी भरी सीटिया सुनाई दी, अभिवादन के नारे गूज उठे और हल्के भूरे रंग का सूट तथा पानामा टोपी पहने कोई मोटा-सा आदमी पत्थरो की सडक पर पाव बजाता हुआ उछलने-कूदने लगा। कडक्टर और ट्राम-ड्राइवर भीड को चीरते हुए धीरे-धीरे ट्रामो की तरफ बढने लगे, उनमे से कुछेक तो पायदानो पर चढ भी गये – वे पहले से भी ज्यादा सजीदा हो गये थे और भीड की आवाजो का कठोरता से जवाब देते हुए उसे रास्ता देने को मजबूर कर रहे थे। खामोशी छा गयी।

तटवर्ती सान्टा लुचीया की ओर से भूरी वर्दिया पहने छोटे-छोटे फौजी नाच की तरह हल्के-फुल्के कदम बढाते, पावो से लयबद्ध आवाज पैदा करते और बायें हाथो को एक ही ढग से यन्त्रवत् हिलाते हुए चले आ रहे थे। वे मानो टीन के बने हुए और चाबी से चलनेवाले खिलौनो की तरह आसानी से टूट

जानेवाले प्रतीत हो रहे थे। त्योरियां चढ़ाये और होठों पर तिरस्कारपूर्वक वल डाले हुए ऊंचे क़द का एक सुन्दर अफ़सर इनका नेतृत्व कर रहा था। ऊंचा टोप पहने, लगातार कुछ बोलता और हाथों के असंख्य संकेतों से हवा को चीरता हुआ एक मोटा-सा आदमी उसके साथ-साथ उछलता और दौड़ता चला आ रहा था।

भीड़ तेजी से ट्रामों से दूर हट गयी – भूरे रंग की माला के मनकों की तरह फ़ौजी पायदानों के पास रुकते हुए, जहां हड़ताली खड़े थे, डिब्बों के निकट बिखर गये।

ऊंचा टोप पहनेवाले को घेरे हुए कुछ अन्य धीर-गम्भीर लोग हाथों को जोर से हिलाते हुए चिल्ला रहे थे –

"आखिरी बार ... Ultima volta!* सुनते हैं?"

अफ़सर एक ओर को सिर झुकाये हुए ऊबभरे ढग से अपनी मूंछों पर ताव दे रहा था। ऊंचे टोप को हिलाता और भागता हुआ वह व्यक्ति उसके पास आया और उसने खरखरी आवाज़ में चिल्लाकर कुछ कहा। अफ़सर ने तिरछी नज़र से उसकी तरफ़ देखा, तनकर खड़ा हो गया, उसने छाती को अकडाया और ऊंची आवाज़ में आदेश देने लगा।

ऐसा होते ही फ़ौजी उछलकर ट्रामों के पायदानों पर दो-दो की संख्या में चढ़ने लगे और इसी समय ट्राम-ड्राइवर और कंडक्टर नीचे कूद गये।

---

* आखिरी बार! (इतालवी)

भीड़ को यह दिलचस्प मज़ाक-सा प्रतीत हुआ – लोग चीखने-चिल्लाने, सीटियाँ बजाने और ठहाके लगाने लगे। किन्तु यह सब एकाएक शान्त हो गया और लोग गम्भीर तथा तनावपूर्ण चेहरे बनाये और हैरानी से आखें फैलाये हुए भारी मन से ट्रामों से पीछे हटने लगे और सबसे आगे खड़ी ट्राम की ओर बढ़ चले।

सभी को यह साफ दिखाई देने लगा कि ट्राम के पहियों से दो कदम की दूरी पर पके बालोंवाला एक ड्राइवर, जिसका चेहरा फौजियों जैसा था, सिर से टोपी उतारकर लाइनों के आर-पार चित लेटा हुआ है और चुनौती देती-सी उसकी मूछें आकाश को ताक रही हैं। बन्दर की तरह चुस्त-फुर्तीला, एक नाटा-सा तरुण भी उसके पास ही लेट गया और उसके बाद अन्य लोग भी इतमीनान से वहीं लेटते चले गये

भीड़ में दबी-घुटी भनभनाहट थी, मादोन्ना का आह्वान करती हुई भयभीत-सी आवाजें गूज उठती थीं, कुछ लोग झल्लाकर भला-बुरा भी कहते, औरतें चीखतीं और आहें भरती और इस दृश्य से आश्चर्यचकित छोकरे रबड़ के गेंदों की तरह उछल रहे थे।

ऊचा टोप पहने व्यक्ति सिसकती-सी आवाज में कुछ चिल्लाया, अफसर ने उसकी ओर देखकर कधे झटके – अफसर को ड्राइवरों की जगह पर अपने फौजी तैनात करने चाहिये थे, किन्तु उसके पास हड़तालियों के विरुद्ध संघर्ष करने का आदेश-पत्र नहीं था।

तब ऊचे टोपवाला व्यक्ति जी-हुजूरी करनेवाले कुछ आदमियों को साथ लिये हुए फौजी पुलिसियों की ओर लपका – वे अपनी जगहों से हिले, पटरियों पर लेटे हुए लोगों के पास

ाये और उन्हें वहां से उठाने के इरादे से उन पर झुक गये।
कुछ हाथापाई और झगड़ा हुआ, लेकिन अचानक धूल से लथपथ दर्शकों की सारी भीड़ हिली-डुली, चीखी-चिल्लायी और ट्राम की पटरियों की ओर भाग चली। पनामा टोपी पहने हुए व्यक्ति ने टोपी सिर से उतारी, उसे हवा में उछाला, हड़ताली का कंधा थपथपाकर तथा ऊंची आवाज़ में उसे प्रोत्साहन के कुछ शब्द कहकर सबसे पहले उसके निकट लेट गया।

इसके बाद खुशमिज़ाज और शोर मचाते हुए कुछ लोग, ऐसे लोग जो दो मिनट पहले तक वहां नहीं थे, ट्राम की पटरियों पर ऐसे गिरने लगे मानो उनकी टांगें काट दी गयी हों। वे जमीन पर लेटते, हंसते हुए एक-दूसरे की ओर देखकर मुंह बनाते और चिल्लाकर अफ़सर से कुछ कहते जो ऊंचे टोपवाले व्यक्ति के सामने अपने दस्ताने फटकारता, व्यंग्यपूर्वक हंसता और सुन्दर सिर को झटकता हुआ कुछ कह रहा था।

अधिकाधिक लोग पटरियों पर लेटते जाते थे, और
अपनी टोकरियां और पोटलियां फेंक रही थीं, हंसी से लो
पोट होते हुए छोकरे ठिठुरे पिल्लों की तरह गुड़ी-मुड़ी हो
थे और अच्छे कपड़े पहने लोग भी दायें-बायें करवट लेते धूल में लोट रहे थे।

पहली ट्राम से पांच फ़ौजियों ने बहुत-से लोगों को प
के नीचे लेटे देखा, हंसी के मारे उनका बुरा हाल हो रहा
वे हैंडलों को थामकर डोलते हुए, सिरों को पीछे की ओर
तथा आगे की तरफ़ झुकते हुए जोर के ठहाके लगा
अब वे टीन के बने खिलौनों जैसे बिल्कुल नहीं लग

.. आध घण्टे के बाद शोर मचाती, ची-चू की आवाज़ पैदा करती हुई ट्रामें मारे नेपल्ज में चल रही थीं, उनके पायदानों पर खुशी से मुस्कराते हुए विजेता खड़े थे और डिब्बों के साथ-साथ चलते हुए भी वही बड़ी शिष्टता से पूछ रहे थे—

"टिकट ?।"

उनकी ओर लाल और पीले नोट बढ़ाते हुए लोग आंखें मिचमिचाते थे, मुस्कराते थे, खुशमिजाजी से बड़बड़ाते थे।

तथा खाते-पीते लोग भी उनमें शामिल थे। नगरपालिका के सदस्य इस भीड में सबसे आगे थे। इनके सिरों के ऊपर रेशमी धागों से बड़े कलात्मक ढंग से कढ़ा हुआ भारी नगर-ध्वज फहरा रहा था। पास ही में मजदूर-संगठनों के रंग-बिरंगे झण्डे हिल-डुल रहे थे। झण्डों के सुनहरे झब्बे, झालरें और तनियां तथा ध्वज-डंडों के धातु से मढ़े हुए बर्छीनुमा सिरे चमचमा रहे थे, रेशम की सरसराहट सुनाई पड रही थी, समारोही मन स्थिति-वाली भीड का मन्द गायन महगान की तरह धीमे-धीमे गूंज रहा था।

एक ऊंचे चबूतरे पर कोलम्बस की मूर्त्ति भीड के ऊपर खड़ी थी, उसी कोलम्बस की मूर्त्ति जिसने अपने विश्वासों के लिये बहुत दुख-दर्द सहे और विजयी भी इसलिये हुआ कि उसमें विश्वास करता था। इस समय भी वह नीचे खड़े लोगों की ओर देख रहा था और अपने संगमरमर के होंठों से मानो यह कह रहा था –

"केवल विश्वास करनेवाले ही विजयी होते हैं।"

बाजे बजानेवालों ने कांसे-तांबे के अपने बाजे चबूतरे के गिर्द मूर्त्ति के कदमों में रख दिये थे और वे धूप में सोने की तरह चमक रहे थे।

पीछे की ओर ढालू अर्ध-चन्द्राकार स्टेशन की संगमरमर की, भारी-भरकम इमारत ऐसे अपनी भुजायें फैलाये खड़ी थी मानो लोगों को अपनी बाहों में भर लेना चाहती हो। बन्दरगाह की ओर से भाप-चालित जहाजों की भारी फक-फक, पानी में प्रोपेलर की दबी-घुटी आवाज, जंजीरों की छनक, सीटियां

हुए चले आ रहे थे – बहुत ही छोटे-छोटे, धूल-मिट्टी मे लथपथ और शायद थके-हारे। उनके चेहरे गम्भीर थे, किन्तु आखो मे सजीवता और निर्मलता की चमक थी और जब बैड ने गैरीबाल्डी के स्तुतिगान की धुन बजायी तो उनके दूबले-पतले, तीखे और क्षुधा-पीडित चेहरो पर खुशी की लहर-सी दौड गयी, उल्लासपूर्ण मुस्कान खिल उठी।

भीड ने भविष्य के इन लोगो का बेहद शोर मचाते हुए स्वागत किया, उनके सम्मुख झण्डे झुका दिये गये, बच्चो की आखो को चौंधियाते और कानो को बहरे करते हुए बाजे खूब जोरो से बज उठे। ऐसे जोरदार स्वागत से तनिक स्तम्भित होकर घडी भर को वे पीछे हटे, किन्तु तत्काल ही सम्भल गये, मानो लम्बे हो गये, घुल-मिलकर एक शरीर बन गये और सैकडो कण्ठो से, किन्तु मानो एक ही छाती से निकलती आवाज में चिल्ला उठे –

"Viva Italia!"*

"नव पारमा नगर जिन्दाबाद!" बच्चो की ओर दौडती हुई भीड ने जोरदार नारा लगाया।

"Evviva Garibaldi!"** भूरे पच्चड की भाति भीड मे घुसते और उसी मे लुप्त होते हुए बच्चे चिल्लाये।

होटलो की खिडकियो मे और घरो की छतो पर सफेद परिन्दो की तरह रूमाल हिल रहे थे, वहा से लोगो के सिरो

---

* इटली जिन्दाबाद! (इतालवी)

** गैरीबाल्डी जिन्दाबाद! (इतालवी)

पर फूलों की बारिश हो रही थी और ऊंची-ऊंची उल्लासपूर्ण आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

सभी कुछ समारोही बन गया, सभी कुछ में सजीवता आ गयी, भूरे रंग का संगमरमर तक किरण-बिन्दुओं से खिल उठा।

झण्डे लहरा रहे थे, टोप-टोपियां और फूल हवा में उड़ रहे थे। वयस्कों के सिरों के ऊपर बच्चों के छोटे-छोटे सिर दिखाई देने लगे, लोगों का स्वागत करते और फूलों को लोकते हुए बच्चों के छोटे-छोटे, गन्दे-मैले हाथ झलक दिखाने लगे और हवा में ये नारे लगातार ऊंचे-ऊंचे गूंज रहे थे—

"Viva il Socialismo!"*

"Evviva Italia!"**

लगभग सभी बच्चों को गोद में उठा लिया गया था, वे वयस्कों के कंधों पर बैठे थे, कठोर से प्रतीत होनेवाले मुच्छल लोगों की चौड़ी छातियों से चिपके हुए थे। शोर-शराबे, हंसी-ठहाकों और हो-हल्ले में बैंड बाजे की आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे रही थी।

शेष रह गये बालकों को लेने के लिये नारियां भीड़ में इधर-उधर भाग रही थी और एक-दूसरी से कुछ इस तरह के प्रश्न कर रही थी—

"अन्नीता, तुम दो बच्चे ले रही हो न?"

"हां। आप भी?"

---

* समाजवाद जिन्दाबाद! (इतालवी)

** इटली जिन्दाबाद! (इतालवी)

"लगड़ी मार्गारीता के लिये भी एक बच्चा ले लेना ..."

सभी ओर उल्लासपूर्ण और पर्व के रंग मे रंगे हुए चेहरे थे, दयालु और नम आखे थीं और कहीं-कहीं पर हड़तालियो के बच्चे रोटी भी खाने लगे थे।

"हमारे वक्तो मे किसी को यह नहीं सूझा!" चोंच जैसी नाक और दांतों के बीच काला सिगार दबाये हुए एक बूढ़े ने कहा।

"और कितना सीधा-सादा उपाय है "

"हा! सीधा-सादा और समझदारी का।"

बूढ़े ने मुह मे सिगार निकाला, उसके सिरे को गौर से देखा और आह भरकर राख झाड़ी। इसके बाद पास्मा के दो बच्चो को, जो शायद भाई थे, अपने निकट देखकर ऐसी भयानक-सी सूरत बना ली मानो उन पर हमला करने को तैयार हो। बच्चे गम्भीर मुद्रा बनाये उसकी तरफ देख रहे थे। इसी समय उसने टोपी आखो पर खीच ली और हाथ फैला दिये। बच्चे माथे पर बल डालकर कुछ पीछे हटते हुए एक-दूसरे के साथ सट गये। बूढ़ा अचानक उकड़ू बैठ गया और उसने मुर्गे से बहुत मिलती-जुलती आवाज मे जोर से बाग दी। नगे पैरो को पत्थरो पर पटकते हुए बच्चे खिलखिलाकर हस दिये। बूढ़ा उठा, उसने अपना टोप ठीक किया और यह मानते हुए कि अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है, लड़खड़ाते पैरो पर डोलता हुआ वहा से चल दिया।

पके बालोवाली एक कुबड़ी औरत, जो चुड़ैल बाबा-याग जैसी लगती थी और जिसकी हड्डीली ठोडी पर कड़े, भूरे बाल

"लंगडी मार्गारीता के लिये भी एक बच्चा ले लेना ..."

सभी ओर उल्लासपूर्ण और पर्व के रंग में रंगे हुए चेहरे थे, दयालु और नम आखे थी और कही-कही पर हडतालियों के बच्चे रोटी भी खाने लगे थे।

"हमारे वक्तो मे किसी को यह नही सूझा!" चोच जैसी नाक और दातो के बीच काला सिगार दबाये हुए एक बूढे ने कहा।

"और कितना सीधा-सादा उपाय है ..."

"हा! सीधा-सादा और समझदारी का।"

बूढे ने मुह से सिगार निकाला, उसके सिरे को गौर से देखा और आह भरकर राख झाडी। इसके बाद पास्मा के दो बच्चो को, जो शायद भाई थे, अपने निकट देखकर ऐसी भयानक-सी सूरत बना ली मानो उन पर हमला करने को तैयार हो। बच्चे गम्भीर मुद्रा बनाये उसकी तरफ देख रहे थे। इसी समय उसने टोपी आखो पर खीच ली और हाथ फैला दिये। बच्चे माथे पर बल डालकर कुछ पीछे हटते हुए एक-दूसरे के साथ सट गये। बूढा अचानक उकडू बैठ गया और उसने मुर्गे से बहुत मिलती-जुलती आवाज मे जोर से बाग दी। नगे पैरो को पत्थरो पर पटकते हुए बच्चे खिलखिलाकर हस दिये। बूढा उठा, उसने अपना टोप ठीक किया और यह मानते हुए कि अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया है, लडखडाते पैरो पर डोलता हुआ वहा से चल दिया।

पके बालोवाली एक कुबडी औरत, जो चुडैल बाबा-यागा जैसी लगती थी और जिसकी हड्डीली ठोडी पर कडे, भूरे बाल

"Evviva Parma-a!"*

बच्चो को उठाये या उनके हाथ थामे हुए लोग चले गये और चौक मे रह गये कुचले-मुरझाये फूल, टॉफियो के कागज और प्रफुल्ल हमालो का दल और उनके ऊपर थी नयी दुनिया को खोजनेवाले उदात्त व्यक्ति की मूर्त्ति।

और सडको पर से नवजीवन की ओर बढते लोगो की प्रसन्नतापूर्ण ऊची-ऊची आवाजे ऐसे सुनाई दे रही थी मानो बहुत बडे-बडे बिगुल बज रहे हो।

---

* पार्मा जिन्दाबाद! (इतालवी)



३

उमसभरी दोपहर थी, कहीं पर अभी-अभी तोप दगी थी — धीमी, दबी-घुटी और ऐसी अजीब-सी आवाज़ करती हुई मानो कोई सड़ा हुआ, विराटकाय अण्डा

फट गया हो। तोप के धमाके से साथ उठनेवाली हवा में नगर की तीखी गंधें—जैतून के तेल, लहसुन, शराब और नमी हुई धूल की गंधें—अधिक तीव्रता से अनुभव होने लगी।

तोप के भारी धमाके से दब जानेवाला गर्म दक्षिणी नगर का कोलाहल, जो क्षण भर को सड़क के तपे हुए पत्थरों से चिपक गया था, फिर से सड़कों के ऊपर उठा और एक चौड़ी, धुंधली नदी के रूप में सागर की ओर बह चला।

नगर किसी पादरी के बढ़िया कसीदावाले जामे की तरह समारोही रूप में चटकीला और रंग-बिरंगा था। उसकी आवेगपूर्ण चीखों-चिल्लाहटों, धड़कनों-स्पन्दनों और आहों-कराहों में प्रभु की आराधना की तरह जीवन-गान गूंज रहा था। हर नगर मानव-श्रम से बना हुआ मन्दिर है, हर कार्य भविष्य की प्रार्थना है।

सूरज अपने शिखर पर था, दहकता हुआ नीलाकाश आंखें चौंधिया रहा था मानो उसके प्रत्येक अंश से जलती हुई नीली किरण पृथ्वी और सागर पर नीचे गिर रही थी जो नगर के हर पत्थर और पानी में गहरी धंस जाती थी। सागर रुपहली कसीदाकारी से खूब सजे रेशमी कपड़े की तरह चमक रहा था और तनिक हरी, गुनगुनी लहरों की स्वप्निल गति से तट को छूते हुए जीवन और सुख-सौभाग्य के स्रोत अर्थात् सूर्य की महिमा का धीमा-धीमा और बुद्धिमत्तापूर्ण स्तुति-गान गा रहा था।

धूल में लथपथ और पसीने से तर लोग खुशीभरी और ऊंची आवाजों में बातचीत करते हुए दिन का भोजन करने को भागे जा रहे थे, अनेक सागर-तट की ओर तेजी से कदम

रहे थे और झटपट अपने धूसर कपड़े उतारकर पानी में कूद जाते थे। पानी में जाते ही उनके सांवले शरीर हंसी की हद तक ऐसे छोटे-छोटे हो जाते थे मानो शराब के बड़े जाम में मिट्टी के काले कण हों।

पानी की कोमल छपछपाहट, नहाते हुए ताजा दम हो रहे लोगों की खुशीभरी चीखें, बच्चों के ज़ोरदार ठहाके और किलकारियां – यह सब कुछ तथा सागर में कूदनेवालों द्वारा ऊंची उठायी जानेवाली सतरंगी फुहारें मानो सूर्य के प्रति उल्लासपूर्ण श्रद्धांजलियां थीं।

सड़क बनानेवाले चार मज़दूर एक बड़े मकान की छाया में पटरी पर बैठे हुए दोपहर का भोजन करने की तैयारी कर रहे थे। वे पत्थरों की तरह ही भूरे, रूखे और सख़्त जान थे। पके बालोंवाला बूढ़ा, जो धूल से ऐसे लथपथ था मानो उस पर राख छिड़क दी गयी हो, अपनी पैनी तीखी आंख को सिकोड़े हुए लम्बी डबलरोटी को बहुत ध्यान से काट रहा था ताकि सभी टुकड़े बराबर हों। वह बुनी हुई फुंदनेवाली लाल टोपी सिर पर ओढ़े था। फुंदना बार-बार उसके चेहरे पर आ जाता था, बूढ़ा देवदूत जैसे अपने बड़े मस्तक को बार-बार आगे-पीछे झटकता था, तोते की चोंच जैसी उसकी नाक के नथुने फूल जाते और वह उन्हें सुड़सुड़ाता।

सांवले शरीर और बिल्कुल गुबरैले जैसे काले बालोंवाला एक तरुण उसकी बग़ल में गर्म पत्थरों पर चित लेटा था। डबलरोटी के कण उसके चेहरे पर गिर रहे थे, वह धीरे-धीरे आंखें मिचमिचाता-सिकोड़ता था तथा धीमे-धीमे ऐसे गाता था

मानो नींद में गा रहा हो। दो अन्य मजदूर घर की सफेद दीवारों के साथ पीठ टिकाये हुए ऊंघ रहे थे।

एक हाथ में शराब की बोतल और दूसरे में छोटा-सा बंडल लिये हुए एक छोकरा इनकी तरफ आ रहा था। वह सिर को पीछे की ओर करके पक्षी की भांति गूंजती आवाज में कुछ चिल्ला रहा था और यह नहीं देख रहा था कि पुआल में लिपटी बोतल में से रक्तमणि की भांति चमकती हुई शराब की गाढ़ी-गाढ़ी और भारी-भारी बूंदें नीचे गिर रही थीं।

बूढ़े ने यह देखा, डबलरोटी और छुरी को तरुण की छाती पर रखा और हाथ से इशारा करते हुए पुकारकर लड़के से कहा —

"जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा रे अंधे! देख तो शराब गिरी जा रही है!"

छोकरे ने बोतल को चेहरे तक ऊपर उठाया, घबराकर मुंह बा दिया और मजदूरों की तरफ तेजी से भाग चला। वे सभी फौरन सचेष्ट हो गये और बोतल को छूते हुए उत्तेजना में चिल्लाने लगे। इसी क्षण छोकरा तीर की तरह कहीं अहाते में भाग गया और ऐसी ही तेजी से एक बड़ी-सी, पीली रकाबी हाथों में लिये हुए वापस आ गया।

रकाबी को ज़मीन पर रख दिया गया और बूढ़ा बहुत ध्यान से उसमें लाल, सजीव पदार्थ को उड़ेलने लगा। आठ आंखें बड़े प्यार से शराब को धूप में चमकते देख रही थीं और उनके सूखे होंठ ललचाते हुए हिल रहे थे।

हल्के आसमानी रंग का फ्राक पहने एक औरत चली जा

ही थी। उसके काले बालों पर सुनहरे रंग का लेसवाला दुपट्टा था और उसके कत्थई रंग के जूतों की ऊंची एड़ियां ज़ोर से बज रही थीं। वह घुंघराले बालोंवाली एक बालिका की उंगली पकड़े हुए उसे अपने साथ लिये जा रही थी। बालिका के दायें हाथ में लवंग के दो लाल फूल थे जिन्हें वह हिलाती जाती थी और निम्न पंक्ति गाते हुए डोलती थी –

"ओ मां, ओ मां, ओ मेरी मां..."

बूढ़े मज़दूर की पीठ के पीछे रुककर वह ख़ामोश हो गयी, पंजों के बल उचकी और बूढ़े के कंधे पर से झुककर बड़ी गम्भीरता से यह देखने लगी कि पीली रकाबी में शराब कैसे छलक रही है और छलकते हुए वैसी ही आवाज़ पैदा कर रही है मानो उसके गीत को जारी रख रही हो।

बालिका ने नारी के हाथ से अपना हाथ मुक्त किया, फूलों की पंखुड़ियां तोड़ी और गौरैया के पंख जैसा सांवला तथा छोटा-सा हाथ ऊपर उठाकर शराब के प्याले में लाल फूल डाल दिये।

चारों आदमी चौंके, उन्होंने धूल सने सिर गुस्से से ऊपर उठाये। बालिका तालियां बजा रही थी और अपने छोटे-छो[ट]े पैरों को पटकते हुए हंस रही थी। परेशान मां उसका ह[ाथ] पकड़ने का प्रयास कर रही थी, ऊंची आवाज़ में झिड़क [रही] थी, छोकरा ठहाके लगाता हुआ दोहरा होता जा रहा था फूलों की पंखुड़ियां छोटी-छोटी गुलाबी नावों की भांति प्याले में तैर रही थीं।

बूढ़े ने न जाने कहां से एक गिलास निकाला, पं[खुड़ियों] समेत ही शराब उसमें डाली, मुश्किल से उठा और

को होंठों से लगाकर तसल्ली देते हुए मजीदगी से कहा —

"कोई बात नहीं, श्रीमती जी! बच्चे द्वारा दिया गया उपहार भगवान का उपहार होता है.. सुन्दरी, आपकी मेहनत का, और बिटिया तुम्हारी भी मेहनत का जाम पीता हूं! कामना करता हूं कि तुम मां की तरह सुन्दर और दुगुनी सौभाग्यशालिनी बनो "

इतना कहकर उसने अपनी सफेद मूछें गिलास में घुमेड़ी, आंखें सिकोड़ी, होंठों से चपचप करते और टेढ़ी नाक को हिलाते-डुलाते हुए गहरे लाल रंग की शराब के छोटे-छोटे घूंट भरने लगा।

मां मुस्करायी, उसने इन लोगों को सिर झुकाया तथा बच्ची का हाथ थामकर आगे चल दी। बच्ची पत्थरों पर पांव रगड़ती, इधर-उधर झूमती-झामती और आंखें सिकोड़कर ऊंचे-ऊंचे यह गाती जा रही थी—

"ओ मां, ओ मेरी मां "

मजदूर धीरे-धीरे सिर घुमाकर कभी तो शराब और कभी बच्ची की ओर देखते तथा दक्षिणी लोगों की वेगवती भाषा में एक-दूसरे से मुस्कराकर कुछ कहते।

और गहरे लाल रंग की शराबवाले प्याले में फूलों की लाल पंखुड़ियां तैर रही थीं।

सागर गा रहा था, नगर गुनगुना रहा था और कथाओं का ताना-बाना बुनता हुआ सूरज खूब चमक रहा था।

में पानी की ओर उतरती चली गयी है। तट में सफेद घर, जो मानो चीनी के बने हुए प्रतीत होते हैं, पानी में झाँक रहे हैं। चारों ओर बच्चे की मीठी नींद जैसी शान्ति है।

सुबह का वक्त है। पर्वतों में फूलों की बड़ी प्यारी-प्यारी सुगन्ध नीचे बहती आ रही है। अभी-अभी सूर्योदय हुआ है, वृक्षों के पत्तों और घास की डंडियों पर अभी भी ओसकण चमक रहे हैं। शान्त घाटी में से गुजरनेवाला रास्ता मटमैला फीता-सा लग रहा है। सड़क पत्थरों की है, किन्तु मखमल-सी कोमल लगती है, मन होता है कि उसे हाथ से सहला दिया जाये।

बजरी के ढेर के निकट गुबरैले जैसा काला एक मजदूर बैठा है, उसकी छाती पर तमगा लटक रहा है, चेहरे पर साहस और स्नेह की छाप है।

काँसे के रंग जैसी कलाइयों को घुटनों पर टिकाकर वह सिर ऊपर उठाता है, चेस्टनट के नीचे खड़े एक राहगीर की ओर ध्यान से देखता है और कहता है—

"महोदय, यह तमगा मुझे सिम्पलो सुरंग में काम करने के लिये मिला है।"

और वह छाती पर नजर झुकाकर धातु के उस सुन्दर टुकड़े को स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ देखता है।

"अजी, कोई काम तभी तक कठिन होता है, जब तक कि हम उसे प्यार न करने लगें और उसके बाद वह प्रेरित करता है और आसान बन जाता है। फिर भी यह कहना होगा कि काफी मुश्किल काम था वह!"

सूरज की ओर देखकर उसने मुस्कराते हुए धीरे से सिर

यह भी जरूरी है कि मशीनों को देखा जाये, पर्वत का खिन्न चेहरा देखा जाये, उसके भीतर भारी गडगडाहट और किसी पागल के ठहाकों जैसे विस्फोट की गूंज सुनी जाये।"

उसने अपने हाथों को गौर से देखा, नीली जाकेट पर धातु के टुकड़े को ठीक किया और हल्की-सी उसास छोडी।

"मानव काम कर सकता है!" वह गर्व से कहता गया। "ओह, महानुभाव, छोटा-सा व्यक्ति जब काम करना चाहता है तो अजेय शक्ति बन जाता है! और यह विश्वास कीजिये कि यह तुच्छ व्यक्ति जो कुछ चाहता है, सब कुछ कर लेता है। मेरे पिता जी शुरू मे इस बात पर विश्वास नही करते थे।

"'एक देश से दूसरे देश तक पर्वत को काटना यह भगवान की इच्छा के विरुद्ध है जिसने पृथ्वी को पर्वतों की दीवारों से बाटा हुआ है। देख लेना, मदोन्ना हमसे नाराज हो जायेगी!' लेकिन यह उनकी भूल थी, मदोन्ना उनसे कभी नाराज़ नही होती जो उसे प्यार करते है। बाद मे पिता जी भी वैसे ही सोचने लग गये जैसे मैं आपसे कह रहा हू, क्योंकि उन्होंने अपने को पर्वत से भी ऊचा, अधिक शक्तिशाली अनुभव किया। किन्तु ऐसा समय भी था जब वह तीज-त्योहारों के दिन मेज पर शराब की बोतल को सामने रखकर मुझे और दूसरों को भी यह उपदेश देते थे—

"'भगवान के बच्चो', यह उनका सम्बोधन का विशेष प्रिय ढंग था, क्योंकि वह दयालु और धर्म-परायण व्यक्ति थे, 'भगवान के बच्चो, भूमि के विरुद्ध ऐसे सघर्ष करना उचित नहीं। वह अपने घावों का बदला लेगी और अजेय रहेगी।

बीमार हो गये। मेरे वह बुजुर्ग बड़े मजबूत थे, उन्होंने किसी तरह की शिकायत किये बिना तीन सप्ताह से अधिक समय तक ऐसे व्यक्ति के रूप में मौत से डटकर मोर्चा लिया जो अपना मूल्य, अपना महत्त्व जानता है।

"'मेरा खेल खत्म हो चुका है, पावलो,' उन्होंने एक बार रात के समय मुझसे कहा। 'तुम अपना ध्यान रखो और घर लौट जाओ। मदोन्ना तुम्हारी रक्षा करे!' इसके बाद आंखें मूंदे और हांफते हुए वह देर तक खामोश रहे।"

कहानी सुनानेवाला व्यक्ति खड़ा हुआ, उसने पहाड़ों पर नजर डाली और ऐसे अंगड़ाई ली कि उसकी मांस-पेशियां चटचटा उठीं।

"उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लिया, मुझे अपने निकट खींचा और बोले—यह पावन सत्य है, महोदय!—'तुमसे एक बात कहूं, मेरे बेटे पावलो, फिर भी मैं सोचता हूं कि यह होकर रहेगा—हम और जो दूसरी तरफ से खुदाई कर रहे हैं, पहाड़ में एक-दूसरे से मिल जायेंगे—तुम इस बात पर विश्वास करते हो?' मैं विश्वास करता था। 'अच्छी बात है, मेरे बेटे! ऐसे ही होना भी चाहिये—सभी कुछ शुभ परिणाम और भगवान में विश्वास करते हुए करना चाहिये जो मदोन्ना के लिये हमारी प्रार्थनाओं के माध्यम से नेक कामों में हम लोगों की सहायता करता है। तुमसे अनुरोध करता हूं बेटे अगर ऐसा हो जाये, अगर दोनों ओर के लोग मिल जायें तो तुम मेरी कब्र पर आकर यह कहना—पिता जी, वह हो गया ताकि मुझे मालूम हो जाये!'

3*

मे, ज़मीन के नीचे, जहां आप अनेक महीनो तक छछून्दर की भाति रहे हो, किसी इन्सान से मिलने की चाह कितनी प्रबल, कितनी उत्कट होती है!"

उसके चेहरे पर उत्साह-उत्तेजना की लाली दौड गयी, वह श्रोता के बिल्कुल निकट हो गया और अपनी मर्मस्पर्शी मानवीय आखो से उसकी आखो मे झाकते हुए कहता गया–

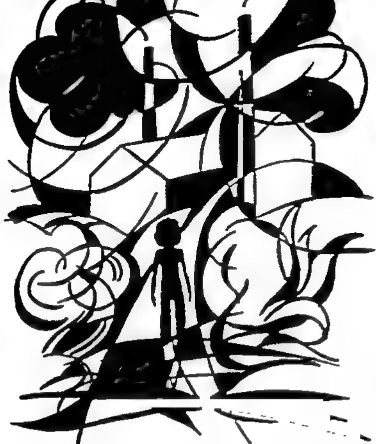
"और आखिर जब हमे अलग करनेवाली मिट्टी की परत हटी, सामने खुले हिस्से मे मशाल की लाल लपट चमक उठी और किसी का काला, खुशी के आसुओ से भीगा चेहरा हमारे सामने आया तथा अन्य मशाले और चेहरे दिखाई दिये, जीत और खुशी की आवाजे गूज उठी–ओह, वह मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन था और उसे याद करके मैं यह अनुभव करता हू कि मैंने अपना जीवन व्यर्थ नही गवाया, सच, व्यर्थ नही गवाया! मैं आपसे कहता हू कि वह काम था, मेरा काम, पावन काम था, महानुभाव! और जब हम ज़मीन के नीचे से धूप मे निकले, तो हम में से अनेक ने मुह के बल लेटकर उसे चूमा, आसू बहाये और यह किसी परी-कथा की तरह सुखद था! हा, विजित पर्वत को चूमा, ज़मीन को चूमा। उस दिन वह विशेष रूप से मेरे हृदय के निकट हो गयी, मैं उसे अधिक अच्छी तरह से समझ गया, महानुभाव, और एक नारी की तरह उसे प्यार करने लगा।

"और हा, मैं अपने पिता जी के पास भी गया! बेशक मैं यह जानता हू कि मरे हुए लोग कुछ भी नही सुन सकते, फिर भी मैं गया। हमे उनकी इच्छा का आदर करना चाहिये जिन्होंने

हमारे लिये श्रम किया और हमारी तरह दुख-दर्द सहे – ठीक है न?

"सो, मैं उनकी क़ब्र पर गया, पैर से ज़मीन को थपथपाया और जैसा उन्होंने चाहा था, उन्हें यह बताया –

"'पिता जी, वह हो गया। लोग जीत गये। वह काम पूरा कर दिया गया, पिता जी!'"



युवा कलाकार ने अपनी आँखों से
दूरी पर एकटक देखते हुए धीरे से कहा —
मैं जो मशीन रचना चाहता हूँ,
वह कुछ ऐसा होगा —

हमारे लिये श्रम किया और हमारी तरह दुख-दर्द सहे—ठीक है न?

"सो, मैं उनकी क़ब्र पर गया, पैर से ज़मीन को थपथपाया और जैसा उन्होंने चाहा था, उन्हें यह बताया—

"'पिता जी, वह हो गया। लोग जीत गये। वह काम पूरा कर दिया गया, पिता जी!'"



युवा स्वरकार ने काली आंखों से दूरी पर एकटक देखते हुए धीरे से कहा—
"मैं जो संगीत रचना चाहता हूं, वह कुछ ऐसा होगा—

पर पीला-सा कुहरा टेढ़ा-मेढ़ा लटक गया है। अब यह शहर आग से तबाह-बरबाद और खून से लथपथ दिखाई नहीं देता है, छतों और दीवारों की टेढ़ी-तिरछी रेखायें किसी जादुई चीज़ की याद दिलाती हैं, किन्तु साथ ही ऐसा भी लगता है कि नगर का अन्त तक निर्माण नहीं किया गया है, उसे अधूरा ही छोड़ दिया गया है मानो वह, जिसने लोगों के लिये इस बड़े नगर की कल्पना की थी, थककर सो गया है, निराश हो गया है और सब कुछ छोड़-छाड़कर कहीं चला गया है या फिर विश्वास खोकर मर गया है।

"लेकिन शहर जी रहा है और अपने को सुन्दर तथा बड़े गर्व से सूरज की ओर उठा हुआ देखने की तीव्राकांक्षा से ओत-प्रोत है। वह सुख-सौभाग्य की नानारूपी चाह के सरसाम में कराहता है, जीवन की प्रबल पिपासा उसे आन्दोलित करती है, उसके इर्द-गिर्द फैले मैदानों की काली नीरवता में दबी-घुटी ध्वनियोंवाली मन्द-मन्द सरितायें बहती हैं तथा आकाश का काला प्याला धुंधले-धुंधले तथा मन को व्यथित करनेवाले प्रकाश से परिपूर्ण होता जाता है।

"लड़का रुकता है, भौंहें ऊपर चढ़ाकर सिर झटकता है, शान्त और साहसपूर्ण दृष्टि से सामने देखता है और तनिक झूमकर तेज़ क़दमों से आगे चल देता है।

"और उसके पीछे-पीछे आती रात्रि मां के धीमे-धीमे स्नेहपूर्ण स्वर में उससे कहती है—

"'लड़के, समय हो गया, जाओ! वे तुम्हारी राह देख रहे हैं...'"

"निश्चय ही ऐसे सगीत की रचना करना सम्भव नहीं!" विचारमग्न स्वरकार ने मुस्कराकर कहा।

इसके बाद थोडी देर चुप रहकर उसने दोनों हाथ जोडे और धीमी, चिन्तित और प्यारभरी आवाज मे चिल्लाकर कहा—

"कुंवारी मा मरियम! क्या मिलेगा उसे वहा?"

में साँस ले रहा है, नीली आभा लिये पानी डम्पाती झलक दिखा रहा है, तट पर सागर के नमक की तीखी गन्ध के लहरें आ रहे हैं। भूरे पत्थरों के ढेर से धीरे-धीरे टकराती हुई लहरें छप-छपा रही हैं, उनके बीच से बल खाती हुई निकलती हैं, छोटे-छोटे ककड़ों को सरसराती हैं, ये लहरें छोटी-छोटी हैं, शीशे की तरह पारदर्शी हैं और उन पर फेन नहीं है।

पर्वत गर्मी की काकरेजी धुंध में लिपटा हुआ है, जैतून के रुपहले पत्ते धूप में पुरानी चाँदी की तरह लग रहे हैं, पर्वत को ढके हुए बाग-बगीचों को नीचे उतरती सीढ़ियों पर, हरियाली की गहरे रंग की मखमल पर नीबुओं और सन्तरों का स्वर्ण चमक रहा है, अनार के लाल फूल खूब मुस्करा रहे हैं और सभी ओर फूल ही फूल है।

सूर्य इस धरती को प्यार करता है

पत्थरों पर दो मछुए बैठे हैं—एक बुजुर्ग है, फूस का हैट सिर पर ओढ़े हुए। उसका चेहरा बहुत बड़ा है और उसके गालों होंठों और ठोड़ी पर सफेद बालों की खूंटियाँ उगी हुई हैं, आँखें पलकों में छिपी हैं, नाक लाल है और धूप में सँवलाये हुए हाथ बर्माई हैं। अपनी लचीली बंसी को दूर सागर में डालकर वह बालों से ढकी टाँगें हरे पानी में लटकाये हुए पत्थर पर बैठा है। लहरें उछलकर उन्हें छूती हैं, काली उंगलियों से मोटी-मोटी और उजली-उजली बूँदें नीचे गिरती हैं।

पत्थर पर कोहनी टिकाये हुए काली आँखोंवाला एक साँवला सुडौल और छरहरा नौजवान बूढ़े के पीछे खड़ा है। वह लाल टोपी ओढ़े है, उसकी मजबूत छाती पर सफेद स्वेटर है और वह

अपने नीले पतलून को घुटनों तक ऊपर चढ़ाये है। दायें हाथ की उंगलियों से मूंछों को मरोड़ते हुए वह सोच में डूबा-सा दूर सागर को देख रहा है, जहां मछुओं की नावों की काली-काली रेखायें डोल रही हैं और उनके पीछे वहुत दूरी पर सफ़ेद निश्चल वादवान नजर आ रहा है, जो वादल की तरह गर्मी में पिघलता जा रहा है।

"धनी है वह महिला ?" बूढ़े ने खाली वंसी निकालते हुए खरखरी आवाज में पूछा।

नौजवान ने धीमी-सी आवाज में जवाव दिया –

"मुझे लगता है कि धनी है! वह वहुत वड़े, नीले क़ीमती पत्थरवाला वड़ा-सा ब्रोच लगाये थी, झुमके और अनेक अंगूठियां पहने थी, उसके पास घड़ी भी थी... मेरे ख्याल में अमरीकी है..."

"और सुन्दर भी?"

"ओह, हां! वेशक वहुत ही दुवली-पतली है, लेकिन आंखें विल्कुल फूलों जैसी हैं और – जानते हो – उसका छोटा, खुला-सा मुंह है.."

"ऐसा मुंह तो निष्कपट और ऐसी औरत का होता है जो जिन्दगी में एक वार ही प्यार करती है।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है..."

बूढ़े ने वंसी पानी से वाहर निकाली, आंखें मिचका खाली कांटे को ग़ौर से देखा और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए वड़ाया –

"मछली हमसे अधिक वुद्धू नहीं है, वेशक नहीं है

दोपहर को कौन मछली पकड़ता है?" नौजवान ने उकड़ू बैठते हुए पूछा।

"मैं," कांटे में कीड़े लगाते हुए बूढ़े ने जवाब दिया। और बंसी की डोरी पर सागर में डालते हुए पूछा—

"तुमने यही कहा था न कि सुबह तक तुम दोनों नाव में सैर करते रहे थे?"

"जब हम तट पर आये तो सूर्योदय हो रहा था," नौजवान ने गहरी सांस लेकर बड़े उत्साह से जवाब दिया।

"चुम्बन लिया दिये?"

"हां।"

"बहु ज्यादा दे सकती थी।"

"वह तो बहुत ज्यादा दे सकती थी "

"तुमने उसके साथ क्या बातचीत की?"

दुख और निराशा से नौजवान का सिर झुक गया।

"वह इतालवी भाषा के दस से ज्यादा शब्द नहीं जानती और इसलिये हम चुप ही रहे "

"सच्चा प्यार, बूढ़े ने उसकी ओर मुड़ते और चौड़ी मुस्कान से अपने सफेद दांतों की झलक दिखाते हुए कहा "दिल पर बिजली की तरह चोट करता है और बिजली की तरह मूक होता है, तुम्हें मालूम है?"

नौजवान ने बड़ा-सा पत्थर उठाकर उसे सागर में फेंकना चाहा, किन्तु इरादा बदल लिया और उसे कंधे पर से पीछे फेंकते हुए बोला—

"कभी-कभी बिल्कुल यह समझ में नहीं आता कि लोगों

ो अलग-अलग भाषाओं की क्या ज़रूरत है?"

"कहते हैं कि कभी वह वक़्त आयेगा जब ऐसा नहीं होगा!" बूढ़े ने कुछ सोचकर जवाब दिया।

सागर के नीले मेज़पोश पर, दूरी के दूधिया कुहासे में बादल की छाया की तरह सफ़ेद जहाज़ कोई शोर किये बिना चला जा रहा था।

"सिसली जा रहा है!" बूढ़े ने उसकी ओर सिर से संकेत करते हुए कहा।

उसने कहीं से लम्बा और खुरदरा-सा सिगार निकाला, उसे तोड़ा और कंधे के ऊपर से आधा सिगार उसे देते हुए पूछा —

"जब तुम उसके साथ बैठे थे तो क्या सोचते रहे थे?"

"इन्सान हमेशा सुख-सौभाग्य की बात सोचता है..."

"इसीलिये तो वह हमेशा मूर्ख रहता है!" बूढ़े ने शान्त भाव से टिप्पणी की।

उन दोनों ने सिगार जला लिये। वायुहीन वातावरण में, जो उपजाऊ मिट्टी और सुखद पानी की तृप्तिदायिनी गन्ध से परिपूर्ण था, पत्थरों के ऊपर धुए की नीली धारायें फैल गयीं।

"मैं उसे गाना सुनाता रहा और वह मुस्कराती रही..."

"इसके बाद क्या हुआ?"

"लेकिन तुम तो जानते ही हो कि मैं कुछ अच्छा नहीं गाता हूं।"

"हां, जानता हूं।"

"बाद में मैंने चप्पू नीचे रख दिये और उसे देखता रहा।"

"सच?"

"हा, देखता और मन ही मन सोचता रहा–'देखो तो, मैं जवान और हट्टा-कट्टा हू और तुम ऊब से मरी जा रही हो, मुझे प्यार करो और अच्छी जिन्दगी बिताने दो।'"

"वह ऊब से मरी जा रही थी?"

"अगर कोई गरीब न हो और उसकी जिन्दगी भी मज़े से गुज़र रही हो तो भला कौन पराये देश मे जाता है?"

"बहुत खूब!"

"'कुमारी मरियम के नाम पर तुम्हे वचन देता हू,' मैंने सोचा, 'कि तुम्हारे साथ मैं बहुत अच्छा बर्ताव करूगा और हमारे आस-पास के सभी लोग खुश रहेगे '"

"भई वाह!" अपने बडे-से सिर को पीछे की ओर झटककर बूढे ने चिल्लाकर कहा और भारी-भरकम आवाज मे जोर से हस दिया।

"'तुम्हारे साथ कभी बेवफाई नही करूगा '"

"हू "

"या फिर यह सोचता रहा–'हम कुछ समय तक साथ रहेगे, तुम जितनी देर तक चाहोगी, मैं तुम्हे उतनी ही देर तक प्यार करूगा और उसके बाद तुम मुझे नाव, रस्सियो और जमीन के टुकडे के लिये पैसे दे दोगी, तब मैं अपने प्यारे वतन को लौट जाऊगा और हमेशा, जिन्दगी भर तुम्हे प्यार से याद करता रहूगा '"

"यह तो समझदारी की बात है "

"इसके बाद सुबह को मैं यह सोचने लगा कि शायद मुझे कुछ भी नही चाहिये, पैसा भी नही चाहिये, बल्कि सिर्फ उसकी

ज़रूरत है, वेशक आज की इसी एक रात के लिये..."

"यह कहीं अधिक आसान वात है..."

"केवल एक रात के लिये!.."

"वाह!" वूढ़े ने कहा।

"चाचा पियेत्रो, मुझे लगता है कि छोटी-छोटी खुशी हमेश ज्यादा निश्छल होती है..."

वूढ़ा अपने मोटे, होंठों को दवाकर और हरे पानी को एकटक देखते हुए खामोश रहा तथा नौजवान धीमे-धीमे और करुण स्वर मे गाने लगा—

"ओ सूर्य मेरे..."

"हां, हां," वूढ़े ने सिर झुलाते हुए अचानक कहा, "छोटी-सी खुशी अधिक निश्छल होती है और वड़ी खुशी वेहतर... ग़रीव लोग अधिक सुन्दर होते हैं और धनी अधिक शक्तिशाली... सभी चीज़ों में ऐसा ही है... सभी चीज़ों में!"

लहरें सरसरा रही थीं, नृत्य कर रही थीं। धुएं के नीले लहरिये लोगों के सिरों के ऊपर कान्ति-चक्रों की तरह तैर रहे थे। नौजवान खड़ा हुआ और मुंह के कोने में सिगार दवाये हुए धीमे-धीमे गाने लगा। उसने एक वड़े, भूरे पत्थर के साथ अपना कंधा टिका लिया, वांहों को छाती पर वांध लिया और एक स्वप्नद्रष्टा की तरह वड़ी-वड़ी आंखों से दूर सागर को ताकने लगा।

और वूढ़ा निश्चल था, उसका सिर झुक गया था और ऐसे लगता था कि वह ऊंघ रहा है।

पहाड़ों पर काकरेज़ी छायायें घनी और प्यारी हो गयी—

"ओ सूर्य मेरे!" नौजवान गा रहा था...

निकला है सूरज
तुमसे भी सुन्दर
तुमसे भी सुन्दर!
ओ सूरज, ओ सूरज
चमको मेरे वक्ष पर!

खुशीभरी हँसी लहरों का गुंजन जारी था।

अपने नीले पतलून को घुटनों तक ऊपर चढ़ाये है। दायें हाथ की उंगलियों से मूंछों को मरोड़ते हुए वह सोच में डूबा-सा दूर सागर को देख रहा है, जहां मछुओं की नावों की काली-काली रेखायें डोल रही हैं और उनके पीछे बहुत दूरी पर सफ़ेद निश्चल बादबान नज़र आ रहा है, जो बादल की तरह गर्मी में पिघलता जा रहा है।

"धनी है वह महिला ?" बूढ़े ने खाली बंसी निकालते हुए खरखरी आवाज़ में पूछा।

नौजवान ने धीमी-सी आवाज़ में जवाब दिया –

"मुझे लगता है कि धनी है! वह बहुत बड़े, नीले क़ीमती पत्थरवाला बड़ा-सा ब्रोच लगाये थी, झुमके और अनेक अंगूठियां पहने थी, उसके पास घड़ी भी थी... मेरे ख्याल में अमरीकी है..."

"और सुन्दर भी?"

"ओह, हां! बेशक बहुत ही दुबली-पतली है, लेकिन आंखें बिल्कुल फूलों जैसी हैं और – जानते हो – उसका छोटा, खुला-सा मुंह है..."

"ऐसा मुंह तो निष्कपट और ऐसी औरत का होता है जो ज़िन्दगी में एक बार ही प्यार करती है।"

"मुझे भी ऐसा ही लगता है..."

बूढ़े ने बंसी पानी से बाहर निकाली, आंखें सिकोड़कर खाली कांटे को ग़ौर से देखा और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए बड़बड़ाया –

"मछली हमसे अधिक बुद्धू नहीं है, बेशक नहीं है..."

वाले बूढ़े को लगभग उठाकर भीतर लाया।

"बहुत ही बूढ़ा है!" खुशमिज़ाजी से मुस्कराते हुए दोनों एकसाथ कह उठे।

किन्तु बूढ़ा बड़ा खुशमिज़ाज निकला। सहायता करनेवालों के प्रति झुर्रियोंवाले हाथ के संकेत से आभार प्रकट करने के बाद उसने पुराना टोप सफ़ेद बालोंवाले सिर से ऊपर उठाया और अपनी नीली आंख से लोगों पर नज़र घुमाने के बाद पूछा—

"बैठने की इजाज़त है?"

उसे जगह दे दी गयी। वह गठरी को गोद में लेकर बैठ गया और नुकीले घुटनों पर हाथ टिकाकर दन्तहीन मुंह से खुशमिज़ाजी से मुस्करा दिया।

"बहुत दूर जा रहे हैं क्या, बाबा?" मेरे साथी ने पूछा।

"ओह् नहीं, केवल तीन स्टेशन!" काने बूढ़े ने बड़ी खुशी से जवाब दिया। "पोते की शादी में जा रहा हूं।"

और कुछ मिनट बाद गाड़ी के पहियों की खड़खड़ाहट के बीच बुरे मौसम में टूटी हुई डाल की तरह दायें-बायें डोलते हुए वह उत्साह से अपनी कहानी सुनाने लगा—

"मैं निगूरिया का रहनेवाला हूं और निगूरियावाले हम सभी लोग बड़े तगड़े-मज़बूत होते हैं। मेरे तेरह बेटे और बेटियां हैं तथा पोतों-पोतियों की गिनती करते हुए मैं ... जाता हूं। यह मेरे दूसरे पोते की शादी होने जा रही है—है न?"

और अपनी कान्तिहीन हो चुकी किन्तु अभी भी ...



७

रोम और जेनोआ के बीच कंडक्टर ने एक छोटे-से स्टेशन पर हमारे केबिन का दरवाज़ा खोला। एक गन्दे-मन्दे मिस्तरी की मदद से वह एक नाटे-से

काने बूढ़े को लगभग उठाकर भीतर लाया।

"बहुत ही बूढ़ा है!" खुशमिजाजी से मुस्कराते हुए दोनों एकसाथ कह उठे।

किन्तु बूढ़ा बड़ा खुशमिजाज निकला। सहायता करनेवालों के प्रति भुर्रियोंवाले हाथ के संकेत से आभार प्रकट करने के बाद उसने पुराना टोप सफेद बालोंवाले सिर से ऊपर उठाया और अपनी तीखी आंख से सोफों पर नज़र घुमाने के बाद पूछा –

"बैठने की इजाज़त है?"

उसे जगह दे दी गयी, वह राहत की सांस लेकर बैठ गया और नुकीले घुटनों पर हाथ टिकाकर दन्तहीन मुह से खुशमिजाजी से मुस्करा दिया।

"बहुत दूर जा रहे है क्या, दादा?" मेरे साथी ने पूछा।

"ओह नहीं, केवल तीन स्टेशन!" काने बूढ़े ने बड़ी खुशी से जवाब दिया। "पोते की शादी में जा रहा हू "

और कुछ मिनट बाद गाड़ी के पहियों की खटाखट के बीच, बुरे मौसम में टूटी हुई डाल की तरह दायें-बायें डोलते हुए वह उत्साह से अपनी कहानी सुनाने लगा –

"मैं लिगूरिया का रहनेवाला हू और लिगूरियावासी हम सभी लोग बड़े तगड़े-मजबूत होते है। मेरे तेरह बेटे और चार बेटियां है तथा पोतों-पोतियों की गिनती करते हुए मैं गड़बड़ा जाता हू। यह मेरे दूसरे पोते की शादी होने जा रही है – कमाल है न?"

और अपनी कान्तिहीन हो चुकी, किन्तु अभी भी प्रफुल्ल

तो वह लोगों के बारे में ऐसे साहस से बात कर सकता है। ठीक है न?"

उसने अपनी मुड़ी हुई सावली उंगली ऐसे गम्भीरता से ऊपर उठाई मानो किसी को धमका रहा हो।

"महानुभावो, मैं आपको लोगों के बारे में कुछ बताता हूं "

"जब मेरे पिता जी की मृत्यु हुई तो मेरी उम्र केवल तेरह वर्ष थी। आप देख ही रहे हैं कि अभी भी मैं कितना नाटा-सा हू। लेकिन मैं बडा चुस्त था और काम से कभी नही थकता था। मुझे अपने पिता से विरासत मे बस यही कुछ मिला। जहा तक जमीन और मकान का सम्बन्ध है तो वे तो कर्ज चुकाने के लिये बेच दिये गये। तो ऐसे ही मैं जी रहा था एक आख और दो हाथों के साथ। मुझे जहा भी और जो काम मिलता, मै वही काम करता मुश्किलों का सामना करना पडता, लेकिन जवानी तो मुश्किल से डरना नही जानती। ऐसा ही है न?"

"उन्नीस साल की उम्र मे एक लडकी से मेरी भेट हुई जिसे मेरे भाग्य मे प्यार करना बदा था। वह भी मेरे जैसी गरीब थी, मेरी तुलना मे कही अधिक लम्बी-चौडी और तगडी, अपनी बूढी, बीमार मा के साथ रहती थी और जहा भी सम्भव होता मेरी तरह ही काम करती थी। वह बहुत सुन्दर तो नही, मगर दयालु और समझदार थी। बडी सुरीली आवाज थी उसकी! किसी कलाकार की तरह गाती थी! यह भी दौलत ही थी! मैं खुद भी कुछ बुरा नहीं गाता था।

"'आओ शादी कर लें।' मैंने उससे कहा।

"'लोग हंसेंगे, काने!' उसने उदासी से जवाब दिया। 'न तो तुम्हारे पास कुछ है और न मेरे पास ही — हमारी गाड़ी कैसे चलेगी?'

"सोलह आने सच बात थी यह — न मेरे पास और न उसके पास ही कुछ था! लेकिन जवानी में प्रेमियों को ज़रूरत ही किस चीज की होती है? आप सभी जानते हैं कि प्यार के लिये ज़रूरत ही कितनी कम होती है। मैं अपनी रट लगाये रहा और जीत गया।

"'शायद तुम ठीक ही कहते हो,' आख़िर ईदा बोली। 'अगर पावन मां मरियम हमारी इस वक़्त भी मदद करती है जब हम अलग-अलग रहते हैं तो उसके लिये तब हम दोनों की सहायता करना और अधिक आसान हो जायेगा जब हम इकट्ठे रहेंगे।'

"हम पादरी के पास पहुंचे।

"'यह पागलपन है!' उसने कहा। 'लिगूरिया में भिखारियों की क्या यों ही कुछ कमी है? क़िस्मत के मारो, तुम्हें शैतान के इस प्रलोभन के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिये, वरना अपनी इस कमज़ोरी की बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ेगी तुम दोनों को!'

"हमारे समुदाय के जवान लोग हमारी खिल्ली उड़ाते थे, बूढ़े टीका-टिप्पणी करते थे। किन्तु जवानी हठीली और अपने ढंग से समझदार होती है। शादी का दिन निकट आ गया और इस दिन तक हम जैसे थे, वैसे ही ग़रीब बने रहे।

हम तो यह तक नही जानते थे कि सुहाग की रात की सोना कहा।

"'हम मैदान मे चले जायेगे।' ईदा ने कहा। 'इसमें क्या बुराई है? मा मरियम तो हर जगह लोगो के प्रति समान रूप मे दयालु है।'

"हमने यही निर्णय कर लिया—धरती हमारा बिछौना होगी और आकाश तन ढकेगा हमारा।

"महानुभावो, यहा से दूसरी कहानी शुरु होती है और आपसे निवेदन करता हू कि आप ध्यान से सुने। मेरे लम्बे जीवन की यह सबसे अच्छी कहानी है! शादी के एक दिन पहले बूढे जीओवान्नी ने, जिसके यहा मैंने बहुत काम किया था, तड़के ही मुझसे कुछ ऐसे कहा मानो कोई मामूली बात हो।

"'ऊगो, तुम भेड़ो के बाडे को अच्छी तरह साफ करके वहा ताजा फूस बिछा लो। बेशक वहा नमी नही है और साल भर से भेडें वहा नही आई है, फिर भी अगर तुम ईदा के साथ वहा रहना चाहते हो तो तुम्हे उसे अच्छी तरह से झाड-बुहार लेना चाहिये।'

"तो ऐसे हमारा घर बन गया।

"मैं बाडे मे काम करते हुए गा रहा था—तभी बढ़ई कोन्स्तान्तिनो ने दरवाजे के पास आकर पूछा—

"'ईदा के साथ तुम यहा रहोगे? पलग कहा है तुम्हारे लिये? झाड-बुहार खत्म करके तुम्हे मेरे यहा आना चाहिये और वह पलग ले लेना चाहिये जो मेरे पास फालतू है।'"

"जव मैं वढ़ई के यहां जा रहा था तो गुस्सैल दुकानदार मरीया ने चिल्लाकर कहा –

"'ये वदक़िस्मत शादी करने जा रहे हैं और इनके पास न तो चादर ही है और न तकिये ही। तुम तो विल्कुल सिरफिरे हो, काने! अपनी मंगेतर को मेरे पास भेज देना ...'

"और लंगड़ी, गठिये तथा वुखार से वुरी तरह पीड़ित एत्तोरे वियानो ने अपनी दहलीज़ से पुकारकर उससे कहा –

"'इससे पूछो, कि उसने मेहमानों के लिये शराव तो काफ़ी जुटा ली है? अरे लोगो, इससे अधिक चंचलता क्या हो सकती है?'"

वूढ़े के गाल की एक गहरी झुर्री में आंसू की सुखद वूंद चमक उठी, उसने पीछे की ओर सिर झटका, वह वच्चे की तरह हाथों को हिलाते-डुलाते हुए आवाज़ किये विना हंस दिया। उसका उभरा हुआ टेंटुआ मानसिक उद्वेलन से ऊपर-नीचे हुआ और चेहरे की मुरझायी त्वचा सिहर उठी।

"ओह महानुभावो, महानुभावो!" हंसी के कारण वेहाल होते हुए उसने कहा, "शादी के दिन की सुवह को हमारे पास घर की ज़रूरत की सभी चीज़ें थीं – मदोन्ना की मूर्त्ति, भांडे-वर्तन, कपड़े, फ़र्नीचर – क़सम खाकर कहता हूं सभी कुछ! ईदा रोती और हंसती थी, मेरा भी यही हाल था और सभी हंस रहे थे – शादी के दिन रोना कोई अच्छी वात नहीं और हमारे सभी लोग हम पर हंसते थे!..

"महानुभावो! यह तो ग़ज़व की वात है कि हमें लोगों

को 'अपना' कहने का अधिकार हो! उन्हें अपना, अपने निकटतम और ऐसे भाई-बन्धु के समान अनुभव करना तो और भी बेहतर है जिनके लिये तुम्हारा जीवन मज़ाक न हो, तुम्हारी खुशी खिलवाड़ न हो!

"और क्या कमाल की शादी रही वह! अनूठा दिन था वह! सभी लोगों की नज़रें हम पर टिकी हुई थीं, सभी हमारे बाड़े में आये जो अचानक बहुत बढ़िया घर बन गया था हमारे यहां सभी कुछ था – शराब, फल, मांस और रोटी, सभी खाते-पीते रहे, सभी खूब रंग में रहे बात यह है, महानुभावो, कि लोगों के साथ नेकी करने से ज्यादा अच्छी और कोई बात नहीं है। मेरी बात पर यकीन कीजिये कि इससे ज्यादा सुन्दर और सुखकर और कुछ नहीं है!

"पादरी भी आया था। 'देखो', उसने गम्भीरतापूर्वक बड़े अच्छे शब्द कहे, 'ये हैं वे लोग जिन्होंने आप सब के लिये काम किया और आप सब ने इस बात की चिन्ता की कि यह दिन, इनकी जिन्दगी का सबसे अच्छा दिन इनके लिये मधुर बन जाये। आपको ऐसा ही करना चाहिये था, क्योंकि इन्होंने आपके लिये काम किया और काम तांबे तथा चांदी के सिक्कों से अधिक महत्वपूर्ण होता है, काम हमेशा उन पैसों से अधिक महत्त्वपूर्ण होता है जो उसके लिये दिये जाते हैं! पैसे तो गायब हो जाते हैं, मगर काम शेष रह जाता है इन खुशमिजाज और विनम्र लोगों ने कठिन जीवन बिताया और कभी शिकायत नहीं की, ये और भी ज्यादा मुश्किल जिन्दगी बितायेंगे और मुंह से आह नहीं निकालेंगे। मुश्किल की घड़ी में आप इनकी

मदद करेंगे। इनके हाथों में हुनर है और इनके दिल तो और भी अच्छे हैं...'

"उसने मुझसे, ईदा और सभी लोगों से बहुत-सी प्यारी-प्यारी बातें कहीं।"

बूढ़े ने फिर से जवान हो गयी आंख को घुमाते हुए विजयी दृष्टि से सभी की ओर देखा और कहा —

"महानुभावो, यह है लोगों के बारे में कुछ बातें। बढ़िया हैं न?"

वमन्त है, मूरज खूब तेज चमक रहा है, लोगो के दिल खिले हुए है, यहा तक कि पत्थर के बने पुराने मकानो के घरो की खिडकिया भी मधुरता मे

हिल-मिलकर तथा भरोसे के साथ भविष्य की तरफ कदम बढ़ा रहे हैं। .

और लोगो की इस मुसीबतभरी भीड़ में एक उदास चेहरा देखना अजीब, दुखद और कारुणिक-सा प्रतीत होता था। जवान औरत का हाथ अपने हाथ में लिये हुए लम्बा और हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति, जिसकी उम्र तीस से अधिक नहीं होगी, किन्तु जिसके बाल बिल्कुल पक चुके थे, सामने से गुजरा। वह टोप हाथ में लिये था, उसका गोल सिर बिल्कुल सफेद था, दुबला, किन्तु स्वस्थ चेहरा शान्त और उदास था, बरौनियों से ढकी बड़ी-बड़ी, काली आखे ऐसे देखती थी जैसे केवल ऐसे आदमी की आखे ही देख सकती है जो उसके द्वारा अनुभूत पीडा के दंश को नही भूल सकता।

"इस जोड़े की तरफ ध्यान दो," मुझसे मेरे साथी ने कहा, "खास तौर पर मर्द की तरफ। वह एक ऐसी घटना का साक्षी हो चुका है जो उत्तरी इटली के मजदूरों में अधिकाधिक आम बात होती जा रही है।"

और मेरे साथी ने मुझे यह कहानी सुनायी –

"यह व्यक्ति समाजवादी है, मजदूरों के छोटे से स्थानीय अखबार का सम्पादक है, खुद मजदूर है, रगसाज है। यह ऐसे लोगों में से है जिनके लिये ज्ञान आस्था होता है तथा आस्था और भी अधिक ज्ञान-पिपासा जगाती है। यह बहुत ही बुद्धिमान और उग्र धर्म-विरोधी है। देखते हो न, काली पोशाके पहने हुए पादरी उसे कैसी नजरों से देख रहे है!

"कोई पाच साल पहले, जब वह समाजवादी प्रचारक था,

मे विष घुला रहता। यह भी साफ पता चलता था कि वह समाजवाद के विरुद्ध कैथोलिक धर्म के साहित्य से परिचित है और इस मण्डल मे लडकी के शब्दो को प्रचारक के शब्दो मे कुछ कम महत्त्व नही दिया जाता है।

"रूस की तुलना मे यहा इटली मे नारियो के प्रति कहीं सीधा-सरल और श्रद्धा-रूपा रवैया पाया जाता है और अभी पिछले कुछ समय तक इतालवी नारिया ही बहुत हद तक इसके लिये जिम्मेदार थी क्योकि वे चर्च के सिवा अन्य किसी चीज़ मे दिलचस्पी नही लेती थी। वे मर्दो के सास्कृतिक कार्य से सर्वथा उदासीन रहती और उसके महत्त्व को न समझती।

"हमारे इस मित्र के अहभाव को ठेस लगी थी, इस लडकी के साथ मुठभेडो मे एक श्रेष्ठ प्रचारक के रूप मे उसकी ख्याति को धक्का लगा था वह झल्ला उठता था, कई बार वह उसकी खिल्ली उडाने मे भी सफल रहा, लेकिन उसने वैसे ही उसका हिसाब चुका दिया, उसमे बरबस अपने लिये सम्मान-भावना पैदा की और जिस अध्ययन-मण्डल मे वह खुद होती थी, उसे उसके लिये अधिक अच्छी तरह से तैयारी करने को विवश किया।

"लेकिन इसके साथ-साथ इस बात की ओर भी उसका ध्यान गया था कि हर बार जब भी वह घृणित वर्तमान की कुछ ऐसी चर्चा करता था कि कैसे वह मानव का उत्पीडन करता है, कैसे उसके शरीर और आत्मा को लुज-पुज बनाता है और जब वह उस भविष्य के चित्र खीचता जिसमे व्यक्ति बाहरी और आन्तरिक रूप से स्वतन्त्र हो जायेगा – उस समय वह उसे बिल्कुल भिन्न ही दिखाई देती। वह एक ऐसी सबल और सम ..

सामाजिक समानता सम्भव नहीं और यह कि मदोन्ना के नाम के पीछे ऐसा व्यक्ति छिपा हुआ है जिसके लिये यह लाभदायक है कि लोग अभागे बने रहें।

"उस दिन से ये बहसें उनके समूचे जीवन पर छा गयीं, हर भेंट में यही ज़ोरदार बहस जारी रहती और जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे-वैसे यह स्पष्ट होता गया कि विश्वासों की दृष्टि से दोनों अपने-अपने स्थान पर अडिग-अटल है।

"प्रचारक के लिये जीवन का अर्थ था ज्ञान-विस्तार के लिये संघर्ष, प्रकृति की रहस्यपूर्ण शक्ति को मानव की इच्छा के अधीन करने का संघर्ष। सभी लोगों को इस संघर्ष के लिये समान रूप से तैयार होना चाहिये जिसका अन्त होगा – स्वतन्त्रता और विवेक की विजय। विवेक ही सभी शक्तियों में सबसे अधिक प्रबल है और यही संसार की चेतनापूर्ण ढंग से क्रियाशील होनेवाली शक्ति है। लड़की के लिये जिन्दगी का मतलब अज्ञात के सम्मुख मानव का यातनापूर्ण बलिदान था, विवेक को उस इच्छा के अधीन बनाना था, जिसके नियम और लक्ष्य को केवल पादरी जानता था।

"वह हैरान होता हुआ यह पूछता –

"'तो आप मेरे व्याख्यान सुनने क्यों आती हैं, समाजवाद में क्या आशा रखती हैं?'

"'मैं जानती हूं कि मैं पाप कर रही हूं और खुद अपना खण्डन कर रही हूं!' वह उदासी से यह स्वीकार करती। 'लेकिन आपका व्याख्यान सुनना और सभी लोगों के सुख-सौभाग्य की सम्भावना की कल्पना करना बहुत अच्छा लगता है।'

5*

"वह बहुत सुन्दर नहीं थी – दुबली-पतली-सी, बुद्धिमत्तापूर्ण चेहरे और बड़ी-बड़ी आंखोंवाली, जिनकी दृष्टि विनम्र और क्रोधपूर्ण, स्नेहयुक्त तथा कठोर भी हो सकती थी। वह रेशम की फ़ैक्टरी में काम करती थी, बूढ़ी मां, टांगों के बिना पिता और छोटी बहन के साथ रहती थी जो व्यावसायिक स्कूल में पढ़ती थी। कभी-कभी वह खुशी के मूड में होती, खुशी को खुलकर ज़ाहिर न करती, किन्तु आकर्षक लगती, संग्रहालयों और पुराने गिरजों को प्यार करती, चित्रों और वस्तुओं के सौन्दर्य पर मुग्ध होती और उन्हें देखते हुए कहती –

"'यह सोचकर कितना अजीब लगता है कि ये बहुत ही सुन्दर चीज़ें कभी कुछ लोगों के घरों में बन्द थीं और किसी एक ही व्यक्ति को उनके उपयोग का अधिकार प्राप्त था! सुन्दर को तो सभी को देखना चाहिये, तभी वह सजीव रहता है!'

"वह अक्सर ऐसी अजीब बातें करती, जब उसे लगता कि ये शब्द उस लड़की की आत्मा की अनबूझ पीड़ा की देन हैं। वे घायल की कराहों की याद दिलाते। वह अनुभव करता कि यह लड़की जीवन और लोगों को बहुत गहन, चिन्ता और महानुभूति मे ओतप्रोत मां के प्यार की भांति प्यार करती है। वह बड़े धीरज से उस क्षण की प्रतीक्षा करता रहा जब उसका विश्वास इस लड़की के दिल को प्रज्वलित करेगा और उसका शान्त प्रेम प्रबल प्रणय-भावना में बदल जायेगा। उसे प्रतीत हुआ कि युवती उसके भाषणों को अधिकाधिक ध्यान से सुनती है, कि मन ही मन वह उससे सहमत हो चुकी है। वह अधिकाधिक उत्साह से उसके साथ मानव – जनता और मानवजाति – को

पुरानी जंजीरों से मुक्त करने के अडिग संघर्ष की आवश्यकता की चर्चा करता। उन पुरानी जंजीरों की, जिनका जंग लोगों की आत्माओं में घुस गया है, जो उन्हें कलुषित कर रहा है और विषमयी बना रहा है।

"एक दिन युवती को घर पहुंचाते हुए उसने उससे कहा कि उसे प्यार करता है और चाहता है कि वह उसकी पत्नी बन जाये। उसके इन शब्दों ने युवती पर जो प्रभाव डाला, उससे वह स्तम्भित रह गया। युवती ऐसे लड़खड़ाई मानो उसने उसे धक्का दे दिया हो, उसकी आंखें फैल गयीं, उसके चेहरे का रंग उड़ गया, हाथों को पीठ पीछे करके उसने दीवार का सहारा लिया और लगभग भयभीत दृष्टि से उसे ताकते हुए बोली –

"'मैंने अनुमान लगा लिया था कि बात ऐसी ही है, लगभग ऐसा अनुभव करती थी, क्योंकि बहुत अरसे से खुद भी आपको प्यार करती थी। लेकिन, हे भगवान, अब क्या होगा?'

"'तुम्हारे और मेरे सुख के दिन, हमारे साझे काम के दिन शुरू हो जायेंगे!' प्रचारक ने खुश होते हुए कहा।

"'नहीं,' लड़की ने सिर झुकाकर जवाब दिया। 'नहीं! हमें प्यार का नाम नहीं लेना चाहिये।'

"'वह क्यों?'

"'तुम गिरजे में चलकर मेरे साथ शादी करोगे?' युवती ने धीमी आवाज में पूछा।

"'नहीं!'

और यह आशा करते थे कि अतृप्त तथा ज्यादा जोर से भड़कने-वाली भावना की आग को दोनों में से कोई एक सहन नहीं कर पायेगा। उनकी मुलाकातें हताशा और दुख से भरपूर होतीं, युवती के साथ हर मिलन के बाद वह अपने को टूटा हुआ और शक्तिहीन अनुभव करता। युवती आसू बहाती हुई पाप स्वीकार करने के लिये पादरी के पास चली जाती। प्रचारक से यह चीज छिपी नहीं थी और उसे लगता कि सिर मुंडे पादरियों की काली दीवार अधिकाधिक ऊंची और प्रतिदिन अधिक अभेद्य होती जा रही है, अधिक बड़ी होती जा रही है और उन्हें हमेशा के लिये एक-दूसरे से अलग करती जा रही है।

किसी पर्व के दिन युवती के साथ शहर से बाहर खुले मैदान में टहलते हुए उसने कोई धमकी न देकर, बल्कि ऊंचे-ऊंचे सोचते हुए उससे कहा –

"'जानती हो, कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारी हत्या कर सकता हू'

"युवती खामोश रही।

"'मैंने जो कहा, वह सुना तुमने?'

प्रचारक की ओर सन्देह देखते हुए युवती ने जवाब दिया –

"'हा, सुना।'

"और वह समझ गया कि उसके सामने झुकने के बजाय वह अपनी जान दे देगी। इस 'हा' के पहले उसने कभी-कभार उसका आलिंगन किया और चुम्बन लिया था युवती ने उसके ऐसा करने का विरोध भी किया था, किन्तु उसका विरोध कम होता गया था और वह कल्पना करने लगा था कि एक न...

"'मुझसे भविष्य की चर्चा करो,' युवती ने एक दिन उससे अनुरोध किया।

"वह वर्तमान की चर्चा करता रहा, बड़ी कटुता से उन सभी चीजों को गिनाता रहा जो हमारा नाश कर रही है, जिनके विरुद्ध वह हमेशा संघर्ष करता रहेगा और जिनको लोगों के जीवन से कानें गन्दे और फटे-पुराने चिथड़ों की तरह निकाल फेंकना चाहिये।

"युवती सुनती रही और जब उसकी पीड़ा असह्य हो गयी तो उसने उसका हाथ छूकर और मिन्नत-समाजत करती दृष्टि से उसकी आंखों में देखकर उसे चुप करवा दिया।

"'मैं मर रही हूं न?' युवती ने उससे एक दिन पूछा। उसके इस प्रश्न के कई दिन पहले डाक्टर ने प्रचारक को बता दिया था कि युवती को तेजी से बढ़नेवाली तपेदिक है और उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं हो सकती।

"प्रचारक ने कोई जवाब नहीं दिया, आंखें झुका लीं।

"'मैं जानती हूं कि जल्द ही मर जाऊंगी' युवती ने कहा। 'मुझे अपना हाथ दो।'

"और जब उसने हाथ उसकी तरफ बढ़ाया तो उसने गर्म होंठों से उसे चूमा और बोली—

"'मुझे क्षमा कर दो मैं तुम्हारे सम्मुख अपराधिनी हूं। मुझसे भूल हुई और मैंने तुम्हें बहुत सताया। अब जब मैं मृत्यु-द्वार पर खड़ी हूं तो अनुभव करती हूं कि मेरा विश्वास केवल उस चीज का भय ही था जिसे मैं अपनी इच्छा और तुम्हारी कोशिशों के बावजूद नहीं समझ पाई। यह केवल भय था,

दिन वह झुक जायेगी और तब उसकी सहज नारी-वृत्ति उसे जीतने में उसके लिये सहायक होगी। किन्तु अब वह समझ गया कि यह विजय नहीं, विवशता होगी और इस दिन से उसने उसमें नारी को जागृत करना बन्द कर दिया।

"इस तरह वह जीवन के बारे में युवती की धारणाओं के अन्धेरे घेरे की थाह लेता रहा, यथाशक्ति उसके सामने सभी ज्योतियां जलायी, किन्तु युवती होंठों पर स्वप्निल-सी मुस्कान लिये अंधे की तरह उसे सुनती रहती और उस पर विश्वास न करती।

"एक दिन युवती ने उससे कहा –

"'कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि तुम जो कुछ कहते हो, वह सम्भव है। लेकिन मेरे ख़्याल में ऐसा इसलिये है कि मैं तुम्हें प्यार करती हूं! मैं समझती तो हूं, लेकिन विश्वास नहीं करती, कर नहीं सकती! और जब तुम जाते हो तो तुम्हारा सभी कुछ तुम्हारे साथ ही चला जाता है।'

"लगभग दो साल तक यह सिलसिला चलता रहा और तब युवती बीमार पड गयी। प्रचारक ने अपना काम छोड़ दिया, संगठन के कार्यों से भी मुंह मोड़ लिया, उसके सिर पर बहुत-सा क़र्ज चढ़ गया, साथियों से कन्नी काटता हुआ वह युवती के घर के आस-पास चक्कर काटता या उसके पलंग के पास बैठा हुआ यह देखता रहता कि कैसे वह तिल-तिल गलती जा रही है, प्रतिदिन अधिकाधिक क्षीण होती जाती है और कैसे उसकी आंखों में बीमारी की लपट अधिकाधिक तेज़ होती जा रही है।

"'मुझसे भविष्य की चर्चा करो,' युवती ने एक दिन उससे अनुरोध किया।

"वह वर्त्तमान की चर्चा करता रहा, बडी कटुता से उन सभी चीजों को गिनाता रहा जो हमारा नाश कर रही है, जिनके विरुद्ध वह हमेशा सघर्ष करता रहेगा और जिनको लोगो के जीवन से काले, गन्दे और फटे-पुराने चिथडो की तरह निकाल फेंकना चाहिये।

"युवती सुनती रही और जब उसकी पीडा असह्य हो गयी तो उसने उसका हाथ छूकर और मिन्नत-समाजत करती दृष्टि से उसकी आखो मे देखकर उसे चुप करवा दिया।

"'मैं मर रही हू न?' युवती ने उससे एक दिन पूछा। उसके इस प्रश्न के कई दिन पहले डाक्टर ने प्रचारक को बता दिया था कि युवती को तेजी से बढनेवाली तपेदिक है और उसके बचने की कोई उम्मीद नही हो सकती।

"प्रचारक ने कोई जवाब नही दिया, आखें झुका ली।

"'मैं जानती हू कि जल्द ही मर जाऊगी,' युवती ने कहा। 'मुझे अपना हाथ दो।'

"और जब उसने हाथ उसकी तरफ बढाया तो उसने गर्म होठो से उसे चूमा और बोली–

"'मुझे क्षमा कर दो, मैं तुम्हारे सम्मुख अपराधिनी हू। मुझसे भूल हुई और मैंने तुम्हे बहुत सताया। अब जब मैं मृत्यु-द्वार पर खडी हू तो अनुभव करती हू कि मेरा विश्वास केवल उस चीज का भय ही था जिसे मैं अपनी इच्छा और तुम्हारी कोशिशो के बावजूद नही समझ पाई। यह केवल भय था

हुए है, बहुत-से मस्तिष्क असंगतियों से अत्यधिक संतप्त हैं, किन्तु हम सभी स्वतन्त्रता की ओर बढ़ रहे हैं, स्वतन्त्रता की ओर।

और जितने अधिक हेल-मेल से हम बढ़ेंगे, उतनी ही ज्यादा तेज़ी से हम बढ़ पायेंगे।

आइये नारी का, सर्वविजयी जीवन
के अक्षय स्रोत, मां का स्तुति-गान करें!

यह कहानी है संगदिल, लंगड़े चीते
तैमूर-लंग की, साहिब-ए-किरानी की,

भाग्यशाली विजेता की, तैमूर-लंग की, जैसा कि उसे काफिर कहते थे, उस आदमी की जो सारी दुनिया को ही तहस-नहस कर डालना चाहता था।

पचास साल तक वह धरती को रौंदता रहा, उसके फौलादी कदमों ने शहरों और राज्यों को वैसे ही कुचल डाला जैसे हाथी का पांव चींटियों की बांबी को कुचल देता है, उसके रास्ते पर सभी दिशाओं में खून की नदियां बहीं, उसने विजित लोगों की हड्डियों से ऊंची-ऊंची मीनारें खड़ी कीं, वह मौत की ताकत से अपनी ताकत का पंजा लड़ाते हुए जिन्दगी का नाश करता था, मौत से इस चीज़ का बदला लेता था कि उसने उससे उसका बेटा जहांगीर छीन लिया था। बहुत ही भयानक था यह आदमी! वह मौत से उसकी सारी लूट-पाट को हथिया लेना चाहता था, ताकि भूख और गम से उसका दम निकल जाये!

उसका बेटा जहांगीर जिस दिन मौत के मुंह में चला गया और समरकन्द के लोग काली तथा हल्की नीली पोशाकें पहने और सिरों पर धूल-मिट्टी तथा राख डाले हुए क्रूर जेताओं के इस विजेता के स्वागत को आये, उस दिन से तथा ओत्रार में अपनी मृत्यु के दिन तक, जहां मौत ने आखिर उसे पराजित कर ही दिया था, तीस साल तक वह एक बार भी नहीं मुस्कराया। होंठों को कसकर भींचे हुए वह ऐसे ही जिया, कभी किसी के सामने उसने सिर नहीं झुकाया और तीस साल तक दूसरों के प्रति दया-सहानुभूति के लिये उसके हृदय-द्वार बन्द रहे।

आइये नारी का, मां का स्तुति-गान करें, उस एकमात्र

शक्ति का जिसके सामने मृत्यु नत-मस्तक होती है! यहां चर्चा की जायेगी मां के बारे में सचाई की, इस चीज़ की कि कैसे मौत के हुक्म बजानेवाले, मौत के गुलाम, पत्थर दिल तैमूर-लंग ने, हमारी धरती के उस ख़ूनी दरिन्दे ने मां के सामने घुटने टेके।

क़िस्सा यों हुआ।

बहुत ही ख़ूबसूरत कनीगुल घाटी में, जो गुलाबों और चमेली के रज-बादलों से ढकी हुई थी और जिसे समरक़न्द के शायरों ने ब़ड़ा सुन्दर "फूलों का प्यार" नाम दिया है और जहां से महान नगर की नीली मीनारें और मसजिदों के नीले गुम्बद नजर आते हैं, तैमूर-बेग जशन मना रहा था।

पन्द्रह हज़ार गोल तम्बू एक चौड़े पंखे की तरह घाटी में तने हुए थे। वे सभी गुल लाला की तरह थे और हर तम्बू के ऊपर सैकड़ों रेशमी झंडियां फूलों की तरह झूम रही थीं।

इन तम्बुओं के बीचोंबीच था गुरगन-तैमूर का तम्बू – सहेलियों से घिरी हुई महारानी के समान। चार कोने थे उसके, हर तरफ़ सौ क़दमों की लम्बाई थी, तीन भालों जितनी ऊंचाई थी और उसके मध्य में थे बारह स्वर्ण-स्तम्भ और हर स्तम्भ की मोटाई थी आदमी जितनी। इस तम्बू के ऊपर था नीला गुम्बद, उसके सभी ओर थी काली, पीली और नीली धारियों-वाली रेशमी कनात, लाल रंग की पांच सौ रस्सियां उसे कसे हुए थीं ताकि वह आकाश में न उड़ जाये। उसके चार कोनों में चांदी का एक-एक उक़ाब था और तम्बू के मध्य में, गुम्बद

के नीचे मुद पांचवां उकाब, शाहों का शाह, अजेय तैमूर-गुरगन बैठा था।

वह आसमानी रंग का रेशमी जामा पहने था जिस पर बड़े-बड़े मोती जड़े हुए थे, पांच हजार मोती! सफेद बालोंवाले उसके भयानक सिर पर सफेद टोपी थी जिसके नुकीले सिरे पर लाल लगा हुआ था। सारी दुनिया को देखनेवाली यह लाल मणि, यह खूनी आंख हिल-डुल रही थी, हिल-डुल रही थी।

लंगड़े तैमूर का चेहरा हजारों बार खून में डूबने के कारण जंग लगे चौड़े खंजर जैसा था। उसकी आंखें छोटी-छोटी थी, मगर उनकी नजर से कुछ नहीं बचता था और उनकी चमक अरबों के प्यारे रत्न जमुर्रद की सर्द चमक के समान था जिसे काफिर पन्ना कहते हैं और जो मिरगी के भयानक रोग को दूर करता है। उसके कानों में थी श्रीलंका के लालों की बालियां, किसी बहुत ही सुन्दर युवती के होंठों के रंग जैसी लाल मणि की बालियां।

फर्श पर ऐसे कालीन बिछे थे जैसे कि अब नहीं रहे, और उन पर शराब से भरी तीन सौ सुराहियां और शाही दावत के लिये जरूरी बाकी सभी चीजें रखी हुई थीं। तैमूर के पीछे साजिन्दे बैठे थे और उसके नजदीक कोई नहीं। उसके कदमों में बैठे थे रिश्तेदार, शाह और शहजादे और फौजी सरदार। उसके सबसे ज्यादा नजदीक बैठा था मस्त शायर केरमानी, वही केरमानी जिसने दुनिया को तबाह-बरबाद करनेवाले के एक बार यह पूछने पर कि "अगर मुझे बेचा जाये तो तुम

के इस क्षण में, जितने ने कुछ [illegible]
गर्व के कारण, विजयों की [illegible]* के [illegible]
नशे में थे, मदहोशी की इन घड़ी [illegible],
बादलों में से कड़कती बिजली की [illegible]
सुलतान बायेजिद के विजेता के [illegible]
उकाब की गर्वीली चीख, वह आवाज [illegible]
की जानी-पहचानी और उनके नजदीक थी [illegible]
आत्मा के अनुरूप थी और इसलिये [illegible]
क्रूर थी।

तैमूर ने यह जानने का हुक्म दिया कि [illegible]
में कौन चीख रहा है। उसे बताया गया कि [illegible]
है, धूल-मिट्टी में लथपथ और चिथड़े पहने हुए। वह [illegible]
है, अरबी बोलती है और आप से [illegible]
मिलने की माग – हा, माग करती है!

"उसे यहा ले आओ!" बादशाह ने कहा।

और उसके सामने थी नंगे पाव [illegible]
पहने एक औरत। काले, खुले बाल [illegible]
थे, चेहरा मानो कांसे का था, आखो [illegible]
लग की तरफ फैला हुआ हाथ [illegible]

"तुम्हीं ने जीता है न सुलतान [illegible]
ने पूछा।

"हा, मैंने। उसे और [illegible]

---

* कुमिस – घोड़ी के दूध का [illegible]

और अभी तक थका नहीं हूं जीतों से। अपने वारे में तुम क्या कह मकती हो, ऐ औरत?"

"सुनो!" वह वोली। "तुम चाहे कुछ भी क्यों न करो – तुम सिर्फ़ आदमी ही रहोगे और मैं हूं मां! तुम मौत की ख़िदमत करते हो और मैं ज़िन्दगी की! तुम मेरे सामने कुसूरवार हो और मैं यही मांग करने आयी हूं कि तुम मेरे सामने अपना कुसूर मानो। मुझे वताया गया है कि तुम "इन्साफ़ में ताक़त है" – इस उसूल के कायल हो। मैं इसका यक़ीन नहीं करती, लेकिन मेरे साथ तुम्हें इन्साफ़ से काम लेना होगा, क्योंकि मैं मां हूं।"

वादशाह काफ़ी समझदार था, इसलिये शब्दों की दवंगता में उसने उनकी ताक़त को महसूस कर लिया। वह वोला –

"वैठकर अपनी वात कहो। मैं उसे सुनना चाहता हूं।"

औरत राजाओं के तंग घेरे में, उसके लिये जैसे भी सुविधाजनक हुआ, क़ालीन पर वैठ गयी और उसने यह आपवीती सुनायी –

"मैं सालेरनो इलाक़े के नजदीक की रहनेवाली हूं। यह वहुत दूर, इटली में है और तुम इसे नहीं जानते! मेरे पिता मछुआ थे, पति भी। मेरे पति ख़ुशक़िस्मत आदमी की तरह ख़ूवसूरत थे और उन्हें ख़ुशी की यह मस्ती दी थी मैंने! इनके अलावा मेरा एक वेटा भी था – दुनिया में सवसे ज़्यादा ख़ूवसूरत लड़का ..."

"मेरे जहांगीर की तरह," वूढ़े योद्धा ने धीरे से कहा।

"सवसे ज़्यादा ख़ूवसूरत और सवसे ज़्यादा अक्लमन्द था

मेरा बेटा। वह छ साल का था जब मारात्मिन के समुद्री डाकू हमारे तट पर आये, उन्होंने मेरे पिता, पति और बहुत-से दूसरे लोगों को मौत के घाट उतार डाला और मेरे बेटे को भगा ले गये। चार साल से मैं सारी दुनिया की खाक छानती हुई उसे खोज रही हूं। अब वह तुम्हारे पास है, मैं यह जानती हूं, क्योंकि बायेजिद के बहादुरों ने समुद्री लुटेरों को गिरफ्तार कर लिया था और तुमने बायेजिद को हराकर उससे सब कुछ छीन लिया। तुम्हें यह मालूम होना चाहिये कि मेरा बेटा कहां है, तुम्हें उसे मुझे लौटा देना चाहिये।"

सभी खिलखिलाकर हंस दिये और हमेशा अपने को [illegible] माननेवाले शाहों ने बादशाह को सम्बोधित किया।

"यह पागल है।" तैमूर के दोस्तों, शाहों और [illegible] ने कहा और सभी ठठाकर हंस पड़े।

सिर्फ केरमानी ही इस औरत को संजीदगी से [illegible] बड़ी हैरानी से देखता रहा।

"वह मां की तरह पागल है!" [illegible] कहा और सारी दुनिया का दुश्मन बादशाह [illegible]—

"ऐ औरत! मेरे लिये अनजान [illegible] नदियों, पहाड़ों और जगलों को [illegible] दरिन्दों और लोगों ने, जो अक्सर [illegible] होते हैं, तुम्हें जिन्दा कैसे छोड़ दिया? [illegible] साथ नहीं लिये थी जो बेरहम [illegible] होता है और जब तक हाथों में [illegible] है, कभी साथ नहीं छोड़ता? [illegible]

को और इसलिये भी मेरा यह जानना ज़रूरी है कि मेरी हैरानी तुम्हें समझ पाने में मेरे आड़े न आये!"

आइये, हम नारी की गौरव-गाथा गायें जिसका प्यार किसी भी वाधा को नहीं स्वीकारता, जिसके दूध से ही सब का लालन-पालन होता है! मानव में जो कुछ सबसे बढ़-चढ़कर है, वह सूर्य की किरणों और मां के दूध की देन है—यही है जो हमें जीवन के प्रेम से ओतप्रोत करता है!

औरत ने तैमूर-लंग को जवाब दिया—

"समुन्दर तो मेरे रास्ते में सिर्फ़ एक ही आया। उस पर बहुत से जज़ीरे और मछुओं की नावें थीं और जब हम अपने किसी आंख के तारे की तलाश में होते हैं तो हवा भी हमारा साथ देती है। समुन्दर के किनारे पर पैदा और बड़े होनेवाले के लिये नदियों-दरियाओं को लांघ जाना तो बायें हाथ का खेल होता है। रहे पहाड़? तो वे तो मुझे दिखाई ही नहीं दिये।"

मस्त केरमानी ने खुशमिज़ाजी से कहा—

"प्यार करनेवाले के लिये पहाड़ घाटी बन जाता है!"

"रास्ते में जंगल आये, हां, ऐसा तो हुआ! जंगली सूअरों, भालुओं, बनबिलावों और सींग ताने हुए खतरनाक जंगली सांडों को भी मैंने अपने सामने देखा और तुम्हारे जैसी आंखोंवाले चीतों से भी दो बार मेरा वास्ता पड़ा। लेकिन हर दरिन्दे के भी दिल होता है, मैंने उनके साथ भी वैसे ही बातें कीं जैसे तुम्हारे साथ। उन्होंने यक़ीन कर लिया कि मैं मां हूं और वे आह भरकर मेरे रास्ते से हट गये, उन्हें मुझ पर रहम आया! क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि जानवर भी अपने बच्चों को प्यार करते

है और लोगो के मुकाबले मे वे उनकी जिन्दगी और आजादी के लिये कुछ कम डटकर नहीं लड़ते है?"

"बिल्कुल ऐसा ही है, औरत!" तैमूर बोला। "मैं जानता हू कि अक्सर वे लोगो से ज्यादा प्यार करते है और उनके लिये कहीं ज्यादा डटकर जूझते है!"

"लोग," वह एक बच्चे की तरह कहती गयी, क्योंकि हर मा अपनी आत्मा मे सौ गुना अधिक बालक होती है, "लोग – वे अपनी माताओ के बच्चे ही है," औरत ने कहा, "क्योंकि हर किसी की मा होती है, हर कोई किसी मा का बेटा होता है। यहा तक कि तुझ बुड्ढे को भी – तुम यह जानते हो – किसी औरत ने जन्म दिया है। तुम खुदा से इन्कार कर सकते हो, लेकिन इस बात से तुम बुड्ढे भी इन्कार नही कर सकते।"

"सोलह आने सही बात है तुम्हारी!" निडर शायर केरमानी कह उठा। "सांडो के झुण्ड मे बछड़े-बछिया नही हो सकते, सूरज के बिना फूल नही खिल सकते, प्यार के बिना सुख नही मिल सकता, औरत के बिना प्यार नही हो सकता और मा के बिना न तो शायर हो सकता है और न ही सूरमा!"

और औरत बोली –

"मेरा बेटा मुझे लौटा दो, क्योंकि मै – मा हू और उसे प्यार करती हू!"

आइये, औरत के सामने सिर झुकाये – उसी ने मूसा, मुहम्मद और महान ईसा को जन्म दिया जिसे क्रूर लोगो ने मरवा डाला, लेकिन, जैसा कि शरफुद्दीन ने कहा है – वह फिर

से जी उठेगा, ज़िन्दा तथा मुरदा लोगों के बारे में अपना फ़ैसला सुनायेगा और यह होगा दमिश्क में, दमिश्क में!

आइये, उसके सम्मुख नतमस्तक हों जो निरन्तर महान सपूतों को जन्म देती है! अरस्तू भी उसी का बेटा था और फ़िरदौसी भी, शहद की तरह मीठा शेख़ सादी भी और जहर मिली शराब जैसा उमर ख़य्याम भी, सिकन्दर और नेत्रहीन होमर भी। ये सब उसी की सन्तान हैं, सभी ने उसका दूध पिया है और जब वे गुल लाला के पौधे जितने छोटे-से थे तो उसी ने इनकी उंगली पकड़कर इन्हें ज़िन्दगी की राह पर बढ़ाया था। मां ही दुनिया का गौरव-स्रोत है!

शहरों को तबाह-बरबाद करनेवाला बूढ़ा, लंगड़ा तैमूर गहरी सोच में डूब गया, बहुत देर तक ख़ामोश रहा और फिर सभी को मुख़ातिब करते हुए बोला—

"मैं तंगरी कुली तैमूर! मैं ख़ुदा का ख़िदमतगार तैमूर, वही कुछ कह रहा हूं जो मुझे कहना चाहिये! मैं इस दुनिया में जी रहा हूं, बहुत सालों से धरती मेरे पांवों के नीचे कराह रही है और तीस बरस से मैं उसे अपने इस हाथ से तहस-नहस कर रहा हूं। इसलिये तहस-नहस कर रहा हूं कि अपने बेटे जहांगीर की मौत का बदला ले सकूं, इसलिये कि उसने मेरे दिल के सूरज को मुझसे छीन लिया! सलतनतों और शहरों के लिये लोग मुझसे लड़े, लेकिन इन्सान के लिये कभी, कोई मुझसे नहीं लड़ा। मेरी नज़र में कोई क़ीमत नहीं थी इन्सान की और मुझे मालूम नहीं था कि वह कौन है और किसलिये मेरे रास्ते में आता है? मैंने, तैमूर ने बायेज़िद को जीतने के

बाद उसने कहा था—'ओ बायेजिद, लगता है कि खुदा के लिये सल्तनत और लोग कुछ भी मानी नहीं रखते। वह हम जैसों को—तुम काने हो और मैं लगडा—उन पर हुकूमत करने के लिये उन्हे सौप देता है।' मैंने उससे उस वक्त यह कहा जब जजीरों में जकड़कर उसे मेरे सामने पेश किया गया और वह उनके बोझ तले दबता-सा खड़ा था। दूसरी नजर में देखते हुए मैंने उससे ऐसा कहा और उस वक्त जिन्दगी मुझे नागदौने की तरह, खण्डहरों में उगनेवाली उस घास की तरह कड़ुवी महसूस हुई थी।

"खुदा का खिदमतगार मैं तैमूर, वही कुछ कह रहा हू जो मुझे कहना चाहिये। मेरे सामने एक औरत बैठी है, वैसी ही, जैसी इस दुनिया में बेशुमार हैं और उसने मेरे दिल में ऐसे जज्बात पैदा कर दिये है जिनसे मैं आज तक अनजान था। वह मेरे साथ बराबरी के नाते बात करती है, वह इलतजा नहीं करती, माग करती है। मुझे लगता है कि इस औरत में इतनी ताकत कहा से आई, मैं इसका राज समझ गया हू। वह प्यार करती है और प्यार ने ही उसे यह समझने में मदद दी है कि उसका बेटा जिन्दगी की ऐसी चिंगारी है जिससे बहुत-सी सदियों के लिये कोई मशाल रोशन हो सकती है। क्या सभी पैगम्बर कभी बच्चे नहीं थे और सूरमा बेहद कमजोर? ओ जहांगीर, मेरी आखों की रोशनी, शायद तुम्हारी किस्मत में यह लिखा था कि तुम धरती को प्यार की गर्मी दो, उसमें खुशी के बीज बोवो, क्योंकि मैंने उसे खून से अच्छी तरह तर कर दिया और वह फूल उठी।"

अनेक राष्ट्रों का नाशक फिर से देर तक सोचता रहा और आख़िर बोला –

"ख़ुदा का ख़िदमतगार, मैं तैमूर, वही कुछ कह रहा हूं जो मुझे कहना चाहिये! तीन सौ घुड़सवारों को इसी वक़्त मेरी सलतनत के हर कोने में रवाना कर दो। वे इस औरत के बेटे को ढूंढ़ लायें, वह यहीं उसका इन्तज़ार करेगी और इसके साथ मैं भी इन्तज़ार करूंगा। जो कोई इसके बच्चे को अपने घोड़े के ज़ीन पर बिठाकर लायेगा, उसकी क़िस्मत खुल जायेगी – यह मैं कह रहा हूं, तैमूर! ठीक कहा न मैंने, औरत?"

उसने अपने चेहरे से काले बाल हटाये, उसकी ओर देखकर मुस्करायी और सहमति से सिर झुकाते हुए बोली –

"बिल्कुल ठीक, बादशाह सलामत!"

तब वह भयानक बूढ़ा उठा, चुपचाप नारी के सामने झुक गया और ख़ुशमिज़ाज शायर केरमानी ने बच्चे की तरह बड़ी ख़ुशी से ये पंक्तियां सुनायीं –

फूलों और सितारों से क्या हो सकता बढ़कर सुन्दर?
गीत प्रेम के, गीत प्यार के, होगा यह सबका उत्तर!
ऋतु वसन्त के सूरज से भी मधुर और क्या हो सकता?
प्रेमी यही कहेगा – जिसको प्यार हृदय उसका करता।

तारे प्यारे अर्ध-रात्रि के – यह मुझको मालूम है!
सूरज भी प्यारा वसन्त में – यह मुझको मालूम है,
फूलों से बढ़ नयन प्रिया के – यह मुझको मालूम है।
सूरज से मुस्कान मधुरतर – यह भी तो मालूम है।

लेकिन गाया नहीं गया है गीत अभी सबसे सुन्दर
इस धरती पर सब चीज़ों का जो सच्चा आधार अमर,
विश्व-हृदय का गीत, अनूठे उस दिल का
गीत जिसे हम कह सकते मां के दिल का।

और तैमूर-लंग ने अपने शायर से कहा –

"बहुत ख़ूब, केरमानी! अपनी सूझबूझ को लोगों तक पहुंचाने के लिये तुम्हारे होंठों को चुनकर ख़ुदा ने ठीक ही किया!"

"अजी, ख़ुदा तो ख़ुद बहुत बड़ा शायर है!" मस्त केरमानी ने जवाब दिया।

और औरत मुस्करा रही थी, मुस्करा रहे थे सभी राजा और राजकुमार, सेनापति और दूसरे सभी बच्चे भी – उसकी ओर, मां की ओर देखते हुए!

यह सब कुछ सच है। यहां लिखा गया हर शब्द सत्य है, इसके बारे में हमारी माताये जानती हैं, उनसे पूछिये और वे कहेंगी –

"हां, यह शाश्वत सत्य है। हम मृत्यु से अधिक शक्तिशाली हैं, हम, जो निरन्तर इस संसार को बुद्धिमान, कवि और वीर देती हैं, हम, जो इसमें उस सब के बीज बोती हैं जिसके लिये संसार गर्व कर सकता है!"

बेहद गर्म दिन है, ख़ामोशी छाई है। चमकती शान्ति में जीवन ठहर-सा गया है, नीली, निर्मल आंख से आकाश पृथ्वी को स्नेहपूर्वक देख रहा है, सूरज उसकी

दहकती पुतली है।

सागर मानो नीली धातु की चिकनी-चिकनी चादर है, मछुओं की रंग-बिरंगी नौकाएं ऐसे निश्चल है जैसे कि उन्हें आकाश की तरह ही अत्यधिक चमकीली, नीली खाडी के अर्द्धचक्र में गाड दिया गया हो। धीरे-धीरे पंख हिलाते हुए एक जल-चिड़िया आकाश में उड रही है, पानी में उसकी छाया दूसरी ही चिड़िया के रूप में, उडनेवाली की तुलना में अधिक सफेद और सुन्दर दिखाई दे रही है।

दूरी आंखों को धुधलाती है। वहा कुहासे में बैगनी रंग का द्वीप धीरे-धीरे तैर रहा है या दहकते सूरज की गर्मी से तपकर पिघल रहा है। सागर के बीचोबीच यह अकेली चट्टान नेपल्ज की खाड़ी की अंगूठी में जडे हुए एक प्यारे हीरे-सी लगती है।

सीढ़ियां-सी बनाता हुआ पाषाणी तट सागर की ओर उतरता चला गया है, अंगूरों की बेलों, सन्तरे, नीबुओं और अंजीर के गहरे हरे पत्तों से वह सारे का सारा घुघराला और फूला-फूला-सा है, जैतून के हल्के रुपहली पत्तों में ढका हुआ है। सीधे समुद्र में उतरती चली गयी सघन हरियाली में सुनहरे, लाल और सफेद फूल अभिवादन करते-से मुस्करा रहे हैं और पीले तथा नारंगी रंग के फल चांदनी के बिना उस गर्म रात की याद दिलाते हैं जब आकाश अंधकारमय होता है और हवा में नमी बनी रहती है।

आकाश, सागर और आत्मा – सभी में नीरवता का है, यह सुनने को मन होता है कि वह सब कुछ जो सजीव वैसे भगवान सूर्य की मूक आराधना कर रहा है।

वल खाती हुई एक पगडंडी वाग़-वगीचों के वीच से गुज़र रही है और लम्वे क़द की एक स्त्री एक के वाद एक पत्थर पर धीरे-धीरे नीचे उतरती जा रही है। वह काले रंग की पोशाक पहने है जो धूप में इतनी वदरंग हो चुकी है कि उस पर भूरे-भूरे धव्वे उभर आये हैं और उस पर लगे हुए पैंवन्द भी दूर से ही नज़र आते हैं। नारी का सिर नंगा है, पके वालों का रुपहलापन चमक रहा है, वे छोटे-छोटे छल्लों के रूप में उसके ऊंचे माथे, कनपटियों और गालों की सांवली त्वचा पर विखरे हुए हैं। शायद इन वालों को कंघी से संवारकर सिर पर जमा देना सम्भव नहीं।

इस नारी का चेहरा कठोर और निर्मम है, एक वार देखने के वाद उसे कभी भी भुलाना मुमकिन नहीं। इस रूखे-सूखे चेहरे में कोई अत्यधिक प्राचीन लक्षण है और अगर उसकी काली आंखों की सीधी नज़र से नज़र मिलायी जाये तो वरवस पूरव के गर्म रेगिस्तानों, देवोरा और जूडिथ की याद ताज़ा हो जाती है।

एक ओर को सिर झुकाये हुए वह लाल रंग की कोई चीज़ बुन रही है। क्रोशिये का इस्पात चमकता है, ऊन का गोला उसकी पोशाक में छिपा हुआ है, किन्तु ऐसे प्रतीत होता कि लाल धागा इस नारी के वक्ष में से निकल रहा है। पगडंडी खड़ी और ऊवड़-खावड़ है, उससे नीचे गिरते हुए कंकड़ों-पत्थरों की आवाज़ सुनाई देती है, किन्तु पके वालोंवाली यह स्त्री ऐसे विश्वास से नीचे उतर रही है मानो उसके पांव रास्ते को देख सकते हों।

पकड़ने गया और फिर कभी नहीं लौटा। उस समय यह नारी गर्भवती थी।

बच्चे के जन्म लेने पर वह उसे लोगों से छिपाने लगी, उसे लेकर बाहर धूप में न आती, जैसा कि सभी स्त्रियां करती हैं, बेटे की शान न दिखाती। वह उसे चिथड़ों में लपेटकर अपने झोपड़े के अंधेरे कोने में छिपाये रखती और बहुत अरसे तक कोई पड़ोसी यह न देख पाया कि उसका बेटा कैसा है। वे तो केवल उसका बहुत बड़ा सिर और पीले चेहरे पर बहुत बड़ी-बड़ी और ठहरी-ठहरी आंखें ही देखते थे। इस बात की ओर भी उनका ध्यान गया कि स्वस्थ और चुस्त-फुर्तीली यह नारी पहले तो अभावों और गरीबी से निरन्तर और हंसते-हंसते संघर्ष करती हुई दूसरों में भी उत्साह का संचार कर सकती थी। लेकिन अब वह गुमसुम हो गयी थी, हमेशा किसी सोच में डूबी रहती थी, नाक-भौंह सिकोड़े हुए दुख के कुहासे में से हर चीज को अजीब दृष्टि से देखती थी जो मानो कोई प्रश्न करती-सी प्रतीत होती थी।

कुछ समय बाद सभी को उसके दुख की जानकारी हो गयी — बच्चा बड़ी डरावनी शक्लवाला पैदा हुआ, इसीलिये यह उसे दूसरों से छिपाती थी, खुद दुख से घुलती थी।

तब पड़ोसियों ने उससे कहा — वे इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि भयानक सूरतवाले बच्चे की मां होना नारी के लिये लज्जा की बात है, मदोन्ना के अतिरिक्त कोई यह नहीं जानता कि ऐसे क्रूर व्यंग्य के रूप में उसे न्यायपूर्ण दण्ड गया है या नहीं, किन्तु बच्चे का इसमें कोई अपराध नहीं

वह गूगा था, किन्तु जब कोई उसके निकट ही कुछ खाता या उसे भोजन की गंध मिल जाती तो अपने बड़े मुह को खोलकर तथा भारी सिर को दायें-बायें भुलाता हुआ घुटी-घुटी आवाज मे गुगियाना और उसकी आखों की धुधली-धुधली सफेदी पर लाल झिल्ली का जाल-सा बिछ जाता।

वह बहुत खाता और जैसे-जैसे वक्त बीतता गया, उसकी भूख बढ़ती गयी, वह लगातार गुगियाता-चिल्लाता रहता। मा दिन-रात काम मे जुटी रहती, लेकिन बहुत कम ही कमा पाती और कभी-कभी तो उसे कुछ भी न मिलता। वह शिकवा-शिकायत न करती और हमेशा चुपचाप तथा मन मारकर पड़ोसियों की मदद स्वीकार करती। किन्तु जब वह घर पर न होती तो पड़ोसी गूगे के चीखने-चिल्लाने से तग आकर भागते हुए अहाते मे जाते और खाने लायक कोई भी चीज – रोटी के सूखे टुकड़े, फल या सब्जिया उसके अतृप्त मुह मे ठूस देते।

"जल्द ही वह तुम्हारी बोटी-बोटी नोच खायेगा!" लोग उससे कहते। "तुम इसे किसी यतीमखाने या अस्पताल मे क्यो नही दे देती?"

वह उदासी से जवाब देती –

"मैंने इसे जन्म दिया है, मुझे ही इसका पेट भरना चाहिये।"

औरत खूबसूरत थी, बहुत-से मर्दों ने उसका दिल जीतना चाहा, लेकिन किसी को भी कामयाबी नही मिली। दूसरो की तुलना में अधिक अच्छे लगनेवाले एक पुरुष को उसने यह जवाब दिया –

"मैं तुम्हारी बीवी नहीं बन सकती, डरती हूं कि कहीं ऐसे ही एक अन्य डरावने बच्चे को जन्म न दे दूं। तब तुम्हें बड़ी शर्म आयेगी। नहीं, तुम चलते बनो!"

इस व्यक्ति ने उसे समझाया-बुझाया, मदोन्ना की दुहाई दी जो माताओं के प्रति न्यायशील है और उन्हें अपनी बहनों के समान मानती है। भोंडे की मां ने उत्तर दिया—

"मैं नहीं जानती कि मैंने कौन-सा अपराध किया है, किन्तु ऐसा क्रूर दण्ड दिया गया है मुझे।"

उस आदमी ने उसकी मिन्नत-समाजत की, रोया-धोया और चीखा-चिल्लाया भी। तब इस स्त्री ने कहा—

"अपने विश्वास के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिये। चलते बनो!"

और वह आदमी हमेशा के लिये कहीं बहुत दूर चला गया।

इस तरह यह स्त्री अनेक सालों तक इस अतल और निरन्तर चलते रहनेवाले बडे-से जबड़े को भरती रही, वह उसकी मेहनत की सारी कमाई, उसके खून और ज़िन्दगी को हड़पता गया। भोंडे का सिर बढ़ता गया, अधिकाधिक ख़तरनाक और गुब्बारे जैसा बनता गया जो मानो कमजोर और दुबली-पतली गर्दन से अलग होकर मकानों के कोनों से टकराता, धीरे-धीरे दायें-बायें हिलता-डुलता हुआ आसमान में उड़ने को तैयार हो।

अहाते में आनेवाला हर व्यक्ति आश्चर्यचकित होकर, घबराकर अनचाहे ही रुक जाता और यह न समझ पाता कि वह क्या देख रहा है? अंगूर की लताओं से ढकी दीवार के पास पत्थरों पर, जो बलिवेदी से लगते, एक बक्सा रखा था

और उसमें से यह भयानक सिर बाहर निकला हुआ था। हरियाली की पृष्ठभूमि पर पीला, झुर्रियों से ढका, गालों की उभरी हड्डियोंवाला चेहरा हर राहगीर का ध्यान अपनी ओर खींच लेता, बहुत अरसे तक भुलायी न जा सकनेवाली गड्ढों में से बाहर को निकली पड़ती भावशून्य आंखें, कांपती-सी चौड़ी, चपटी नाक, इधर-उधर हिलती-डुलती असाधारण रूप से बढ़ी हुई गालों तथा जबड़ों की हड्डियां, दरिन्दों जैसी दो तेज दन्त-पंक्तियां दिखाते हुए कांपते और लसलसे होंठ और अपना अलग-सा जीवन बितानेवाले जानवरों जैसे बड़े-बड़े तथा सब कुछ सुननेवाले कान – और इस सारे भयानक रूप के ऊपर थी नीग्रो के समान छोटे-छोटे, घुंघराले काले बालों की टोपी।

छिपकली के पंजे जैसे छोटे-से हाथ में खाने की किसी चीज का टुकड़ा पकड़े हुए यह विकराल प्राणी दाना चुगनेवाले पक्षी की तरह सिर को आगे-पीछे हिलाता रहता और दांतों से उसे काटते हुए चपचप की जोरदार आवाज करता और गुर्राता जाता। तृप्त होने पर वह लोगों को देखते हुए उन्हें अपने दांत दिखाता, उसकी आंखें नाममात्र पर जम जातीं और वे जानलेवा पीड़ा में ऐंठे हुए इस मुर्दा-से चेहरे पर एक बड़ा और धुंधला धब्बा प्रतीत होतीं। भूखा होने पर वह अपनी गर्दन को आगे की तरफ बढ़ा देता, लाल जबड़ा खोलकर तथा सांप जैसी पतली-सी जबान को हिलाता हुआ गुगियाकर भोजन की मांग करता।

लोग अपने जीवन के सभी अभिशापों और दुर्भाग्यों को याद करते, हाथों से सलीब बनाते और प्रार्थना करते हुए अपनी राह चल देते।

7-716

कठोर मिज़ाज के बूढ़े लुहार ने कई बार यह कहा –

"जब मैं सब कुछ हड़पनेवाले इस मुंह को देखता हूं तो सोचता हूं कि मेरी सारी ताक़त को भी कोई उसके समान ही हड़प गया है। मुझे लगता है कि हम सब दूसरों का खून पीनेवालों के लिये ही जीते और मरते हैं।

यह गूंगा सिर सभी के दिलों में दुख के भाव, मन को दहला देनेवाली भावनायें पैदा करता।

लोगों की बातें सुनते हुए इस भोंडे की मां ख़ामोश रहती, उसके बाल जल्द ही सफ़ेद हो गये, चेहरे पर झुर्रियां पड़ गयीं और एक ज़माने से वह मुस्कराना भूल चुकी थी। लोगों को मालूम था कि रातों को वह दरवाज़े के पास निश्चल खड़ी रहती है, आकाश को ताका करती है मानो किसी की राह देख रही हो। वे एक-दूसरे से कहते –

"किस चीज़ का इन्तज़ार है इसे?"

"पुराने गिरजे के पासवाले चौक में उसे ले जाकर बिठा दो!" पड़ोसी उसे सलाह देते। "वहां विदेशी आते रहते हैं और वे ज़रूर हर दिन कुछ पैसे उसके लिये फेंक दिया करेंगे।"

मां यह सुनकर कांप उठती और कहती –

"विदेशियों का इसे देखना तो बड़ी भयानक बात होगी। वे हमारे बारे में क्या सोचेंगे?"

लोग जवाब देते –

"गरीबी हर जगह है – सभी यह जानते हैं!"

वह इन्कार करती हुई सिर हिला देती।

किन्तु जिज्ञासा के मारे हुए विदेशी सभी जगह पहुंच जाते

मे जोडे हुए थे। अब उसका हृदय अपने प्रिय पुत्र को खो चुका था और रोता था। वह एक तराजू की तरह था जिसके एक पलडे मे बेटे की ममता और दूसरे मे नगर का प्यार था और वह यह समझने मे असमर्थ थी कि कौन-सा पलडा अधिक भारी है?

वह रातो को इसी तरह से घूमती रहती और उसे न पहचान पानेवाले बहुत-से लोग उसकी काली आकृति को मृत्यु का, जो उन सबके सिरो पर मडरा रही थी, साकार रूप मानते हुए दूर हट जाते और पहचान लेने पर देश-द्रोही की मा के पास से चुपचाप दूर चले जाते।

लेकिन एक दिन शहर की दीवार के निकट, एक सुनसान कोने मे उसे एक अन्य स्त्री दिखाई दी। वह शव के पास घुटनो के बल ऐसे निश्चल खडी थी मानो जमीन का ही एक टुकडा हो और अपना शोकपूर्ण चेहरा सितारो की ओर उठाकर प्रार्थना कर रही थी। उसके सिर के ऊपर, दीवार से सटे पहरेदार धीरे-धीरे बातचीत कर रहे थे और पत्थर की सान पर हथियारो के तेज किये जाने की आवाज आ रही थी।

देश-द्रोही की मा ने पूछा –

"पति है?"

"नही।"

"भाई है?"

"नही, बेटा है। पति तेरह दिन पहले खेत रहे और यह आज मारा गया।"

मृत बेटे की मा ने उठकर विनयपूर्वक कहा –

बारे में क्या निर्णय करें। उन्होंने तय किया—

"सच तो यह है कि बेटे के पाप के लिये हम तुम्हारी हत्या नहीं कर सकते। हम जानते हैं कि तुम उसे ऐसा भयंकर पाप करने की प्रेरणा नहीं दे सकती थी और इस चीज का भी अनुमान लगाते हैं कि तुम कितनी अधिक यातना सहन कर रही होगी। किन्तु एक बन्धक के रूप में भी नगर को तुम्हारी जरूरत नहीं। तुम्हारा बेटा तुम्हारी कोई चिन्ता नहीं करता और हम सोचते हैं कि वह शैतान तुम्हें भूल गया है। अगर तुम यह समझती हो कि तुम दण्ड के योग्य हो तो यह है तुम्हारा दण्ड! हमें लगता है कि यह दण्ड तो मृत्यु से भी अधिक भयंकर है!"

"हां, यह अधिक भयंकर है!" उसने जवाब दिया।

उन्होंने फाटक खोल दिया, उसे शहर से बाहर जाने दिया और देर तक वे नगर की दीवारों से यह देखते रहे कि कैसे वह उसके बेटे द्वारा खून से बुरी तरह लथपथ की गयी अपनी प्यारी धरती पर चलती जा रही है। वह बहुत धीरे-धीरे चल रही थी, बड़ी मुश्किल से इस धरती से अपने कदम ऊपर उठा पा रही थी, नगर की रक्षा करते हुए शहीद होनेवालों के सामने सिर झुकाती थी और आक्रमण के हथियारों को नफरत से ठोकर मारकर दूर हटाती थी क्योंकि माताएं आक्रमण के हथियारों से घृणा करती हैं और केवल जीवन की रक्षा करनेवाले शस्त्रों को ही मान्यता देती हैं।

वह ऐसे धीरे-धीरे चल रही थी मानो अपनी पोशाक के नीचे किसी तरल पदार्थ से भरा हुआ प्याला हाथ में लिये हो और डरती हो कि कहीं वह छलक न जाये। दूर जाती हुई उसकी

अधिकाधिक छोटी होती जाती थी और नगर की दीवारों से देखने-वालों को ऐसा प्रतीत होता था मानो उसके साथ-साथ ही निराशा और उदासी भी उनसे दूर होती जा रही है।

उन्होंने देखा कि कैसे वह रास्ते में रुकी और काली पोशाक का हुड उतारकर देर तक नगर की ओर देखती रही। शत्रु-शिविर में भी मैदान के बीचोंबीच अकेली खड़ी इस नारी की तरफ़ ध्यान गया और इसके समान काली आकृतियां ही धीरे-धीरे और सावधानी से इसके निकट आने लगीं।

निकट आकर इन आकृतियों ने पूछा कि वह कौन है और कहां जा रही है।

"तुम्हारा सरदार मेरा बेटा है," नारी ने जवाब दिया और एक भी सैनिक को इस कथन पर सन्देह नहीं हुआ। वे उसके बेटे की वीरता और बुद्धिमत्ता का गुण-गान करते हुए उसके साथ-साथ चलने लगे और यह नारी गर्व से सिर ऊपर उठाये तथा तनिक भी चकित हुए बिना उनकी बातें सुनती रही। उसके बेटे को ऐसा ही होना भी चाहिये।

और लीजिये, अब वह खड़ी थी उस आदमी के सामने जिसे वह उसके जन्म से नौ महीने पहले जानती थी, उसके सामने खड़ी थी जिसे अपने हृदय से कभी अलग अनुभव नहीं कर पायी थी। रेशम और मखमल से सजा-धजा वह उसके सामने था और उसके अस्त्र-शस्त्र भी रत्न जटित थे। सब कुछ वैसा ही था, जैसा कि होना चाहिये। इसी तरह से धनी, विख्यात और प्रेम-पात्र के रूप में उसने अनेक बार उसे सपनों में देखा था।

"मां!" उसके हाथ चूमते हुए उसने कहा, "तुम मेरे पास

आ गयी। इसका मतलब है कि तुम मुझे समझ गयी और कल मैं हिम्मत के मारे इस शहर पर अधिकार कर लूगा।"

"जिसमे तुम्हारा जन्म हुआ था," मा ने उसे याद दिलाया।

अपनी बहादुरी के कारनामो के नशे मे चूर और अधिक नाम कमाने की लालसा से दीवाना वह जवानी के जोश मे बडी उद्दडता से जवाब देता गया—

"मैं दुनिया में, और दुनिया के लिये पैदा हुआ हू ताकि उसे हैरत में डाल दू। मैं अभी तक सिर्फ तुम्हारी खातिर ही इस शहर पर रहम कर रहा था। वह मेरे पाव मे फास की तरह चुभता है और जैसा कि मैं चाहता हू, मेरे जल्दी से ख्याति के शिखर पर पहुचने में रोडा अटकाता है। लेकिन अब मैं कल ही उन हठधर्मियो का घोसला तहस-नहस कर डालूगा।"

"जहा का हर पत्थर तुम्हे बच्चे के रूप मे जानता है और याद रखता है," मा ने कहा।

"जब तक आदमी उन्हे जबान नहीं देता, पत्थर गूगे बने रहते है। मैं तो यही चाहता हू कि पहाड मेरी दस्तान सुनाये।"

"लेकिन—लोग?" मा ने पूछा।

"अरे हा, मैं उनके बारे मे भूला नही हू, मा! मुझे उनकी भी जरूरत है, क्योकि लोगो की स्मृति मे ही वीर अमर बने रहते है।"

मा बोली—

"वीर तो वह होता है जो मौत का मुह चिढाते हुए जिन्दगी का निर्माण करता है, मौत पर अपनी जीत का झडा गाडता है ."

"जी नहीं!" बेटे ने आपत्ति की। "नगर-नाशक का दर्जा भी नगर-निर्माता के समान ही ऊंचा है। देखो न – हमें यह मालूम नहीं कि एनिअस ने या रोमुलस ने रोम का निर्माण किया, लेकिन हम अलारिक और उन दूसरे वीरों के नाम बिल्कुल अच्छी तरह से जानते हैं जिन्होंने इसे बरबाद किया, इसकी ईंट से ईंट बजा दी..."

"लेकिन जिसका नाम उनके बाद भी बना हुआ है," मां ने याद दिलाया।

सूर्यास्त होने तक वह मां से इसी तरह की बातें करता रहा, मां उसकी बेवकूफ़ी की बातों को अधिकाधिक कम टोकती थी और उसका गर्वीला सिर अधिकाधिक नीचे झुकता जाता था।

मां – निर्माण और रक्षा करती है और उसके सामने नाश की बात करने का मतलब है उसका विरोध करना। लेकिन वह यह नहीं जानता था और उसके जीवन के सार से ही इन्कार कर रहा था।

मां – हमेशा मौत से टक्कर लेती है। लोगों के घरों में मौत लानेवाले हाथ को मातायें सदा नफ़रत और दुश्मनी की नज़र से देखती हैं। किन्तु कीर्ति की भावनाहीन चमक से, जो दिल को भी जड़ कर देती है, चौंधियाया हुआ उसका बेटा यह नहीं देख पाया।

और उसे यह भी मालूम नहीं था कि जब ज़िन्दगी का सवाल सामने होता है, जिसे वह जन्म देती है और जिसकी रक्षा करती है, तो वह किसी दरिन्दे की तरह ही समझदार, बेरहम और निडर भी हो जाती है।

वह सिर झुकाये बैठी थी और मुखिया के शानदार खेमे के खुले भाग में से उसे वह नगर दिखाई दे रहा था, जहां उसने अपने जीवन में पहली बार उस बच्चे के गर्भाधान की मधुर सिहरन और प्रसव-पीड़ा की यातना अनुभव की थी जो अब उसे खण्ड-खण्ड कर देना चाहता था।

सूरज की सुर्ख किरणें नगर की दीवारों और मीनारों को रक्त-रंजित कर रही थीं, खिड़कियों के शीशे अमंगल की सूचना देते हुए चमक रहे थे, सारा नगर लहू-लुहान लग रहा था और सैकड़ों घावों में से जीवन का लाल रस बह रहा था। समय बीतता गया, नगर शव की भांति काला पड़ गया और उसके ऊपर अन्त्येष्टि की बत्तियों की तरह सितारे जगमगा उठे।

मां की नज़रें देख रही थीं उन अन्धेरे घरों को जहां लोग इसलिये बत्तियां जलाते हुए डरते थे कि कहीं दुश्मन का ध्यान आकृष्ट न कर लें, उसकी आंखें देख रही थीं अन्धेरे में डूबी सड़कों-गलियों को, वह अनुभव कर रही थी लाशों की दुर्गन्ध को, वह सुन रही थी मौत का इन्तजार करते लोगों की काना-फूसी को। वह सबको और सभी कुछ को देख रही थी। उसका जाना-पहचाना और प्रिय सभी कुछ उसके निकट और सामने खड़ा था, चुपचाप उसके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था और उसे ऐसे अनुभव हुआ मानो वह नगर के सभी लोगों की मां हो।

पहाड़ों की काली-काली चोटियों से काले-काले बादल घाटी में उतर रहे थे और उस नगर पर, जिसका अन्त निश्चित था पगलाये घोड़ों की तरह झपट रहे थे।

तथा कमजोर हो जाऊंगा और उनकी मौत का बदला भी नहीं ले सकूंगा।"

"तुम सुन्दर, किन्तु बिजली की तरह ऊसर हो," मां ने गहरी सांस छोड़ते हुए कहा।

बेटे ने मुस्कराकर जवाब दिया–

"हां, बिजली की तरह ..."

और मां की गोद में वह बच्चे की तरह सो गया।

तब मां ने उसे अपने काले लबादे में ढककर उसके दिल में खंजर घोंप दिया और वह सिहरकर उसी क्षण इस दुनिया से कूच कर गया। आखिर मां तो यह बहुत अच्छी तरह से जानती थी कि बेटे का दिल कहां धड़कता है। और उसकी लाश को आश्चर्यचकित पहरेदारों के पैरों में लुढ़काकर उसने नगर की ओर देखते हुए कहा–

"मेरे लिये जो कुछ भी सम्भव था, मैंने मातृभूमि के लिये कर दिया। एक मां के नाते मैं बेटे का साथ दूंगी। दूसरे बेटे को जन्म देने की मेरी उम्र नहीं रही, मेरी जान की किसी को ज़रूरत नहीं।"

और उसने बेटे के खून, खुद अपने खून से गर्म उसी खंजर को मजबूत हाथ से अपने सीने में भोंक लिया और इस बार भी उसका वार ठीक दिल पर ही हुआ। बात यह है कि टीसते दिल को जान लेना कुछ मुश्किल नहीं होता।

झींगुर झीं-झीं का राग अलाप रहे थे। ऐसे लग रहा था मानो जैतून के घने पत्तों में धातु के हज़ारों तार खिंचे हुए हैं, हवा कड़े पत्तों को हिलाती-

टुलाती है, वे तारों को छूते हैं और ये अविराम, हल्के स्पर्श द्वारा हवा को उन्मादी, नशीली ध्वनि से ओतप्रोत कर देते है। अभी तो यह मशीन नहीं है, किन्तु ऐसे लगता है कि अदृश्य हाथ सैकड़ों अदृश्य वीणाओं को सुर मे कर रहे है और लगातार बड़ी उत्सुकता से यह प्रतीक्षा बनी रहती है कि पूर्ण निस्तब्धता का क्षण आयेगा और उसके बाद बड़े जोर से सूर्य, आकाश और सागर के स्तुति-गान गूंज उठेंगे।

हवा जोर से चलती है, वृक्ष ऐसे हिलते-डुलते है मानो अपनी फुनगियों को भुलाते हुए पर्वतों से सागर की ओर चले जा रहे हों। लयबद्ध और दबी-घुटी-सी आवाज़ करती हुई लहरें सागर के तटवर्ती पत्थरों से टकरा रही है। सागर मे सजीव और सफेद धब्बे या चित्तियां ही चित्तियां हैं मानो पक्षियों के असंख्य झुण्ड उसकी नीली सतह पर उतर आये हों। ये सभी धब्बे एक ही दिशा मे बहते है, गोता लगाकर गहराई में लुप्त हो जाते है, फिर से प्रकट होते हैं और मुश्किल से सुनाई देनेवाली ध्वनि पैदा करते हैं। और मानो इन्हे अपनी ओर खींचते हुए तीन पालोंवाले दो जहाज, जो खुद भी भूरे पक्षियों जैसे लगते है, क्षितिज पर हिल-डुल रहे हैं। यह सब कुछ वास्तविक जीवन नहीं, बहुत पुराना, अर्ध-विस्मृत स्वप्न जैसा लगता है।

"रात को हवा बहुत तेज हो जायेगी!" गूंजती हुई छोटी-छोटी कर्कड़ियोंवाले छोटे-से तट पर पत्थरों की ओट मे बैठा हुआ बूढ़ा मछुआ कहता है।

ज्वार ने तेज गन्धवाली लाल, सुनहरी और हरी घास को तट पर ला फेंका है, वह धूप और गर्म पत्थरों पर सूख रही है

और मछुओं के रोग यानी गठिया ने उनके हाथों की उंगलियों को टेढ़ा-मेढ़ा कर दिया था।

"यह हवा, जो बड़े प्यार से तट की ओर से हमारी तरफ़ ऐसे बह रही है मानो हमें धीरे से सागर में धकेल रही हो, बड़ी धूर्त और क्रूर है। वहां सागर में वह चुपचाप ही हमारे पास आती है और अचानक हम पर ऐसे झपट पड़ती है मानो हमने किसी तरह से इसका अपमान किया हो। नाव उसी क्षण हवा के साथ उड़ने लगती है कभी उलट ही जाती है और हम अपने को पानी में पाते हैं। यह आन की आन में होता है, हमें भगवान का नाम लेने या कोसने तक की फुरसत नहीं मिलती और हम चक्कर खाते और अपने को तेजी से दूर जाते पाते हैं। कोई डाकू-लुटेरा भी इस हवा से ज्यादा ईमानदार होता है। वैसे भी लोग प्रकृति की अंधी ताकतों से ज्यादा ईमानदार होते हैं।

"हां, तट से केवल चार किलोमीटरों की दूरी पर इसी हवा ने हम पर हल्ला बोल दिया। जैसे कि जाहिर है हम तट के बिल्कुल नजदीक थे। इसने हमला किया एवं कायर और कमीने की तरह।

"'ग्वीदो!' मेरे पिता जी ने टेढ़ी-मेढ़ी उंगलियोंवाले हाथों में डांडों को झपटते हुए कहा। 'सावधान हो जाओ, ग्वीदो! जल्दी से लंगर डालो!'

"लेकिन जब तक मैंने लंगर को उठाया, इसी बीच पिता जी की छाती पर डांड आ लगा—उनके हाथों से डांड गिर गये और वह बेहोश होकर नाव के तल में लुढ़क गये। मेरे पास उनकी

और मछुओं के रोग यानी गठिया ने उनके हाथों की उंगलियों को टेढ़ा-मेढ़ा कर दिया था।

"यह हवा, जो बड़े प्यार से तट की ओर से हमारी तरफ ऐसे बह रही है मानो हमें धीरे से सागर में धकेल रही हो, बड़ी धूर्त और क्रूर है। यहां सागर में वह चुपचाप ही हमारे पास आती है और अचानक हम पर ऐसे झपट पड़ती है मानो हमने किसी तरह से इसका अपमान किया हो। नाव उसी क्षण हवा के साथ उड़ने लगती है, कभी उलट ही जाती है और हम अपने को पानी में पाते हैं। यह आन की आन में होता है, हमें भगवान का नाम लेने या कोसने तक की फुरसत नहीं मिलती और हम चक्कर खाते और अपने को तेजी से दूर जाते पाते हैं। कोई डाकू-लुटेरा भी इस हवा से ज्यादा ईमानदार होता है। वैसे भी लोग प्रकृति की अंधी ताकतों से ज्यादा ईमानदार होते हैं।

"हां, तट से केवल चार किलोमीटरों की दूरी पर इसी हवा ने हम पर हल्ला बोल दिया। जैसे कि जाहिर है हम तट के बिल्कुल नजदीक थे। इसने हमला किया एक कायर और कमीने की तरह।

"'ग्वीदो!' मेरे पिता जी ने टेढ़ी-मेढ़ी उंगलियोंवाले हाथों से डांडों को झपटते हुए कहा। 'सावधान हो जाओ, ग्वीदो! जल्दी से लंगर डालो!'

"लेकिन जब तक मैंने लंगर को उठाया इसी बीच पिता जी की छाती पर डांड आ लगा – उनके हाथों से डांड गिर गये और वह बेहोश होकर नाव के तल में लुढ़क गये। मेरे पास उनकी

मदद करने का वक़्त ही नहीं था, नाव किसी वक़्त भी उलट सकती थी। शुरू में सब कुछ बड़ी तेज़ी से हुआ। जब तक मैंने डांड़ सम्भाले, पानी की फुहारों से घिरे हुए हम बड़ी तेज़ी से कहीं बहे जा रहे थे, हवा लहरों के उछाले से पादरी की तरह हम पर छींटे मार रही थी, छिड़क रही थी, लेकिन पादरी की तुलना में कहीं अधिक ज़ोर से और हमारे पापों को धो डालने के लिये बिल्कुल ऐसा नहीं कर रही थी।

"'यह मामला बड़ा संजीदा है, मेरे बेटे!' पिता जी ने होश में आने पर तट की ओर देखकर कहा। 'बहुत देर चलेगा यह तूफ़ान, मेरे प्यारे!'

"जवानी में हम ख़तरे पर आसानी से यक़ीन नहीं करते। इसलिये मैंने डांड़ चलाने और वह सब कुछ करने की कोशिश की जो ख़तरे की ऐसी घड़ी में करना चाहिये जब यह हवा – ज़ालिम शैतानों की सांस – मेहरबानी करती हुई हमारे लिये हज़ारों क़ब्रें खोद रही हो और मुफ़्त में ही हमारे मरसिये पढ़ रही !

ऊपर उठ जाते। तट हमसे अधिकाधिक दूर भागता जाता था और हमारी नाव की तरह ही नाचता-सा प्रतीत होता था। तब पिता जी मुझसे बोले—

"'तुम तो शायद तट पर लौट जाओ, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाऊंगा! मछलियों और मछुए के काम के बारे में मैं इस वक्त तुमसे जो कुछ कहूंगा, तुम उसे ध्यान से सुनना.'

"और वह मुझे तरह-तरह की मछलियों की आदतों के बारे में, उन्हें कब और कहां ज्यादा अच्छी तरह से पकड़ा जा सकता है, जो कुछ जानते थे, वह सब बताने लगे।

"'पिता जी, शायद यह ज्यादा अच्छा होगा कि हम भगवान का नाम लें?' यह समझ लेने पर कि हमारी हालत बहुत बुरी है, मैंने सुझाव दिया। हम चारों ओर से दांत दिखानेवाले सफेद शिकारी कुत्तों के झुण्ड में घिरे दो खरगोशों के समान थे।

"'भगवान की नजर से कुछ नहीं छिपा!' पिता जी बोले। "उसे मालूम है कि धरती पर रहने के लिये जन्मे ये दो लोग सागर में मौत का सामना कर रहे हैं और उनमें से एक को, जिसे अपने बचने की कोई आशा नहीं, बेटे को वह सभी कुछ बताना चाहिये जो उसे मालूम है। धरती और लोगों को इस काम की जरूरत है—भगवान यह समझता है'

"और काम के बारे में वह जो कुछ जानते थे सब बताने के बाद वह समझाने लगे कि लोगों के साथ किस तरह जीना चाहिये।

"'यह भी कोई शिक्षा देने का वक्त है?' मैंने कहा। 'धरती पर तो आपने कभी ऐसा नहीं किया!

"'धरती पर मैंने मृत्यु को कभी अपने इतने अधिक निकट अनुभव नहीं किया था!'

"हवा दरिन्दे की तरह चीख़-चिल्ला रही थी, लहरें उछल-कूद रही थीं। उनकी बात मुझे सुनाई दे जाये, इसके लिये पिता जी को चिल्लाना पड़ रहा था और वह चिल्लाते थे—

"'हमेशा ऐसा व्यवहार करो कि मानो न तो कोई तुमसे अच्छा है और न ही बुरा—यही सही होगा! कोई रईस हो या मछुआ, पादरी हो या सैनिक—सब एक ही शरीर के अंग हैं और तुम उतने ही ज़रूरी या महत्त्वपूर्ण हो जितने कि दूसरे। किसी आदमी से कोई सम्बन्ध बनाते समय यह नहीं सोचो कि उसमें भलाई से ज्यादा बुराई है। यही सोचो कि उसमें भलाई ज्यादा है और तब ऐसा ही हो भी जायेगा। लोगों से वही मिलता है जो हम उनसे चाहते हैं।'

"जाहिर है कि यह सब एक ही सांस में नहीं कहा गया था, बल्कि अलग-अलग अनुदेशों के रूप में। हमें एक के बाद एक लहर उछालती जा रही थी, और कभी लहरों के नीचे तो कभी उनके ऊपर से, फुहारों के बीच से ही मुझे पिता जी के उक्त शब्द सुनाई देते थे। बहुत-से शब्द मुझ तक पहुंचने से पहले ही हवा उड़ा ले जाती थी, बहुत-से शब्द मैं समझ नहीं पाया। महानुभाव, वह भी कोई समय था शिक्षा देने का जब हर घड़ी मौत सिर पर नाच रही थी। मुझे डर लग रहा था। मैंने सागर को पहली बार ऐसे गुस्से से उफनते देखा था और मैं अपने को उसमें बहुत ही असहाय अनुभव कर रहा था। मेरे लिये यह कहना मुश्किल है कि तब या बाद में इन क्षणों को

याद करने पर मुझे ऐसी अनुभूति हुई जो आज तक मेरे स्मृति-पट पर अंकित है।

"पिता जी को मैं मानो इस समय भी आंखों के सामने जिन्दा देख रहा हूं – वे नाव के तल में गठिया के मारे हाथ फैलाये और उंगलियों से उसके सिरे को थामे बैठे थे। उनका टोप बह गया था, लहरें उनके सिर और कंधों पर कभी दायें तो कभी बायें, कभी पीछे और कभी सामने से झपटती थीं। वह अपना सिर जोर से झटकते थे, फू-फू करते हुए पानी थूकते थे और जब-तब चिल्लाकर कुछ कहते थे। भीगने पर वह छोटे-से हो गये थे और उनकी आंखें डर या दर्द के कारण फैलकर बहुत बड़ी-बड़ी हो गयी थीं। मेरे ख्याल से तो दर्द की वजह से ही।

"'मेरी बात सुनो!' पिता जी चिल्लाते। 'अरे, सुनते हो?'

"कभी-कभी मैं उन्हें जवाब देता –

"'हां, सुन रहा हूं!'

"'याद कर लो कि मानव ही हर अच्छाई का आधार है।'

"'अच्छी बात है!' मैंने जवाब दिया।

"धरती पर उन्होंने मुझसे कभी ऐसी बात नहीं की थी। वह खुशमिजाज और दयालु थे लेकिन मुझे लगता था कि मेरा मजाक-सा उड़ाते और मुझ पर यकीन न करते हुए वह मेरी ओर देखते हैं, मुझे अभी तक बच्चा ही मानते हैं। कभी-कभी मेरे दिल को इससे ठेस लगती – जवान लोगों में भी अपना स्वाभिमान होता है।

सी हुई जाती थी—आंखों और कानों में पानी भरा हुआ था और बहुत-सा निगलना भी पड़ता था।

"यह सब बहुत समय तक, कोई सात घण्टे तक चलता रहा। इसके बाद हवा ने अचानक अपना रुख बदल लिया, बहुत जोर से तट की ओर बहने लगी और हम बड़ी तेजी से तट की ओर जाने लगे। बस, मैं खुश होकर चिल्ला उठा—

"'हिम्मत बनाये रहिये!'

"पिता जी ने भी चिल्लाकर कोई जवाब दिया। एक ही शब्द मेरी समझ में आया—

"'चट्टानें'

"पिता जी तटवर्ती चट्टानों के बारे में सोच रहे थे, वे अभी बहुत दूर थीं और मैंने उनकी बात का विश्वास नहीं किया। लेकिन वह तो सागर को मुझसे ज्यादा अच्छी तरह जानते थे। हम घोंघों की तरह अपनी नाव से चिपके हुए, उससे टकरा-टकराकर बुरी तरह बेहाल, शक्तिहीन और गूंगे-से होकर पानी के पर्वतों के बीच से बड़ी तेजी से बहे जा रहे थे। यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहा, लेकिन जब तट की काली चट्टानें नजर आने लगीं तो सब कुछ ऐसी तेजी से हुआ कि बयान से बाहर। वे डोलती-सी हमारी ओर सरकीं और पानी के ऊपर झुकी तथा मानो हमारे सिरों पर टूट पड़ने को तैयार थीं। सफेद फेनिल लहरों ने लगातार, हमारे शरीरों को उछाला। हमारी नाव जूते की एड़ी के नीचे आकर टूट जानेवाले अखरोट की तरह चरमराई। मैं उससे अलग हो गया, मुझे अपने सामने चट्टान की कटी-फटी काली अन्तड़ियां दिखाई दीं जो छुरे की

बच नही सकेंगे, डरें नही, मुझे, अपने बेटे को भूले नही और जो कुछ वह महत्त्वपूर्ण मानते थे, उसे मुझे बता देने के लिये उन्होंने समय और शक्ति भी खोज निकाली। सड़सठ साल बिता चुका हूं मैं इस दुनिया मे और कह सकता हूं कि मेरे पिता जी ने मुझे जो सीख दी थी, वह बिल्कुल सही है।"

बूढ़े ने अपना बुना हुआ टोपा उतारा जो कभी लाल रंग का रहा होगा, लेकिन अब भूरा लगता था, उसमे से पाइप निकाला और नंगी, कासे के रंग जैसी खोपडी झुकाकर जोर देते हुए कहा—

"प्यारे महानुभाव, सब कुछ बिल्कुल सही है। लोग वैसे ही होते है, जैसा आप उन्हे देखना चाहते है। उन्हे दयालु नजरो से देखिये तो आपका भी भला होगा और उनका भी। ऐसा करने से वे और भी बेहतर हो जायेंगे और आप भी। बडी सीधी-सी बात है यह!"

पवन अधिकाधिक प्रबल, लहरें अधिकाधिक ऊंची, तीखी और फेन के कारण सफेद होती जाती थी। सागर में उभरती फेनिल लहरें तेजी से दूर बहती जा रही थी और तीन पालोंवाले दो जहाज क्षितिज की गहरी नीली रेखा के पीछे गायब भी हो चुके थे।

द्वीप के खड़े तट लहरों के फेन से ढके हुए थे नीला पानी जोर से उछल और खदबदा रहा था तथा झींगुर बड़े उत्साह से और लगातार अपना झीं-झीं का राग अलापते जा रहे थे।

१३

जिस दिन यह घटना घटी, अफ़्रीका से आनेवाली नम, सिरोक्को हवा बह रही थी। बहुत ही ख़राब है यह हवा! यह चिड़चिड़ापन पैदा करती है, मूड बिगाड़ती

है और यही वजह थी कि दो गाड़ीवानों – जुजेप्पे चीरोता और लुईजी मेना में झगड़ा हो गया। झगड़ा अचानक ही शुरू हुआ, यह समझना कठिन था कि पहल किसने की। लोगों ने तो सिर्फ यही देखा कि जुजेप्पे की गर्दन को पकड़ लेने की कोशिश करते हुए लुईजी उसकी छाती पर झपटा और जुजेप्पे ने सिर को कंधों के बीच दुबकाकर अपनी मोटी और लाल गर्दन को छिपा लिया तथा अपने मज़बूत और काले-काले घूंसे दिखाये।

लोगों ने उन्हें फौरन अलग करके पूछा –

"बात क्या है?"

गुस्से से आग-बबूला होते हुए लुईजी चिल्लाया –

"इस साड़ ने मेरी बीवी के बारे में जो कुछ कहा है, उसे सभी के सामने दोहरा दे तो अच्छा हो!"

चीरोता ने यहां से चल देना चाहा, घृणा से मुंह बनाया जिससे उसकी आंखें छिप-सी गयीं और उसने काले बालोंवाला गोल सिर हिलाते हुए बुरे शब्दों को दोहराने से इन्कार कर दिया। तब मेना ने ज़ोर से कहा –

"इसका कहना है कि मेरी बीवी के प्यार की मिठास चख चुका है!"

"ओ-हो!" लोग कह उठे। "यह तो कोई मज़ाक नहीं, गम्भीर मामला है। तुम शान्त हो जाओ, लुईजी! तुम यहां पराये हो, लेकिन तुम्हारी बीवी हम लोगों में से है। हम सभी उसे बचपन से जानते हैं और अगर उसने तुम्हारे साथ कोई ज़्यादती की है तो उसके अपराध की छाया हम पर भी पड़ती है। हम इन्साफ करेंगे!"

नही पहुच जायेगे, वह मेरे यहा रहेगी।

ऐसा ही किया गया। बाद मे कनारीना और हाड़-हड्डीली चुड़ैल ल्युचीया ने, जिसकी कर्कश आवाज तीन मील तक सुनाई देती थी, बेचारे जुजेप्पे को आडे हाथो लिया। उन्होंने उसे बुलाया और उसकी आत्मा को पुराने चिथडे की तरह नोचने लगी।

"तो यह बताओ, भले आदमी, बहुत बार तुम्हे कोनेसा के प्यार की मिठास पाने का मौका मिला?"

मोटे जुजेप्पे ने गाल फुला लिये, कुछ देर सोचा और जवाब दिया –

"एक बार।"

"यह तो तुम सोचे बिना भी कह सकते थे," ल्युचीया ने मुनाकर, लेकिन इस तरह कहा मानो अपने मे ही बात कर रही हो।

"ऐसा शाम को, रात को या सुबह के वक्त हुआ?" कनारीना ने बिल्कुल एक जज की तरह से पूछा।

जुजेप्पे ने सोचे-विचारे बिना ही कह दिया कि शाम को हुआ था।

"*उस वक्त तक रोशनी थी न?*"

"हा," बुद्ध ने जवाब दिया।

"इसका मतलब यह हुआ कि तुमने उसका शरीर देखा था?"

"बेशक देखा था!"

"तो हमे यह बताओ कि वह कैसा है!"

अब उसकी समझ मे आया कि इन सवालो का क्या उद्देश्य था और उस चिडिया की तरह जिसके मुह मे जौ का दाना

जाकोमो फाल्वा ने बहुत समझदारी की बातें कहीं –

"दोस्तो, साथियो, भले लोगो! जब हम अपने प्रति न्याय चाहते हैं तो हमें दूसरों के साथ भी न्याय करना चाहिये। सभी को यह मालूम हो जाना चाहिये कि हम जिस चीज की मांग करते हैं, उसका ऊंचा मूल्य भी जानते हैं और हमारे मालिकों की तरह न्याय हमारे लिये बेमानी शब्द नहीं है। हमारे सामने वह आदमी है जिसने एक नारी की झूठी बदनामी की, अपने साथी का अपमान किया, एक परिवार को बरबाद कर दिया और अपनी पत्नी को जलन तथा लज्जा का शिकार बनाकर दूसरे परिवार में दुख-दर्द लाया। हमें उसके साथ कड़ाई से पेश आना चाहिये। आप लोगों की क्या राय है?"

सहमत आवाजों ने एकसाथ जवाब दिया –

"इसे हमारी बिरादरी से निकाल दिया जाये!"

किन्तु पन्द्रह लोगों को यह दण्ड बहुत कठोर प्रतीत हुआ और उनमें विवाद छिड़ गया। वे गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगे कि एक इन्सान की किस्मत के फैसले का सवाल है और सो भी एक की किस्मत का नहीं। वह शादीशुदा है उसके तीन बच्चे हैं और भला बीबी तथा बच्चों का क्या कुसूर है? उसका अपना घर है, अंगूरों का बगीचा, घोड़ों की जोड़ी और विदेशियों के लिये उसके पास चार गधे भी हैं। यह सब कुछ उसके खून-पसीने उसकी कड़ी मेहनत का फल है। बेचारा जुजेप्पे एक कोने में कुर्सी पर झुका हुआ अकेला बैठा था बच्चों से घिरे हुए शैतान की तरह खिन्न लग रहा था, अपने टोप को हाथों से तोड़ता-मरोड़ता जा रहा था। उसने उसके फीते को तो फाड़ भी डाला

को बहुत कम समझनेवाले जज हमारे बारे में ऐसे अन्दाज में सोच-विचार करते हैं मानो हम तो जंगली और वे नगरवासी तथा मछली के जायके से अनजान फरिश्ते हों और औरतों से उनका कभी कोई वास्ता न रहा हो! हम सीधे-सादे लोग हैं और जीवन के प्रति ऐसा सीधा-सादा ही दृष्टिकोण रखते हैं।

सो यही तय रहा कि जुजेप्पे बीरोंता लुईजी सेता की बीवी और बच्चे का भरण-पोषण करेगा। लेकिन मामला इसी तरह से खत्म नहीं हुआ। लुईजी को जब यह पता चला कि बीरोंता ने जो कुछ कहा था, वह झूठ था, कि उसकी बीवी बिल्कुल निर्दोष है तथा उसे हमारे निर्णय की भी सूचना मिली है तो उसने अपनी पत्नी को छोटा-सा निम्न पत्र लिखकर अपने पास आने को कहा –

"तुम मेरे पास लौट आओ और हम फिर से सुखी जीवन बितायेंगे। उस आदमी से फूटी कौड़ी भी न लेना और अगर ले चुकी हो तो उसके मुंह पर दे मारो! तुम्हारे सामने मैं भी निरपराध हूं, क्योंकि कभी सोच तक नहीं सकता था कि कोई आदमी प्यार-मुहब्बत के मामले में भी ऐसा झूठ बोल सकता है!"

बीरोंता को उसने दूसरा ही पत्र लिखा –

"मेरे तीन भाई हैं और हम चारों ने यह कसम खाई है कि अगर तुमने द्वीप छोड़कर कभी सोरेन्टो कास्तेल्लामारे तोर्रे या किसी दूसरी जगह पर जाने की हिम्मत की तो हम भेड़ की तरह तुम्हें हलाल कर डालेंगे। जैसे ही पता चलेगा, वैसे ही तुम्हारी गर्दन उड़ जायेगी, यह याद रखना! यह वैसी

ही सचाई है जैसी यह कि तुम्हारी बिरादरी के लोग भले और ईमानदार हैं। मेरी बीवी को तुम्हारी मदद की कोई जरूरत नहीं। मेरा सूअर तक तुम्हारी रोटी को क़बूल नहीं करेगा। तब तक इस द्वीप पर ही रहो, जब तक मैं यह न कह दूं कि तुम कहीं और जा सकते हो!"

सुनने में आया है मानो चीरोत्ता हमारे जज के पास उक्त पत्र लेकर गया और यह पूछा—क्या ऐसी धमकी देने के लिये लुईजी पर मुक़दमा नहीं चलाया जा सकता? जज ने मानो उसे यह जवाब दिया—

"बेशक ऐसा किया जा सकता है, लेकिन तब उसके भाई तो आपको हलाल कर ही डालेंगे—यहां आकर मार डालेंगे। मैं तो यही सलाह देता हूं कि आप कुछ सब्र से काम लें! यही बेहतर होगा। गुस्सा तो मुहब्बत नहीं होता, बहुत समय तक बना नहीं रह सकता..."

जज ने उसे ऐसा ही जवाब दिया हो, यह सम्भव है। वह बहुत दयालु, बहुत समझदार आदमी है और कविताएं भी अच्छी रचता है, लेकिन मैं यह नहीं मानता कि चीरोत्ता ने उसके पास जाकर उसे यह पत्र दिखाया था। कुछ भी हो, चीरोत्ता फिर भी ढंग का व्यक्ति है, इस तरह की एक अन्य अटपटी हरकत वह नहीं कर सकता था। ऐसा करने पर उसकी खिल्ली उड़ती।

महानुभव, हम तो सीधे-सादे मजदूर लोग हैं, हमारी अपनी ही जिन्दगी है, उसके बारे में अपनी ही समझ और विचार हैं तथा हमें इस बात का अधिकार है कि जैसे चाहें और अपने लिये जैसे बेहतर समझें, वैसे ही उसका निर्माण करें।

आप पूछ रहे है कि क्या हम समाजवादी है? मेरे दोस्त, मेरी अक़्ल तो यही कहती है कि मज़दूर आदमी तो समाजवादी ही पैदा होता है। बेशक हम किताबे नही पढ़ते, लेकिन फिर भी सचाई को पहचानने मे भूल नही करते, क्योकि सचाई की गंध बड़ी तीखी होती है और उसमे हमेशा मेहनत के पसीने की गंध बसी रहती है।

अंगूरों के पुराने वगीचे का घना अंगूर लताओं के वीच छिपी-सी सफ़ेद केन्टीन के दरवाज़े के पास, हरिणपदी तथा छोटे-छोटे चीनी गुलावों से जहां-तहां गुंथी

इन्हीं लताओं के चदवे के नीचे शराब की सुराही सामने रखे हुए दो आदमी मेज पर बैठे हैं। इनमे से एक है रसमाज विनेंत्सो और दूसरा है फिटर जियोवान्नी। रसमाज नाटा-सा, दुबला-पतला और काले बालोवाला है। उसकी काली आखो मे स्वप्न-दर्शी की चिन्तनशील हल्की-हल्की मुस्कान की चमक है। यद्यपि उसने ऊपरवाले होठ और गालो की इतनी कसकर हजामत बनायी है कि वे नीले-से हो गये है, तथापि मुक्त मुस्कान के कारण उसका चेहरा बच्चो जैसा और भोला-भाला प्रतीत होता है। उसका मुह लड़की जैसा छोटा-सा और सुन्दर है, कलाइया लम्बी-लम्बी हैं, गुलाब के सुनहरे फूल को वह अपनी चचल-चपल उगलियो मे घुमा रहा है और फिर उसे अपने फूले-फूले होठो के साथ सटाकर आखे मूद लेता है।

"हो सकता है – मुझे मालूम नही – हो सकता है!" कनपटियो पर दबे-से सिर को धीरे-धीरे हिलाते हुए वह कहता है और उसके चौडे माथे पर सलछौही केश-कुण्डल लटक आते हैं।

"हा, हा, ऐसा ही है। हम उत्तर की ओर जितना अधिक बढते जाते है, उतने ही ज्यादा धुन के पक्के लोग हमे मिलते है!" बड़े सिर, चौड़े-चकले कधो और काले घुघराले बालो-वाला जियोवान्नी दृढतापूर्वक अपनी बात कहता है। उसका चेहरा तावे जैसी लालिमा लिये हुए है, उसकी नाक धूप मे जली हुई है और उस पर मुरझायी-सी सफेद झिल्ली चढी हुई है। उसकी आखे बैल की आखो की तरह बडी-बडी और दयालु है और बाये हाथ का अगूठा गायब है। उसका बोलने का ढग भी मशीनी तेल और लोहे के बुरादे मे सने हाथो की

रंग पीला पड़ गया, वह दुबला गया और वह बार-बार यह कहता रहता था –

"'बड़ी अटपटी स्थिति है, मेरे प्यारे! बेड़ा गर्क, लेकिन लगता यही है कि हमें गोलियां चलानी पड़ेंगी।'

"उसकी ऐसी बड़बड़ाहट से हम और भी घबरा गये। और इसी बीच हर कोने, हर टीले और पेड़ के पीछे से अड़ियल-जिद्दी किसानों के चेहरे दिखाई देते थे, उनकी गुस्से से जलती आंखें हमें चुभती-सी प्रतीत होतीं। जाहिर है कि वे लोग हमें दुश्मन की नज़र से देखते थे।"

"पियो!" नाटे विचेल्लो ने शराब से भरा हुआ गिलास अपने मित्र की तरफ स्नेहपूर्वक बढ़ाते हुए कहा।

"शुक्रिया, और जिन्दाबाद धुन के पक्के लोग!" पिएर ने एक ही सांस में गिलास खाली कर दिया, हथेली से मूंछें पोंछीं और कहानी को आगे कहता चला गया –

"एक दिन मैं जैतून के पेड़ों के झुरमुट के पास खड़ा हुआ पेड़ों की रखवाली कर रहा था। बात यह थी कि किसान पेड़ों को भी नहीं बख्शते थे। टीले के नीचे दो किसान – एक बूढ़ा और दूसरा छोकरा-सा काम कर रहे थे, धरती गोड़ रहे थे। बेहद गर्मी थी, सूरज आग बरसा रहा था, यही मन होता था कि आदमी मछली बन जाये! मुझे बड़ी ऊब महसूस हो रही थी और अभी तक याद है कि बहुत ही गुस्से से मैं इन लोगों की तरफ देखता रहा था। दोपहर होने पर इन्होंने काम बन्द किया, डबल रोटी, पनीर और शराब से भरी सुराही निकाली। तुम पर शैतान की मार – मैंने सोचा। अचानक क्या हुआ कि बूढ़े

आकर लगी। वह तो बहुत जोर से नहीं लगी, लेकिन दूसरी टाइल इतने जोर से कंधे पर आकर गिरी कि मेरा बायां हाथ सुन्न हो गया।"

फिटर खूब मुह खोलकर और आखे सिकोड़कर जोर से हंस पड़ा।

"उन दिनो वहा टाइलो, पत्थरो और लाठियों में भी मानो जान आ गयी थी," उसने हंसते हुए ही कहा, "इन बेजान चीजों ने भी हमारे सिरो को काफी बड़े-बड़े गुमटों से शोभा बढ़ा दी थी। होता क्या था कि कोई सैनिक चला जा रहा है या वहीं खड़ा है, अचानक जमीन फाड़कर कोई लाठी उस पर बरस पड़ती या फिर आसमान से कोई पत्थर उस पर आ गिरता। जाहिर है कि हम खूब जल-भुन गये थे।'

लाटे रगमाउ की आखों में उदासी झलक उठी उसका चेहरा फक हो गया और उसने धीमे-से कहा—

"ऐसी बाते सुनकर हमेशा शर्म महसूस होती है "

"लेकिन किया क्या जाये! लोगो को अक्ल भी बहुत धीरे-धीरे आती है न! तो आगे सुनो—मैंने मदद के लिये चीख-पुकार की। मुझे एक ऐसे घर में ले जाया गया जहा हमारा एक अन्य सैनिक पहले से ही लेटा हुआ था। पत्थर लगने से उसका चेहरा घायल हो गया था। जब मैंने उससे पूछा कि यह कैसे हुआ तो उसने मरे-मरे ढग से हंसते हुए जवाब दिया—

"'मार्था, सफेद झोटेवाली एक चुड़ैल बुढ़िया ने पत्थर दे मारा', और फिर बोली—'मुझे मार डालो।

जाते हुए फ्रांसीसी भाषा में, जो मैं बहुत अच्छी तरह समझता हू, यह कह रही थी –

"'आप लोगों ने ध्यान दिया कि उसकी आंखे कैसी है? स्पष्ट है कि वह भी किसान है और सैन्य-सेवा खत्म होने पर हमारे यहा के अन्य सभी किसानो की तरह शायद वह भी समाजवादी बन जायेगा। और ऐसी आखोवाले लोग सारी दुनिया को जीत लेना चाहते हैं, जीवन को बिल्कुल नया रग-रूप देना चाहते हैं, हमें कही खदेड देना, नष्ट कर देना चाहते हैं और वह इसलिये कि किसी अधे और ऊबभरे न्याय की जीत का डका बज जाये!'

"'बुद्धू लोग हैं,' डाक्टर ने राय जाहिर की, 'कुछ-कुछ बच्चे, कुछ-कुछ जानवर।'

"'जानवर हैं – यह तो सही है। लेकिन उनमे बच्चो जैसा क्या है?'

"'सभी की समानता के ये सपने '

"'जरा सोचिये तो – मैं समान हू बैल जैसी आखोवाले इस नौजवान या परिन्दे जैसे चेहरेवाले उस दूसरे नौजवान के। या फिर हम सभी – आप, मै और यह – हम समान हैं इन घटिया सूरतवालो के! जिन लोगों को अपने जैसों की पिटाई का काम सौपा जा सकता है, वे उन्ही की तरह जानवर है '

"वह बहुत जोश मे बहुत कुछ कहती गयी और मैं सुनता हुआ सोचता रहा – 'अरे वाह, देवी जी!' मैंने उसे कई बार पहले भी देखा था और बेशक तुम तो यह जानते ही हो कि शायद ही कोई सैनिक की तरह औरत के सपने देखता हो। जाहिर

"नहीं, हम यह नहीं भूले थे। लेकिन हममें से बहुतों ने, सच कहा जाये, तो लगभग सभी ने अपने कान बन्द कर लिये, आंखें मूंद लीं और हमारे किसान दोस्तों ने हमारे इस तरह अंधे-बहरे हो जाने का खूब अच्छा फायदा उठाया। उन्होंने बाज़ी जीत ली। बहुत ही अच्छी तरह से पेश आते थे वे हमारे साथ। वह सुनहरे बालोंवाली सुन्दरी उनसे बहुत कुछ सीख सकती थी। उदाहरण के लिये वे उसे बहुत ही अच्छी तरह से यह सिखा सकते थे कि सच्चे और ईमानदार लोगों का कैसे आदर किया जाना चाहिये। जहां हम खून बहाने के इरादे से गये थे, वहीं से जब विदा हुए तो हममें से बहुतों को फूल भेंट किये गये। जब हम गांव की सड़कों पर से गुज़रते तो अब हम पर पत्थर और टाइलें नहीं, बल्कि फूल बरसाये जाते थे, मेरे दोस्त। मेरे ख्याल में हम इसके लायक थे। मधुर विदाई को याद करते हुए बुरे स्वागत को भुलाया जा सकता है!"

वह हंस पड़ा और फिर बोला –

"तुम्हें यह सब कुछ कविता में बयान करना चाहिये, चिचेल्लो . "

रगमाज ने सोचभरी मुस्कान के साथ उत्तर दिया –

"हां, लम्बी कविता के लिये यह अच्छी सामग्री है। मुझे लगता है कि मैं ऐसा कर पाऊंगा। पच्चीस बरस की उम्र पार कर लेने के बाद आदमी अच्छे प्रेम-गीत नहीं लिख पाता।"

मुरझा चुके फूल को फेंककर उसने दूसरा फूल तोड़ लिया और सभी ओर नजर दौड़ाकर धीरे-धीरे कहता गया –

"मां की छाती से प्रेमिका की छाती तक का रास्ता तय

10*

दोनों बहुत देर तक खामोश रहे, रसमाज सिर झुकाये हुए जमीन को ताकता रहा, हट्टा-कट्टा और लम्बा-तड़ंगा पिटर मुस्कराया और बोला –

"सभी चीज़ों को सुन्दर अभिव्यक्ति दी जा सकती है, किन्तु अच्छे व्यक्ति, अच्छे लोगों के बारे में सुन्दर शब्दों, सुन्दर गीतों से बढ़कर कुछ भी नहीं!"

की भूरी टाइलों और मेजों के सफेद मेजपोशों पर परछाइयों की बड़ी अजीब-अजीब-सी आकृतियां बनी हुई हैं और ऐसे लगता है कि उन्हें देर तक देखते रहने पर कविता की भांति पढ़ना और यह समझ पाना सम्भव होगा कि उनमें क्या कुछ कहा गया है। अंगूरों के गुच्छे धूप में मोतियों या धुंधली आभावाले अजीब-से ओलिवीन रत्नों की भांति चमक रहे हैं और मेज पर रखी सुराही के पानी में आसमानी रंग के हीरे चमचमा रहे हैं।

मेजों के बीच की जगह पर एक छोटा-सा, रेशमी रूमाल पड़ा हुआ है। निश्चय ही वह किसी महिला के हाथ से गिर गया है और वह अप्सरा जैसी सुन्दर है। इससे भिन्न तो कुछ हो ही नहीं सकता, उष्णता के काव्य से पगे इस शान्त दिन में कुछ और तो सोचा ही नहीं जा सकता। ऐसे दिन में, जब हर मामूली और ऊबभरी चीज अदृश्य हो जाती है, मानो अपने आप से लज्जित होती हुई सूर्य के सामने से लुप्त हो जाती है।

गहरी निस्तब्धता है। केवल उपवन में पक्षी चहचहा रहे हैं, फूलों पर मधु-मक्खियां गुंजार कर रही हैं और कहीं पहाड़ों पर से, अंगूर-बगीचों के बीच से गाने की धीमी-धीमी आवाज सुनाई दे रही है। गाना एक पुरुष और एक नारी की दो आवाजों में गाया जा रहा है। क्षण भर की चुप्पी गाने की हर कड़ी को दूसरी से अलग कर देती है, यह इस गीत को विशेष अभिव्यक्ति प्रदान करती है, उसे उपासनागीत-सा बना देती है।

लीजिये, संगमरमर की चौड़ी सीढ़ियां चढ़कर महिला धीरे-धीरे बाग में से बाहर आती है। ढल चुकी उम्र, बहुत ऊंचा कद, सांवला कठोर चेहरा, तनी और चढ़ी हुई भौंहें, कसकर

जल्दी और कठिनाई से सांस लेता है, उसकी नाक फरफराती है, लेकिन मूंछ नहीं हिलती। वह छोटी-छोटी टांगों को भद्दे ढंग से घसीटते हुए चलता है, उसकी बड़ी-बड़ी आंखें उदासी से धरती को ताक रही है। इस छोटे-से शरीर पर बहुत-सी बड़ी-बड़ी यानी मूल्यवान वस्तुएं हैं—बायें हाथ की अनामिका में सोने की बहुत बड़ी जड़ाऊ अंगूठी है, घड़ी की जंजीर का काम देनेवाले काले फीते के सिरे पर दो लाल जड़ा हुआ सोने का बहुत बड़ा तमगा-सा है और नीली टाई में बहुत बड़ा अमंगलकारी दूधिया रत्न लगा हुआ है।

तीसरी आकृति भी धीरे-धीरे बरामदे में प्रवेश करती है। यह भी बुढ़िया है, नाटी और गोल-मटोल, लाल-लाल दयालु चेहरा, साहसपूर्ण आंखें—शायद वह बड़ी जिन्दादिल और बातूनी है।

बरामदे को लांघकर तीनों होटल के दरवाजे की तरफ बढ़ते है—होगार्ट के चित्र की आकृतियों की तरह बदसूरत, दुखी, हास्यजनक और इस धरती की हर चीज से अजनबी और पराये। ऐसे लगता है कि इन्हें देखकर सभी कुछ आभाहीन, कान्तिहीन हो जायेगा।

दोनों व्यक्ति हालैंड के रहनेवाले हैं—भाई और बहन। वे हीरों के व्यापारी और बैंकर पिता की सन्तानें हैं। इनके बारे में लोग मजाक में जो कुछ कहते है अगर उस सब पर विश्वास कर लिया जाये तो कहना होगा कि बड़ी ही अजीब दास्तान है इनकी जिन्दगी की।

कुबड़ा बचपन मे गुमसुम, अपने में सिमटा-सिमटाया और विचारों में डूबा-डूबा-सा रहता था। खिलौने उसे पसन्द नहीं

थे। वहन के अतिरिक्त अन्य किसी ने इस वात की ओर कोई विशेप ध्यान नहीं दिया। माता-पिता का ख़्याल था कि क़िस्मत के मारे को ऐसा ही होना चाहिये, किन्तु भाई के स्वभाव से वहन के मन में, जो उससे चार साल वड़ी थी, चिन्ता की भावनाएं पैदा होने लगीं।

वह लगभग सारा दिन ही उसके साथ विताती, उसमें हर तरह से सजीवता लाने और उसे हंसाने का प्रयास करती, उसे खिलौने ला देती। वह उन्हें एक के ऊपर एक टिकाकर पिरामिड-सा वना देता। वह कभी-कभार ही मुस्कराता और सो भी मन मारकर तथा औरों की भांति वहन को भी वड़ी-वड़ी आंखों की, जो किसी चीज से चौंधियाई-सी लगतीं, वुझी-वुझी नजर से देखता। इस नजर से वहन का मन खीझ उठता।

"खबरदार जो ऐसे देखा, तुम वड़े होकर उल्लू वन जाओगे!" वह पाव पटकते हुए चिल्लाती, उसे चुटकियां काटती और मारती-पीटती। कुवड़ा लड़का लम्वी-लम्वी वांहों को ऊपर उठाकर अपना सिर वचाता, ठुनठुनाता, लेकिन न तो कभी वहन से दूर भागता और न ही उसकी पिटाई की शिकायत करता।

वाद में, जव वहन को ऐसा लगा कि खुद उसे जो कुछ पूरी तरह स्पष्ट था, उसे अव उसका भाई भी समझ सकता है तो वह समझाने-वुझाने लगी –

"अगर तुम वदसूरत हो तो तुम्हें समझदार होना चाहिये। नही तो सभी को – माता-पिता को भी तुम्हारे कारण शर्म आयेगी। और तो और, नौकरों-चाकरों को भी शर्म आयेगी कि ऐसे अमीर घर में एक छोटा-सा कुरूप प्राणी है। अमीर घर में सभी कुछ

सुन्दर या बुद्धिमत्तापूर्ण होना चाहिये – समझे न?"

"हां," वह अपने बड़े-से सिर को एक ओर झुकाकर तथा निर्जीव आंखों की बुझी-बुझी नजर से बहन के चेहरे को ताकता हुआ उत्तर देता।

भाई के प्रति बहन के ऐसे चिन्तापूर्ण व्यवहार से माता-पिता मुग्ध होते, बेटे के सामने ही उसके दयालु हृदय की प्रशंसा करते और धीरे-धीरे वह कुबड़े की अन्तरंग साथी मानी जाने लगी। वह भाई को खिलौने खेलना सिखाती, पाठ तैयार करने में उसकी मदद करती और उसे राजकुमारों तथा परियों की कहानियां पढ़कर सुनाती।

लेकिन वह पहले की तरह ही खिलौनों के ऊंचे-ऊंचे ढेर लगा देता मानो किसी विशेष ऊंचाई तक पहुंचना चाहता हो। पढ़ने में उसका मन न लगता, वह उसकी ओर बहुत कम ध्यान देता और केवल किस्से-कहानियों के चमत्कारों-अजूबों से ही उसके होंठों पर सहमी-सहमी मुस्कान आती। एक दिन उसने बहन से पूछा –

"राजकुमार कुबड़े होते हैं?"

"नहीं।"

"और योद्धा-सूरमा?"

"निश्चय ही नहीं।"

लड़के ने मानो थकान अनुभव करते हुए आह भरी। बहन ने उसके मस्त बालों पर हाथ रखकर कहा –

"लेकिन समझदार जादूगर हमेशा कुबड़े होते हैं।"

"मतलब यह कि मैं जादूगर बनूंगा," लड़के ने विनम्रता से

कहा और कुछ देर सोचकर इतना और पूछ लिया—

"परियां क्या हमेशा सुन्दर होती हैं?"

"हमेशा।"

"तुम्हारी तरह?"

"शायद। मेरे ख्याल में तो मुझसे भी अधिक सुन्दर," लड़की ने ईमानदारी से कहा।

भाई के आठ साल का हो जाने पर बहन का इस बात की ओर ध्यान गया कि सैर के वक्त वे जब भी निर्मित हो रहे मकानों के पास से गुजरते हैं तो उसके भाई के चेहरे पर हैरानी का भाव आ जाता है, वह देर तक और टकटकी बांधकर यह देखता रहता है कि लोग वहां कैसे काम करते हैं और फिर अपनी मूक आंखों को उसके चेहरे पर प्रश्नपूर्वक गड़ा देता है।

"तुम्हें यह अच्छा लगता है?" बहन ने एक बार पूछा।

"हां," भाई ने संक्षिप्त जवाब दिया।

"भला क्यों?"

"मुझे मालूम नहीं।"

लेकिन एक दिन उसने अपने विचारों को व्यक्त किया—

"ऐसे छोटे-छोटे लोग और ये ईंटें—मगर बाद में इतने बड़े-बड़े मकान। क्या सारा शहर ऐसे ही बना है?"

"हां, बिल्कुल ऐसे ही।"

"और हमारा घर भी?"

"बेशक।"

भाई की तरफ गौर से देखते हुए बहन ने दृढ़ता से कहा—

"तुम प्रसिद्ध वास्तुकार बनोगे, समझे!"

उसे लकडी के बहुत-से खण्ड खरीद दिये गये और इन खण्ड से उसमें निर्माण-कार्य की अत्यधिक तीव्र चाह ने धनक खोल ली। अपने कमरे के फर्श पर बैठा हुआ वह चुपचाप सारा-सारा दिन ऊंची-ऊंची मीनारें बनाता रहता जो धडाम से गिर पड़तीं। वह उन्हें फिर से बनाता। उसके लिये यह काम ऐसी आवश्यकता बन गया कि खाने की मेज़ पर भी वह छुरियों-कांटों और नेप्किनों के छल्लों से कुछ न कुछ बनाने का प्रयास करता। उसकी आंखों में एकाग्रता और पैनापन आ गया, उसके हाथों में जीवन का सचार हो गया, वे लगातार कुछ न कुछ करते रहते और सामने आ जानेवाली हर चीज की उगलियों से जाच-पडताल करते।

अब शहर का चक्कर लगाते वक्त वह नये बनते मकानों के सामने यह देखते हुए घण्टों खडा रह सकता था कि कैसे धीरे-धीरे वे बडे होते हुए आकाश की ओर उठते चले जाते हैं। ईंटों की धूल और बुदबुदाते चूने की गध से उसके नथुने फरकने लगते, आंखें स्वप्निल-सी हो जाती, उन पर गहरे चिन्तन की भिल्ली-सी छा जाती और जब उससे यह कहा जाता कि सडक पर ऐसे खडे रहना शिष्टता के अनुरूप नहीं तो वह इस बात पर कान न देता।

"आओ चलें!" बहन उसका हाथ झटककर मानो उसको सोते से जगाती।

वह सिर झुकाकर चल देता, लेकिन लगातार मुड़मुड़कर देखता जाता।

"तुम वास्तुकार बनोगे न?" बहन उसके मन में इस भावना को दृढ करती हुई पूछती।

"शायद तुम दोनों की बात नहीं है," पिता सहमत होते हुए बोले।

"जरा देखो तो, कितनी समझदार है.."

कुबड़ा लौटा और उसने दरवाजे के पास खड़े होकर कहा—

"मैं भी तो मूर्ख नहीं हूं.."

"यह तो वक्त बतायेगा," पिता ने कहा और मां ने टिप्पणी की:

"कोई भी तो तुम्हें मूर्ख नहीं समझता .."

"तुम घर पर पढ़ोगे," बहन ने उसे अपने पास बिठाते हुए एलान किया। वास्तुकार बनने के लिये जो कुछ जरूरी है, तुम्हें उस सबकी शिक्षा दी जायेगी। तुम्हें यह पसन्द है न?"

"हां। तुम देखोगी।"

"क्या देखूंगी मैं?"

"कि मुझे क्या पसन्द है।"

भाई की तुलना में बहन कोई बालिश्त भर लम्बी थी, लेकिन माता-पिता सहित सभी पर उसकी धाक जमी हुई थी। उस समय उसकी आयु पन्द्रह वर्ष थी। भाई केकड़े जैसा लगता था और छरहरी, सुघड़-सुडौल और तगड़ी बहन उसे परी जैसी लगती जिसने सारे घर को, खुद उस छोटे-से बुबड़े को भी अपने जादू-टोने में बांध रखा था।

और अब बड़े शिष्ट और भावनाहीन-से लोग घर में आने लगे, वे उसे कुछ समझाते, कुछ पूछते और वह उदासीनता से उनके सामने यह स्वीकार कर लेता कि पढ़ाई उसकी समझ में नहीं आती। वह अपने ही विचारों में डूबा और अध्यापकों की

अवहेलना करता हुआ उदास भाव से कहीं देखता रहता। सभी को यह स्पष्ट था कि उसके विचार किसी अनूठी दुनिया में खोये रहते हैं। वह वहुत कम बोलता, लेकिन कभी-कभी वड़े अजीव सवाल पूछ लेता—

"जो कुछ भी नहीं करना चाहते, उनका क्या होता है?"

वन्द गले का काला कोट पहने और एकसाथ ही पादरी तथा फ़ौजी जैसा लगनेवाले शिष्ट अध्यापक ने जवाव दिया—

"ऐसे लोगों के साथ ऐसी वुरी से वुरी वात हो सकती है, जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं। मिसाल के तौर पर उनमें से अनेक समाजवादी वन जाते हैं।"

"धन्यवाद!" कुवड़े ने कहा। अध्यापकों के साथ वह वयस्कों की भांति धीर-गम्भीर व्यवहार करता। "और समाजवादी क्या होता है?"

"वहुत हुआ तो सपने देखनेवाला और काहिल। लेकिन आम तौर पर मानसिक दृष्टि से लुंज-पुंज होता है, भगवान, सम्पत्ति और राष्ट्र-जाति की उसे कल्पना तक नहीं होती।"

अध्यापकगण हमेशा ही उसे छोटा-सा जवाव देते और उनके जवाव उसके स्मृति-पट पर सड़क के पत्थरों की तरह दृढ़ता से जम जाते।

"कोई वुढ़िया भी मानसिक दृष्टि से लुंज हो सकती है?"

"ओह निश्चय ही, उनमें भी..."

"कोई वालिका भी?"

"हां, वह भी। ऐसा तो आदमी जन्मजात ही होता है..."

कुवड़े के वारे में अध्यापकगण की यह राय थी—

' गणित में वह होशियार नहीं है, किन्तु नैतिकता के प्रश्नों में उसकी बड़ी रुचि है "

"तुम बहुत ज्यादा बोलते हो," अध्यापकों के साथ उसकी बातचीत के बारे में जानकर बहन ने उससे कहा।

"वे मुझसे भी ज्यादा बोलते हैं।"

"तुम भगवान का नाम भी बहुत कम लेते हो "

"वह मेरा कूबड़ तो ठीक करने से रहा "

"अच्छा, तो तुम अब इस तरह से सोचने लगे हो!" यह हैरान होकर चिल्ला पड़ी और उसने यह घोषणा की –

"यह सब तो मैं तुम्हें माफ करती हूं, लेकिन इस तरह की सभी बातें तुम अपने दिमाग से निकाल दो! सुना, तुमने?"

"हां।"

बहन उम्र के मुताबिक लम्बा फ्रॉक पहनने लगी थी और भाई तेरह साल का हो गया था।

इस समय से बहन को अक्सर कोई न कोई कटु अनुभव होता। जब कभी वह भाई के कमरे में जाती, हर बार ही उसके पैरों के पास लकड़ी के टुकड़े, तख्ते, औजार आ गिरते, इनसे उसके कन्धे, सिर या उंगलियों पर चोट लग जाती। कुबड़ा हमेशा ही चिल्लाकर उसे चेतावनी देता –

"ध्यान से!"

लेकिन हर बार ही उसे चेतावनी देने में देर हो जाती और बहन को चोट का दर्द सहन करना पड़ता।

एक बार वह लंगड़ाती, दर्द से पीली और गुस्से से उबलती हुई झपटकर उसके पास गयी और चीखकर बोली –

और मा बेटी को बाहों में भरकर बेटे से पूछती –
"तुम समझते हो न कि यह तुम्हारे लिये कितना कुछ कर रही है?"
"हां," कुबड़ा जवाब देता।
चूहेदानी बना लेने के बाद उसने बहन को अपने पास बुलाया, और उसे अटपटा-सा ढांचा दिखाते हुए बोला –
"यह कोई खिलौना नहीं है। इसका तो पेटेंट भी लिया जा सकता है। देखो तो कितनी सीधी-सादी और जानदार चीज़ है। तुम इसे यहां छुओ तो।"
लड़की ने उसे छुआ, कोई चीज़ खट की आवाज़ करते हुए बन्द हो गयी और वह ज़ोर से चिल्ला उठी। कुबड़ा उसके इर्द-गिर्द उछलता-कूदता हुआ बुदबुदाता रहा –
"ओह, नहीं, उस हाथ से नहीं "
मां भागती हुई आयी, नौकर-चाकर आ गये। चूहेदानी को तोड़कर लड़की की कुचली हुई और नीली पड़ गयी उंगली को मुक्त किया गया और बेहोशी की हालत में उसे वहां से ले जाया गया।
शाम को बहन ने उसे अपने पास बुलवा भेजा और पूछा –
"तुमने जान-बूझकर ऐसा किया, तुम मुझसे नफ़रत करते हो। मगर क्यों?"
अपना कूबड़ हिलाते हुए उसने धीमे और शान्त भाव से जवाब दिया –
"बात यह है कि तुमने उसे ठीक हाथ से नहीं छुआ था।"
"तुम झूठ बोल रहे हो!"

"लेकिन – किसलिये मैं तुम्हारे हाथ को बिगाड़ूंगा? फिर यह तो वह हाथ भी नहीं है जिससे तुमने मेरे मुंह पर थप्पड़ मारा था..."

"अरे भोंडे, यह याद रखना कि तुम मुझसे ज़्यादा अक्ल नहीं रखते हो!.."

उसने सहमत होते हुए जवाब दिया –

"मैं जानता हूं।"

उसका भद्दा-सा चेहरा सदा की भांति शान्त था, आंखों में एकाग्रता थी और यह विश्वास करना कठिन था कि वह गुस्सैल है और झूठ बोल सकता है।

इस घटना के बाद बहन ने पहले की तरह उसके कमरे में अक्सर आना बन्द कर दिया। रंग-बिरंगे फ़्रॉक पहने हुए उसकी सहेलियां, हो-हल्ला करनेवाली लड़कियां उसके पास आतीं, बड़े-बड़े, कुछ-कुछ ठण्डे और उदास कमरों में खूब दौड़तीं और उनके आने से चित्रों, मूर्त्तियों, फूल-पौधों और मुलम्मा की हुई चीज़ों में भी कुछ ज़िन्दगी-सी आ जाती। कभी-कभी उन्हें साथ ..र बहन उसके कमरे में आती। लड़कियां गुलाबी नाख़ूनोंवाली ..ाटी छोटी उंगलियों को रस्मी तौर पर उसकी तरफ़ बढ़ा देतीं और ऐसे सावधानी से उससे हाथ मिलातीं मानो डरती हों कि उसे तोड़ ही न डालें। उसके साथ वे बहुत नम्रता से और स्नेहपूर्वक बातचीत करतीं और औज़ारों, खाकों, लकड़ी के टुकड़ों तथा छीलन से घिरे हुए कुबड़े को हैरानी से, किन्तु दिलचस्पी के बिना देखतीं। उसे मालूम था कि सभी लड़कियां उसे "आविष्कारक" कहती हैं, क्योंकि बहन ने उनके दिमाग़

में यह बात डाल दी थी, और भविष्य में उससे कुछ ऐसी आशा की जाती थी जिससे उसके पिता का नाम रोशन हो जायेगा। बहन बड़े विश्वास से ऐसा कहती रहती थी।

"बेशक वह सुन्दर नहीं, लेकिन बड़ा समझदार है," वह अक्सर यह कहती।

बहन उन्नीस बरस की हो चुकी थी, उसका मंगेतर भी था और तभी एक विहार-नौका में सैर करते हुए माता-पिता की जान चली गयी। एक अमरीकी माल-जहाज के नशे में धुत्त चालक ने जहाज को नाव से टकराकर खण्ड-खण्ड कर डाला और डुबो दिया। लड़की को भी इस नौका-विहार के लिये जाना था, लेकिन अचानक उसके दांतों में दर्द हो गया और वह घर पर ही रह गयी।

माता-पिता की मृत्यु की खबर आने पर उसे दांतों के दर्द की सुध न रही और वह कमरे में इधर-उधर भागती तथा हाथों को ऊपर उठा-उठाकर चिल्लाती रही—

"नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!"

कुबड़ा पर्दे को अपने गिर्द लपेटे हुए दरवाजे के पास खड़ा था, बहन की ओर से देखता और कूबड़ को हिलाते हुए बोला—

"पिता जी इतने गोल-मटोल और भीतर से खोखले-खोखले थे—मेरी समझ में नहीं आता कि वह डूब कैसे गये"

"चुप रहो, तुम किसी को भी प्यार नहीं करते!" बहन चिल्ला उठी।

"बात सिर्फ इतनी है कि मैं प्यारे-प्यारे शब्द बोलना जानता," उसने कहा।

पिता जी का शव नहीं मिला, लेकिन पानी में गिरने से पहले मां की मृत्यु हो चुकी थी, उसकी लाश को वाहर निकाल लिया गया, वह तावूत में भी वैसी भी लग रही थी जैसी जीवन में थी यानी किसी पुराने पेड़ की मुरझायी शाखा की भांति सूखी और भुरभुरी-सी।

"अव हम दोनों अकेले रह गये," अपनी भूरी आंखों की पैनी दृष्टि से भाई को दूर हटाते हुए वहन ने मां के कफ़न-दफ़न के वाद भाई से कहा। "हमें काफ़ी मुश्किल का सामना करना पड़ेगा, हम कुछ भी तो नहीं जानते और इसलिये हमारा वहुत नुक़सान हो सकता है। वहुत अफ़सोस की वात है कि मैं तत्काल विवाह नही कर सकती!"

"ओहो!" कुवड़ा चिल्ला उठा।

"क्या मतलव है इस 'ओहो!' का?"

उसने कुछ सोचकर जवाव दिया –

"यही कि हम अकेले रह गये!"

"तुम तो यह इस तरह कह रहे हो मानो तुम्हें किसी वात की खुशी हो रही हो!"

"मुझे किसी वात की खुशी नही होती।"

"यह भी वहुत अफसोस की वात है! तुममें ज़िन्दा आदमी जैसा कुछ भी नही।"

शामों को वहन का मंगेतर आता – नाटा, प्रफुल्ल व्यक्ति, सांवले, गोल चेहरे पर फूली-फूली मूंछों और सुनहरे वालों-वाला। वह थके विना सारी शाम हंसता रहता और शायद सारा दिन भी हंसना जारी रख सकता था। इन दोनों की सगाई

भी हो चुकी थी और शहर की एक सबसे अच्छी, साफ-सुथरी और शान्त सड़क पर इनके लिये मकान बनाया जा रहा था। कुबड़ा कभी भी इसके निर्माण-स्थल पर नहीं गया था और जब इसकी चर्चा भी होती, तो उसे अच्छा न लगता। बहन का मंगेतर अपने छोटे, गुदगुदे हाथ में, जिसकी उंगलियों में अनेक अंगूठियां पहने था, कुबड़े के कंधों को थपथपाता और अनेक छोटे-छोटे दांतों की झलक दिखाते हुए कहता—

"तुम्हें उसे देखने के लिये जाना चाहिये न? क्या ख्याल है तुम्हारा?"

कुबड़ा कोई न कोई बहाना बनाकर बहुत दिनों तक टालता रहा और आखिर बहन तथा उसके मंगेतर के साथ निर्माण-स्थल पर चला ही गया। वे दोनों जब मचान के सबसे ऊपरी भाग पर चढ़े तो वहां से नीचे गिर गये—मंगेतर सीधा जमीन पर, चूने के कूंड में, लेकिन कुबड़े की पोशाक मचान के खम्भे में अटक गयी, वह हवा में लटका रह गया और राजगीरों ने उसे नीचे उतारा। कुबड़े के हाथ और टांग की हड्डी ही उतरी, चेहरे पर चोट आयी, किन्तु मंगेतर की रीढ़ की हड्डी टूट गयी और बगल फट गयी।

बहन को बेहोशी का दौरा पड़ गया उसकी उंगलियां जमीन को खरोंचने और धूल उड़ाने लगीं। वह एक महीने से अधिक समय तक रोती-धोती रही और अपनी मां जैसी हो गयी—दुबली-पतली, लम्बी-हड़ीली और उसकी भांति रूखी-रूखी और कठोर आवाज में बोलने लगी—

"तुम—मेरा दुर्भाग्य हो!"

कुवड़ा अपनी बड़ी-बड़ी आंखों को ज़मीन पर गड़ाये हुए चुप रहता। बहन काली पोशाक पहनने लगी, उसकी भौंहें हर समय चढ़ी रहतीं और भाई के सम्मुख आ जाने पर अपने दांतों को ऐसे पीसती कि उसके गालों की हड्डियां उभरी दिखाई देतीं। कुवड़ा उसकी नज़र से बचने की हर मुमकिन कोशिश करता और अकेला तथा गुमसुम रहकर कुछ खाके-से बनाता रहता। वालिग़ हो जाने तक कुवड़े ने इस तरह अपनी ज़िन्दगी बितायी और उसके वयस्क हो जाने के दिन से उनके बीच खुलकर टकराव होने लगा जो वाक़ी सारी ज़िन्दगी भर चलता रहा। ऐसा टकराव, ऐसा संघर्ष जो उन्हें आपसी अपमान-तिरस्कार और ठेस तथा कटु व्यवहार के मज़बूत सूत्रों में बांधे रहा।

वालिग़ होने के दिन उसने वयस्क के अनुरूप विश्वासपूर्ण अन्दाज़ में वहन से कहा—

"न तो समझदार जादूगर होते हैं और न दयालु परियां। इस दुनिया में सिर्फ़ लोग हैं—कुछ दिल के वुरे और कुछ मूर्ख। दयालुता या नेकी के वारे मे जो कुछ कहा जाता है, वह मनगढ़न्त क़िस्सा है। लेकिन मैं चाहता हूं कि यह क़िस्सा एक हक़ीक़त वन जाये। याद है, तुमने कभी यह कहा था कि सम्पन्न घर में या तो सभी कुछ सुन्दर होना चाहिये या वुद्धिमत्तापूर्ण? सम्पन्न नगर में भी सभी कुछ सुन्दर होना चाहिये। मैं नगर के वाहर ज़मीन ख़रीदने जा रहा हूं, वहां अपने लिये और अपने जैसे दूसरे भोंडे लोगों के लिये मकान बनाऊंगा, उन्हें शहर मे, जहां उन पर वेहद भारी गुज़रती है और जहां तुम जैसे

लोगों को उन्हें देखना अच्छा नहीं लगता, बाहर ले जाऊंगा

"नहीं," बहन ने कहा, "तुम निश्चय ही ऐसा नहीं करोगे! यह पागलपन का विचार है!"

"यह तो तुम्हारा ही विचार है।"

उनके बीच लम्बा और बड़ा भद्दा वाद-विवाद हुआ, ऐसे लोगों जैसा वाद-विवाद जो एक-दूसरे से घृणा करते हैं और इस घृणा पर किसी तरह का पर्दा डालने की आवश्यकता भी नहीं समझते।

"यह तय हो चुका है!" कुबड़े ने कहा।

"मेरी ओर से नहीं," बहन ने जवाब दिया।

वह अपना कूबड़ ऊंचा उठाये हुए चला गया। कुछ समय बाद बहन को पता चला कि जमीन गिरवी जा चुकी है। इतना ही नहीं, नींव रखने के लिये खुदाई भी होने लगी है और दर्जनों गाड़ियां वहां ईंटें, पत्थर, लोहा और लकड़ी ढो रही हैं।

"तुम क्या अपने को अभी बच्चा ही समझते हो?" बहन ने एक दिन पूछा। "तुम क्या इसे खेल ही मानते हो?"

कुबड़ा चुप रहा।

दुबली-पतली, सुघड़-सुडौल और गर्वीली बहन सफेद घोड़ा जुती छोटी-सी बग्घी में, जिसे खुद चलाती थी, सप्ताह में एक बार शहर से बाहर जाती और निर्मित हो रहे मकान के पास से धीरे-धीरे गुजरते हुए उदासीनता से यह देखती कि ईंटों के लाल मांस को कैसे लोहे की बल्लियों की पेशियों से जोड़ा जा रहा है और भारी-भरकम ढांचे में पीली लकड़ी की

किस तरह स्नायुओं के रूप में बिछाया जा रहा है। वह भींगे के समान लगनेवाले अपने भाई को भी दूर से देखती जो हाथ में छड़ी लिये हुए मचान पर इधर-उधर आता-जाता होता,— सिर पर मुड़ा-मुड़ाया टोप पहने, मकड़ी की तरह धूल से अटा हुआ तथा धूसर। बाद में घर पर वह उसके उत्साहपूर्ण चेहरे और काली-काली आंखों को टकटकी बांधकर देखती रहती। उनमें कोमलता आ गयी थी और वे पहले से अधिक निर्मल हो गयी थीं।

"नहीं," वह धीरे से कहता, "मुझे यह अच्छी बात सूझी है, आप लोगों के लिये, और हमारे लिये भी यह अच्छी सूझ है! निर्माण करना—बहुत बढ़िया काम है यह! और मुझे लगता है कि जल्द ही मैं अपने को खुशक़िस्मत आदमी मानने लगूंगा..."

"खुशक़िस्मत आदमी?"

"हां! बात यह है कि काम करनेवाले लोग हमसे बिल्कुल भिन्न होते हैं, वे हमारे दिलों में ख़ास तरह के विचार पैदा करते हैं। किसी राजगीर को उस शहर की सड़कों पर से गुज़रते हुए, जहां उसने दसियों मकान बनाये हों, कितनी अधिक खुशी होती होगी! मजदूरों में बहुत-से समाजवादी हैं, वे गम्भीर-विचारशील लोग हैं और उनमें अपनी मान-मर्यादा की भी भावना है। कभी-कभी मुझे ऐसा भी लगता है कि अपनी जनता को हम अच्छी तरह नहीं जानते..."

"बड़ी अजीब बातें कर रहे हो तुम," बहन ने राय ज़ाहिर की।

बहन के ये शब्द सुनकर उसका चेहरा नीला पड़ गया, आगे बाहर निकली-सी रह गयी, उसकी जबान पथरा गयी और वह कुछ कहे बिना अपने को पकड़े हुए लोगों के हाथों को नाखूनों से खरोंचता रहा। इस बीच बहन कहती गयी—

"इस मकान के निर्माण पर इतना बड़ा खर्च भी इसके पागलपन का ही सबूत है। मैं अब इसे अपने पिता जी के नाम पर पागलों के अस्पताल के रूप में अपने शहर को भेंट कर देने का इरादा रखती हूं .."

बुड्ढा जोर से चीख उठा, बेहोश हो गया और लोग उसे यहां से उठाकर ले गये।

बहन उसी तेजी से इस इमारत को बनवाती रही जिस तेजी से भाई बनवा रहा था और जब वह पूरी तरह से बनकर तैयार हो गयी तो उसका भाई ही यहां आनेवाला पहला मरीज बना। सात साल तक वह यहीं रहा और उसे पूरा पागल बनाने के लिये यह काफी बड़ी अवधि थी। वह विषाद-रोग से ग्रस्त हो गया। इसी अरसे में उसकी बहन बुढ़ा गयी, वह कभी मां बन सकेगी, उसे यह आशा न रही और आखिर जब उसने यह देखा कि मानसिक दृष्टि से उसके भाई की मृत्यु हो चुकी है और वह कभी फिर से जिन्दा नहीं हो सकेगा तो उसे अपने संरक्षण में ले लिया।

और अब वे अंधे पक्षियों की तरह कभी यहां तो कभी वहां सारी दुनिया का चक्कर लगा रहे हैं, किसी सार-अर्थ और खुशी के बिना सभी चीजों को देखते हैं और उन्हें अपने सिवा कहीं, कुछ भी नजर नहीं आता।

टेक थरथराता नहीं था, केवल निर्मल आकाश की ओर उठा हुआ मस्तूल तनावपूर्ण ढंग से कांप रहा था। साज के तारों की तरह कसे हुए रस्से ही धीमे-धीमे गुनगुना रहे थे, लेकिन इस थरथराहट के सभी अभ्यस्त हो चुके थे, कोई उसकी ओर ध्यान नहीं देता था और ऐसे लगता था कि राजहंस की तरह सफ़ेद और सुघड़-सुडौल जहाज़ चिकने पानी पर गतिहीन खड़ा हुआ है। यह अनुभव करने के लिये कि वह चल रहा है, जहाज़ के पहलू से नीचे झांकना जरूरी था। वहीं निकट हरी-हरी लहरें जहाज़ के सफ़ेद पहलुओं से टकराती थीं, उनमें बल पड़ते थे, वे टेढ़ी-तिरछी होती थीं, पारे की सी चमक दिखाती और अलसायी-सी मरमर ध्वनि करती हुई चौड़ी-चौड़ी तथा कोमल सिलवटों के रूप में दूर भाग जाती थीं।

सुबह का वक्त था, सागर पूरी तरह से जागा नहीं था, सूर्योदय की गुलाबी लाली आकाश से अभी पूरी तरह लुप्त नहीं हुई थी, लेकिन जंगलों से ढका हुआ गोर्गोन द्वीप, चोटी पर गोल, भूरी मीनार और ऊंघते पानी के पास सफ़ेद मकानों की भीड़वाली एकाकी, कठोर चट्टान पीछे रह चुकी थी। कुछ छोटी-छोटी नावें बड़ी तेज़ी से जहाज़ के पहलुओं के पास से आगे निकल गयी थीं। ये द्वीप के मछुए थे जो सार्डिन मछलियां पकड़ने के लिये जा रहे थे। उनके लम्बे चप्पुओं की लयबद्ध छपछपाहट और छरहरी आकृतियां ही मानस-पट पर अंकित होकर रह जाती थीं। ये मछुए खड़े-खड़े ही चप्पू चलाते थे और इस तरह झूमते-झुकते थे मानो सूर्य को प्रणाम कर रहे हों।

जहाज़ के पीछे हरे-हरे से फेन की चौड़ी पट्टी फैली हुई

पर लगे ताँबे में टोकर खाकर, उछलकर सामने आया लाल बालोंवाला, गोल-मटोल और नाटा व्यक्ति। उसने मूछों को ऐसे ताव दे रखा था मानो ललकार रही हो, वह पर्वतारोहियों जैसा सूट और हरे परवाला टोप पहने था। ये तीनों जहाज के रेलिंग के पास आकर खड़े हो गये, मोटे ने उदासी से आँखें सिकोड़ी और बोला

"कैसी शान्ति है, है न?"

गलमुच्छोंवाले व्यक्ति ने जेबों में हाथ खोंस लिये, टांगों को फैला लिया और खुली हुई कैंची जैसा लगने लगा। लाल बालोंवाले ने दीवार घड़ी के लोलक जैसी बड़ी, सोने की घड़ी जेब से निकाली, उस पर नजर डाली आकाश और डेक की तरफ देखा और इसके बाद घड़ी को हिलाते-डुलाते और पाँव से ताल देते हुए सीटी बजाने लगा।

दो महिलायें भी सामने आयीं। एक थी जवान, गदराये बदन की, चीनी-गुड़िया जैसा चेहरा और स्नेहपूर्ण दूधिया-नीली आँखें। उसकी काली भौंहे मानो रुठी हुई थीं और एक भौंह दूसरी से ऊंची थी। दूसरी महिला कुछ अधिक आयु की थी, नोकीली नाक, बदरंग हुए बालों का बढ़िया केश-विन्यास और बायें गाल पर बड़ा-सा काला जन्म-चिह्न। गले में सोने की दो जंजीरें, लॉरनेट और उसके भूरे फ्रॉक की पेटी से साथ अनेक दुम-छल्ले लटके हुए थे।

इनके लिये कॉफी लायी गयी। जवान महिला मेज के पास जा बैठी और कोहनियों तक उघाड़ी अपनी बाहों को विशेष ढंग से घुमाते हुए प्यालों में कॉफी डालने लगी। पुरुष मेज के

"डेल्फिन सूअरों जैसी लगती है।"

लाल बालोंवाले ने फौरन राय जाहिर की –

"यहां कुल मिलाकर बहुत कुछ सूअरों जैसा है।"

बदरंग बालोंवाली प्रौढ़ महिला प्याले को नाक के पास ले गयी, कॉफी को सूंघा, नफरत से मुंह बनाया और बोली –

"बिल्कुल गन्दा है।"

"और दूध?" मोटे ने मानो भयभीत होते हुए आंखें मिच-मिचाकर दूध को भी वैसा ही घटिया बताया।

चीनी की गुड़िया जैसे चेहरेवाली महिला बड़बड़ायी –

"सब कुछ गन्दा है, बेहद गन्दा! और सभी लोग यहूदियों जैसे हैं "

लाल बालोंवाला गलमुच्छोंवाले के कान में रुके बिना लगातार कुछ कहता जा रहा था। उसने तो मानो छात्र की तरह अपना पाठ बहुत अच्छी तरह से ज़बानी याद कर रखा था और वह इस बात पर गर्व करता हुआ अध्यापक को अपना पाठ सुनाता जाता था। उसके श्रोता को गुदगुदी हो रही थी, उसकी जिज्ञासा बढ़ती जाती थी, वह अपने सिर को धीरे-धीरे कभी इधर, तो कभी उधर हिलाता था और उसके सपाट चेहरे पर उसका मुंह सूखे हुए तम्बे की दरार जैसा लग रहा था। कभी-कभी उसका कुछ कहने को मन होता और वह अजीब-सी गरगरी आवाज़ में कहना शुरू करता –

"मेरे यहां गुबेर्निया में "

और बात पूरी किये बिना ही फिर से अपना सिर

"नमस्ते भाइयो, नमस्ते!" उसने फटी-सी आवाज में कृपाभाव दिखाते हुए सिर झुकाकर ऊंचे-ऊंचे जवाब दिया।

इस आदमी की ओर कनखियों से देखते हुए रूसी चुप हो गये। गलमुच्छोंवाले इवान ने धीरे से कहा –

"साफ दिखाई दे रहा है कि कोई अवकाशप्राप्त सैनिक है ..."

पके बालोंवाले इतालवी ने यह देखकर कि उसकी ओर ध्यान दिया जा रहा है, मुह से सिगार निकाला और बड़े आदर से सिर झुकाकर रूसियों का अभिवादन किया। प्रौढ़ा ने सिर ऊपर उठाया, लॉर्नेट को नाक के पास किया और चुनौती देती हुई दृष्टि से उसकी तरफ देखा। गलमुच्छोंवाले को न जाने किस कारण झेंप-सी महसूस हुई, उसने जल्दी से मुह मोड़ लिया, जेब से घड़ी निकाली और फिर से उसे हवा में उछालने का खेल-सा करने लगा। ठोडी को छाती से सटाते हुए केवल मोटे रूसी ने ही इतालवी के अभिवादन का उत्तर दिया। इतालवी को इससे परेशानी हुई, विह्वलता से उसने मुह के कोने में सिगार दबा लिया और बूढ़े वैरे से दबे स्वर में पूछा –

"ये लोग रूसी है?"

"जी हुजूर! रूसी गवर्नर और उनके परिवार के लोग ..."

"उनके चेहरो पर हमेशा कैसा सौजन्य रहता है ..."

"बहुत भले लोग है रूसी ..."

"निश्चय ही स्लावो मे सबसे अच्छे ..."

"लेकिन मेरे ख्याल मे कुछ लापरवाह है ..."

"लापरवाह? सचमुच?"

"मुझे ऐसा लगता है कि लोगो के प्रति लापरवाह है।"

बालोंवाले की मूंछों के निकट कर लेता और बड़े ध्यान से उसकी बात सुनने लगता।

मोटे व्यक्ति ने यह कहकर गहरी सांस ली –

"कैसे तुम भनभन करते जा रहे हो, इवान ..."

"मुझे काफ़ी दीजिये न!"

उसने चूं-चर्र और खड़खड़ की आवाज़ पैदा करते हुए अपनी कुर्सी मेज़ की तरफ़ खिसकायी और उसके साथ बातचीत करनेवाले ने बड़े महत्त्वपूर्ण ढंग से कहा –

"खूब बढ़िया विचार हैं इवान के दिमाग़ में।"

"तुम्हारी नींद पूरी नहीं हुई," गलमुच्छोंवाले को लॉरनेट में से देखने के बाद प्रौढ़ा ने कहा। गलमुच्छोंवाले ने चेहरे पर हाथ फेरा और फिर अपनी हथेली पर नज़र डाली।

"मुझे ऐसे लगता है कि जैसे मुझ पर पाउडर मल दिया गया है। क्या तुम्हें ऐसा नहीं लगता?"

"अरे, चाचा जी!" युवा महिला ज़ोर से कह उठी। "यही तो इटली की खास बात है! यहां त्वचा बेहद खुश्क हो जाती है।"

प्रौढ़ा ने पूछा:

"लीदिया, तुमने ध्यान दिया कि इनके यहां चीनी कितनी बुरी है?"

इसी वक़्त एक लम्बा-तड़ंगा व्यक्ति डेक पर आया – घने घुंघराले सफ़ेद बाल, बड़ी-सी नाक, हंसती-सी आंखें और मुंह में सिगार। रेलिंग के पास खड़े जहाज के नौकरों-चाकरों ने बड़े आदर से झुककर उसका अभिवादन किया।

"नमस्ते भाइयो, नमस्ते!" उसने फटी-सी आवाज में कृपाभाव दिखाते हुए सिर झुकाकर ऊंचे-ऊंचे जवाब दिया।

इस आदमी की ओर कनखियों से देखते हुए रूसी चुप हो गये। गलमुच्छोंवाले इवान ने धीरे से कहा –

"साफ़ दिखाई दे रहा है कि कोई अवकाशप्राप्त सैनिक है . ."

पके बालोंवाले इतालवी ने यह देखकर कि उसकी ओर ध्यान दिया जा रहा है, मुह से सिगार निकाला और बड़े आदर से सिर झुकाकर रूसियों का अभिवादन किया। प्रौढ़ा ने सिर ऊपर उठाया, लॉर्नेट को नाक के पास किया और चुनौती देती हुई दृष्टि से उसकी तरफ देखा। गलमुच्छोंवाले को न जाने किस कारण झेंप-सी महसूस हुई, उसने जल्दी से मुह मोड़ लिया, जेब से घड़ी निकाली और फिर से उसे हवा में उछालने का खेल-सा करने लगा। ठोड़ी को छाती में सटाते हुए केवल मोटे रूसी ने ही इतालवी के अभिवादन का उत्तर दिया। इतालवी को इससे परेशानी हुई, विह्वलता से उसने मुह के कोने में सिगार दबा लिया और बूढ़े बैरे से दबे स्वर में पूछा –

"ये लोग रूसी है?"

"जी हुजूर! रूसी गवर्नर और उनके परिवार के लोग "

"उनके चेहरों पर हमेशा कैसा सौजन्य रहता है "

"बहुत भले लोग है रूसी "

"निश्चय ही स्लावो में सबसे अच्छे "

"लेकिन मेरे ख्याल से कुछ लापरवाह है

"लापरवाह? सचमुच?"

"मुझे ऐसा लगता है कि लोगों के प्रति लापरवाह है।"

खड़े हो गये। पके बालोंवाले ने धीरे से कहा –

"जब मैं रूसियों को देखता हूं तो मुझे मेसिन की याद आ जाती है।"

"याद है न कि हमने नेपल्ज में कैसे रूसी जहाजियों का स्वागत किया था?" तरुण ने पूछा।

"अपने रूसी जंगलों में भी उन्हें इसकी याद बनी रहेगी!"

"आपने उनके सम्मान में बनाया गया पदक देखा?"

"हां, लेकिन मुझे उस पर की गयी कारीगरी पसन्द नहीं आयी।"

"उसकी, मेसिन की चर्चा कर रहे हैं जहां भूकम्प आया था," मोटे ने बाकी रूसियों को बताया।

"और – हम रहे हैं!" युवा महिला बरबस कह उठी। "कमाल है!"

समुद्री पक्षी जहाज के पास आ गये। उनमें से एक अपने टेढ़े पंखों को जोर से हिलाता हुआ डेक के ऊपर हवा में लटक-सा गया। युवा महिला उसकी ओर बिस्कुट फेंकने लगी। पक्षी इन टुकड़ों को चोंच में पकड़ते हुए डेक के पास नीचे झपटते और फिर बड़े जोश से चिल्लाते हुए सागर के ऊपर आसमानी शून्य में उड़ते। इतालवी मुसाफिरों के लिये भी कॉफी लायी गयी, वे भी पक्षियों की ओर हवा में बिस्कुट फेंकने लगे। महिला ने बड़ाई से भौंहें चढ़ाकर कहा –

"है न एकदम बन्दर!"

मोटे ने इतालवियों की दिलचस्प बातचीत ध्यान से सुनी और फिर से शेष रूसियों को बताया –

गर्मी को ध्यान में रखते हुए उनके लिये सरकारी खर्च पर ही वोद्का की दस-बीस या पचास बालटियां भी रखवा दें। बस, और किसी चीज की जरूरत नहीं होगी!"

"मैं कुछ नहीं समझी!" प्रौढ़ा ने कहा। "यह कोई मजाक है क्या?"

लाल बालोंवाले ने तुरन्त उत्तर दिया—

"मजाक नहीं, संजीदा बात है! आप जरा सोचें तो ma tante...*"

युवा महिला ने आश्चर्य से आंखें फैलाकर कन्धे झटके।

"कैसी बेतुकी बात है! सरकारी खर्च पर वोद्का पिलायी जाये, जबकि वे तो खुद ही..."

"तुम बात को समझी नहीं, तीतिया!" कुर्सी पर उछलते हुए लाल बालोंवाले ने चिल्लाकर कहा। गलमुच्छोंवाला खूब मुंह खोलकर, दायें-बायें झूलता हुआ कोई आवाज किये बिना हंस रहा था।

"तुम जरा समझो तो—वे गुंडे नशे में धुत होने पर तुरन्त लाठियों और पत्थरों से एक-दूसरे की ही हड्डियां-पसलियां तोड़ डालेंगे। अब बात दिमाग में बैठी?"

"एक-दूसरे की ही हड्डियां-पसलियां क्यों तोड़ेंगे?" मोटे ने पूछा।

"यह मजाक है न?" प्रौढ़ा ने फिर से वही विचार प्रकट किया।

---

* चाची (फ्रांसीसी)

लाल बालोंवाले ने अपने छोटे-छोटे हाथों को धीरे-धीरे हिलाते-डुलाते हुए बड़े जोश से अपनी बात की पुष्टि की –

"जब सरकार उन पर डंडा चलाती है तो वामपंथी क्रूरता और अन्याचार की दुहाई देने लगते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि कोई ऐसा उपाय खोजना चाहिये जिससे वे स्वयं ही एक-दूसरे पर डंडा चलायें। ठीक है न?"

जहाज जोर से डोल उठा, गदराये बदनवाली महिला ने घबराकर मेज को थाम लिया, बर्तन खनखना उठे, प्रौढ़ा ने मोंटे के कन्धे पर हाथ रखकर कड़ाई से पूछा –

"यह क्या हो रहा है?"

"जहाज मुड़ रहा है।"

कुहासे और बाग-बगीचों से ढकी पहाड़ियां और टीले पानी में से अधिकाधिक ऊंचे उठते और स्पष्ट होते जाते थे। अंगूरों के बगीचों में नीलगूं चट्टानें बाहर निकली हुई थीं, हरियाली के सघन बादलों में सफ़ेद घर छिपे हुए थे, धूप में खिड़कियों के शीशे चमक रहे थे और चमकीले दृश्यों की झलक मिलती थी। चट्टानों के बीच ठीक तट पर ही एक छोटा-सा घर खड़ा था, उसका मुखड़ा सागर की ओर था और वह पूरे का पूरा चटक बैंगनी रंग के फूलों से ढका हुआ था। ऊपर की ओर, पत्थर की सीढ़ियों से जिरेनियम के लाल फूलों की धारायें-सी नीचे बह रही थीं। रंग बड़े लुभावने थे, तट स्नेहिल और आतिथ्यपूर्ण-सा प्रतीत होता था, पहाड़ियों की प्यारी-प्यारी रेखाएं, बागों की छाया में, अपनी ओर बुलाती-सी प्रतीत हो रही थीं।

"यहा सभी कुछ कितना घिच-पिच-सा है," मोटे ने आह भरते हुए कहा ; प्रौढा ने कड़ाई से उसकी तरफ देखा और इसके बाद पतले होठों को कसकर भीचते तथा सिर को ऊपर की ओर उठाते हुए लॉरनेट में से तट पर नज़र दौडाई।

हल्के-फुल्के सूट पहने हुए बहुत-से सावले लोग डेक पर आ चुके थे, वे ऊंचे-ऊंचे बोल-बतिया रहे थे। रूसी महिलायें उनकी ओर ऐसे तिरस्कार से देख रही थी जैसे रानिया प्रजा की तरफ देखती है।

"ये अपने हाथो को कितना अधिक हिलाते-डुलाते है," युवा महिला ने कहा। मोटे ने हाफते हुए इसका कारण स्पष्ट किया –

"यह उनकी भाषा का लक्षण है। वह दरिद्र है और हाव-भाव का प्रदर्शन किये बिना उससे काम नही चलता "

"हे भगवान! हे भगवान!" प्रौढा ने बहुत ही गहरी सास ली और फिर कुछ सोचकर पूछा –

"क्या जिनोआ मे भी बहुत-से सग्रहालय हैं?"

"शायद तीन ही," मोटे ने जवाब दिया।

"और वह कब्रिस्तान?" युवा महिला ने जानना चाहा।

"काम्पो सान्तो। हा, वह और गिरजाघर तो है ही।"

"यहा के कोचवान भी क्या नेपल्ज के कोचवानो की तरह ही बददिमाग हैं?"

लाल बालोवाला और गलमुच्छोवाला – ये दोनो उठे, डेक के रेलिंग की ओर चले गये और वहा एक-दूसरे को टोकते हुए बाते करने लगे।

"यह इतालवी क्या कह रहा है?" अपने बढ़िया केश-विन्यास को ठीक करते हुए महिला ने पूछा। उसकी कोहनियां नुकीली, कान बड़े-बड़े और मुरझाये हुए पत्तों की तरह पीले थे। मोटा घुंघराले बालोंवाले इतालवी को बहुत ध्यान और विनीत भाव से सुना रहा था।

"महानुभावो, शायद उनके यहां एक बहुत पुराना क़ानून है जिसके मुताबिक़ यहूदियों के लिये मास्को जाने की मनाही है। यह सम्भवतः तानाशाही का अवशेष है। जार इवान रौद्र तो आपको याद होगा ही। इंगलैंड में भी बहुत-से पुराने पड़ चुके कानून हैं जिन्हें आज भी रद्द नहीं किया गया है। यह भी हो सकता है कि यह यहूदी मेरी आंखों में धूल झोंक रहा हो। थोड़े में यही कि उसे किसी वजह से जारों के प्राचीन शहर, पवित्र मास्को नगर में जाने का अधिकार नहीं था।"

"लेकिन हमारे रोम में, जो मास्को से ज्यादा प्राचीन और पवित्र है, मेयर यहूदी है," तरुण ने व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा।

"और वह पोप दर्जी* से खूब बाजी मारता है!" ऐनक पहने बूढ़े ने जोर से ताली बजाते हुए इतना और जोड़ दिया।

"बूढ़ा क्या चिल्ला रहा है?" महिला ने हाथ नीचे करते हुए पूछा।

---

* पोप का कुलनाम – सार्तो – जिसका इतालवी भाषा में अर्थ है दर्जी। (गोर्की का नोट)

"कोई येसिर-सैर की बात। वे नेपल्ज की बोली में बातें कर रहे हैं "

"तो वह यहूदी मास्को पहुंचा। और महानुभावो, चूंकि उसके पास ठहरने की कोई दूसरी जगह नहीं थी, इसलिये वह एक वेश्या के यहां गया, ऐसा उसने कहा ."

"मनगढ़न्त किस्सा है!" बूढ़े ने दृढ़ता से कहा और बात सुनानेवाले की ओर हाथ झटककर मुंह फेर लिया।

"सच तो यह है कि मैं भी ऐसा ही मानता हूं।"

"तो आगे क्या हुआ?" तरुण ने जानना चाहा।

"वेश्या ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया, लेकिन ऐसा करने से पहले उससे पैसे ऐंठ लिये मानो वह सामान्य ग्राहक हो "

"बड़ी घटिया बात है!" बूढ़े ने कहा। "बहुत गन्दगी-भरी है उस आदमी के दिमाग में, बस। मैं विश्वविद्यालय के जमाने में कुछ रूसियों को जानता हूं–बहुत भले लोग हैं वे "

मोटे रूसी ने रूमाल से चेहरे का पसीना पोंछकर मरे-मरे अन्दाज और उदासीनता से महिलाओं को बताया–

"वह यहूदियों के चुटकुले सुना रहा है।"

"इतने उत्साह से!" युवा महिला व्यंग्यपूर्वक मुस्करायी और दूसरी ने टिप्पणी की–

"इन लोगों के इतने अधिक हाव-भाव और हो-हल्ले के बावजूद इनमें कुछ नीरसता-सी अनुभव होती है

तट पर शहर उभरने लगा। टीलों के पीछे से मकान सामने आने लगे वे एक-दूसरे से अधिकाधिक सटते जाते थे उनकी

दीवार-सी बनती जा रही थी जो हाथीदांत के बने हुए तथा धूप को प्रतिबिम्बित करते हुए से लग रहे थे।

"याल्टा जैसा है," युवा महिला ने उठते हुए राय जाहिर की। "मैं लीज़ा के पास जा रही हूं।"

आसमानी रंग की पोशाक पहने, वह तनिक डोलती हुई धीरे-धीरे डेक पर से जाने लगी। जब वह इतालवियों के पास पहुंची तो पके बालोंवाले ने अपनी बात बन्द करते हुए धीरे से कहा –

"कितनी सुन्दर आंखें हैं!"

"हां," चश्माधारी ने सिर झुकाकर हामी भरी और बोला– "शायद बाजीलीदा ऐसी ही थी!"

"बाजीलीदा बिज़ैन्टाइन की थी?"

"लेकिन मैं स्लाव के रूप में ही उसकी कल्पना करता हूं..."

"लीदिया की चर्चा कर रहे हैं", मोटे रूसी ने बताया।

"क्या कह रहे हैं?" प्रौढ़ा ने पूछा। "ज़रूर कोई भद्दी बात कह रहे होंगे?"

"नहीं उसकी आंखों की तारीफ कर रहे हैं..."

प्रौढ़ा ने मुंह बनाया।

नावें-पीनस के हिस्सों को लौ देता हुआ जहाज़ नज़ाक़त से और जल्दी-जल्दी तट के नज़दीक पहुंचता जा रहा था। घाट की काली दीवारें और उनके पीछे ऊपर को उठे हुए सैकड़ों मस्तूल नज़र आने लगे। कहीं-कहीं निश्चल झण्डे लटके हुए थे, काला धुआं हवा में घुलता जा रहा था, तेल और कोयले की धूल की गंध आ रही थी, बन्दरगाह में हो रहे काम और

बड़े शहर का तरह-तरह की आवाज़ों का शोर सुनाई दे रहा था।

मोटा रूसी अचानक ज़ोर से हँस पड़ा।

"क्या बात है?" अपनी भूरी, कान्तिहीन हो चुकी आँखों को सिकोड़ते हुए प्रौढ़ा ने पूछा।

"जर्मन इनका भुरकस बना देंगे। सच कहता हूँ, देख लीजियेगा!"

"तुम्हें इस बात से क्यों खुशी हो रही है?"

"यों ही..."

गलमुच्छोंवाले ने अपने पैरों पर नज़र डालते हुए बड़ी कड़ाई से और शब्दों पर ज़ोर दे देकर लाल बालोंवाले से पूछा –

"इस अनूठी बात से तुम्हें खुशी हुई या नहीं?"

लाल बालोंवाले ने ज़ोर से मूँछों को मरोड़ते हुए कोई जवाब नहीं दिया।

जहाज़ ने अपनी गति धीमी कर दी थी। धुँधला हरा पानी उसके पहलुओं से टकराकर उछल रहा था, मानो शिकायत करता हुआ सिसक रहा हो। संगमरमर के मकान, ऊँची मीनारें और जालीदार छज्जे अब उसमें प्रतिबिम्बित नहीं हो रहे थे। यह जहाज़ भी अनेकानेक जहाज़ोंवाले बन्दरगाह के काले जबड़े में समाता जा रहा था।

१७

रेस्तोरां के दरवाजे के पास रखी लोहे की मेज़ पर हल्के रंग का सूट पहने हुए एक दुबला-पतला और सफ़ाचट चेहरे-वाला व्यक्ति, जो अमरीकी जैसा लगता

था, आ बैठा और उसने मानो गाते हुए अलसाये-से स्वर में पुकारा –

"गा-र-सन ..."*

सभी ओर अकासिया के ढेरों सफेद और सोने जैसे सुनहरे फूल खिले हुए थे। सूर्य-किरणें धरती पर और आकाश में सभी जगह चमक रही थीं – वसन्त के शान्त उल्लास को व्यक्त कर रही थीं। मखमली कानोंवाले छोटे-छोटे गधे घुमों को बजाते हुए सड़क के बीचोंबीच भागते जा रहे थे, भारी-भरकम घोड़े धीरे-धीरे चल रहे थे और लोग उतावली में नहीं थे। साफ नज़र आ रहा था कि हर प्राणी धूप में, फूलों की मधुर सुगन्ध में महकती हुई हवा में अधिक से अधिक देर तक रहना चाहता है।

वसन्त के आगमन की सूचना देनेवाले बच्चों को भरमार मिल रही थी, सूरज उनकी पोशाकों को चटख रंग प्रदान कर रहा था। रंग-बिरंगी पोशाकें पहने हुए महिलाएं झूमती-झामती और सजीले ढंग से चलती जा रही थीं। धूप नहाये दिन में वे भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण होती हैं जितनी रात के वक्त तारिकायें।

हल्के रंग का सूट पहने हुए व्यक्ति अजीब-सा लग रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह बहुत गन्दा था और उसे आज ही ऐसे रगड़-रगड़कर साफ किया गया है कि उसमें जो कुछ सजीव-सजीला था वह भी हमेशा के लिये धुल गया है। वह कान्तिहीन आंखों से सभी ओर ऐसे देख रहा था मानो घरों की दीवारें, धुंधली सड़क और नर-पथ की चौड़ी पट्टिया

---

* बैरा। (फ्रांसीसी) – अनु०

पर आती-जाती हर चीज़ पर थिरकते किरण-धब्बों को गिन रहा हो। उसके मुरझाये-से होंठ पुष्प के आकार में आगे की ओर बढ़े हुए थे, किसी अजीब और दर्दभरी धुन पर वह धीरे-धीरे और बड़ी लगन से सीटी बजा रहा था, नाखूनों की हल्की-सी झलक देते हुए गोरे हाथ की लंबी उंगलियों से मेज़ के गूंजते सिरे पर ताल दे रहा था। उसके दूसरे हाथ में पीले रंग का दस्ताना था जिससे वह घुटने पर उसी ताल को दोहरा रहा था। उसके चेहरे से पता चलता था कि वह समझदार और पक्के इरादेवाला आदमी है, लेकिन इस बात से दुख होता था कि किसी खुरदरी और भारी चीज़ ने उसके ये लक्षण खुरच डाले हैं।

बड़े आदर से सिर झुकाकर बैरे ने उसके सामने कॉफ़ी का प्याला, हरे रंग की लिकर की छोटी-सी बोतल और बिस्कुटों की प्लेट रख दी। इसी समय उसके पासवाली मेज़ पर चौड़े सीने और सुलेमानी पत्थर जैसी आंखोंवाला एक अन्य व्यक्ति आ बैठा। उसके गाल, गर्दन और हाथ धुएं से काले थे, वह बड़ा हृष्ट-पुष्ट और इस्पात की तरह मज़बूत था मानो किसी बड़ी मशीन का हिस्सा हो।

साफ़-सुथरे आदमी की थकी-थकी-सी आंखें जब इस व्यक्ति पर जमीं तो उसने तनिक उठकर अपने टोप को छूते हुए अभिवादन किया और घनी मूंछों के बीच से कहा –

"नमस्ते, श्रीमान इंजीनियर!"

"अरे, आप फिर से यहां हैं, त्रामा!"

"जी, श्रीमान इंजीनियर..."

"तो फिर से कुछ हलचल होगी?"

"आपका काम कैसे चल रहा है?"

धनले-धनले होठों पर हल्की-सी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान लाते हुए इंजीनियर ने जवाब दिया –

"मेरे दोस्त, मुझे ऐसा लगता है कि सिर्फ सवालों से बातचीत आगे नहीं बढ़ सकती "

दूसरे व्यक्ति ने टोप कानों पर खिसका लिया और गुलजार जोर से हसते हुए बोला –

"हां, यह तो ठीक है। लेकिन कसम खाकर कहता हू कि मेरा बहुत मन है आपके काम के बारे मे जानने को "

कोयले से भरी गाडी मे जुता हुआ चितकबरा और खुरदरे बालोंवाला गधा रुक गया, उसने अपनी गर्दन आगे को बढ़ाई और दर्दीली आवाज मे रेंकने लगा। लेकिन इस दिन शायद उसे अपनी आवाज अच्छी नहीं लगी, इसलिये उसने घबराकर ऊंचे स्वर पर रेंकना बन्द कर दिया, भबरीले कानों को फटकारा और सिर झुकाकर तथा सुमो को बजाता हुआ आगे भागने लगा।

"आपकी नयी मशीन का वैसी ही बेसब्री से इन्तजार कर रहा हू जैसे उस नयी किताब का जो मुझे कुछ ज्यादा अक्लमन्द बना सकती हो "

इंजीनियर ने कॉफी का घूट भरते हुए कहा –

"आपकी यह तुलना मै पूरी तरह से समझा नहीं

"क्या आप ऐसा नहीं मानते कि मशीन वैसे ही आदमी की शारीरिक शक्ति को मुक्ति प्रदान करती है जैसे अच्छी पुस्तक उसकी आत्मा को?"

"ओह, यह मतलब है आपका!" इंजीनियर ने सिर ऊपर को झटकते हुए कहा। "खूब!"

और मेज पर खाली प्याला रखते हुए उसने पूछा –

"निश्चय ही आप अपना प्रचार-कार्य आरम्भ कर देंगे?"

"मैंने तो शुरू भी कर दिया है..."

"फिर से हड़तालें होंगी, फिर से हल्ला-गुल्ला होगा न?"

दूसरा व्यक्ति कन्धे झटककर नम्रता से मुस्करा दिया।

"काश कि इसके बिना काम चल सकता..."

काला फ्रॉक पहने और सन्यासिनी-सी कठोर लगनेवाली बुढ़िया ने इंजीनियर से बनफ़शा के फूलों का गुलदस्ता ख़रीदने का अनुरोध किया। इंजीनियर ने दो गुलदस्ते ख़रीद लिये और विचारों में डूबकर अपने संभाषी की ओर एक गुलदस्ता बढ़ाते हुए बोला –

"इतना बढ़िया दिमाग़ पाया है आपने, त्रामा! और सचमुच इस बात का अफ़सोस होता है कि आप आदर्शवादी हैं..."

"फूलों और प्रशंसा के लिये धन्यवाद देता हूं। आपने कहा कि अफ़सोस की बात है?"

"हां! वास्तव में तो आप कवि हैं और ढंग का इंजीनियर बनने के लिये आपको पढ़ना चाहिये..."

त्रामा सफ़ेद दांतों की झलक देते हुए धीरे से मुस्कराया और बोला –

"ओह, यह तो सही है! इंजीनियर कवि होता है – इसका मुझे आपके साथ काम करते हुए विश्वास हो गया..."

"आप दूसरे का मन रखना जानते हैं.."

"और मेरे दिमाग मे यह सवाल आया – श्रीमान इजीनियर समाजवादी क्यो नही बन जाते ? समाजवादी को भी कवि होना चाहिये "

समान बुद्धिमत्तापूर्ण ढग से एक-दूसरे की ओर देखते हुए ये एक-दूसरे से अद्भुत रूप से भिन्न दोनो व्यक्ति खिलखिलाकर हस दिये। एक था हाड-मास का पुतला, विह्वल-बेचैन, निचुडा-सा और कान्तिहीन आखोवाला, किन्तु दूसरा मानो अभी ही ढाला गया हो और अभी उस पर पालिश करना बाकी हो।

"नही, मामा, मै तो यही बेहतर समझता हू कि मेरी अपनी वर्कशाप होती और उसमे आप जैसे कोई तीरेक नौजवान होते। ओहो, तब देखते कि हम क्या कर दिखाते "

उसने धीरे से उगलिया मेज पर मारी और चाव से फूक लगाते हुए गहरी सास ली।

"बुरा हो शैतान का," मामा कुछ उत्तेजित-सा होकर बोल उठा – "कैसी तुच्छ बाते जीने और काम करने मे आडे आती है. "

"आप क्या मानवजाति के इतिहास को तुच्छ बाते कह रहे है, मास्टर मामा ?" इजीनियर ने चुभती-सी मुस्कान के साथ पूछा। मजदूर ने अपनी टोपी उतारी, उसे हिलाया और जोश से बोलने लगा –

"मेरे पूर्वजो का इतिहास वास्तव मे है क्या ?

"आपके पूर्वजो का ?" पहले शब्द पर और अधिक चुभती मुस्कान के साथ जोर देते हुए इजीनियर ने प्रश्न को दोहराया।

"हां, मेरे पूर्वजों का! यह छोटे मुंह बड़ी बात है न? ऐसा ही सही! लेकिन क्या, जोर्दानो ब्रूनो, वीको और मदज़ीनी मेरे पुरखे नहीं? क्या मैं उन्हीं की दुनिया में सांस नहीं ले रहा हूं? इन महान लोगों के मस्तिष्कों ने जो बीज बोये हैं, क्या मैं उन्हीं के फल नहीं खा रहा हूं?"

"अच्छा, इस अर्थ में!"

"हमारे पूर्वजों ने जो कुछ दुनिया को दिया है—वह मेरा भी है!"

"बेशक है," इंजीनियर ने गम्भीरता से भौंहें चढ़ाकर कहा।

"और मुझसे पूर्व, हम लोगों से पहले जो कुछ किया गया है वह सब कच्ची धातु है और हमें उसे इस्पात में बदलना है—ठीक है न?"

"क्यों नहीं? यह तो साफ़ है!"

"हम मजदूरों की तरह आप बुद्धिजीवी भी तो अतीत के विचारों के बल पर पनप रहे हैं।"

"मैं इससे इन्कार थोड़े ही कर रहा हूं," इंजीनियर ने सिर झुकाकर कहा। इसी समय धूसर रंग के चिथड़े पहने हुए एक लड़का उसकी बगल में आ खड़ा हुआ था। वह खेल में बुरी तरह से पिटे हुए गेंद की तरह छोटा-सा था। गन्दे-मन्दे हाथों में क्रोकस फूलों के गुलदस्ते लिये हुए वह गिड़गिड़ाकर कह रहा था—

"महानुभाव, मुझसे फूल खरीद लीजिये..."

"मेरे पास तो हैं..."

"फूल तो जितने ज्यादा हों, उतने ही कम होते हैं..."

"शाबाश बेटा!" श्यामा कह उठा। "शाबाश, मुझे भी दो गुलदस्ते दे दो "

और लड़के ने उसे जब गुलदस्ते दिये तो उसने टोप तनिक ऊपर को उठाकर इंजीनियर की ओर गुलदस्ता बढ़ाते हुए कहा –

"लीजिये न?"

"धन्यवाद।"

"कितना सुहावना दिन है, है न?"

"अपनी पचास साल की उम्र में भी मैं यह अनुभव करता हूँ..."

उसने आँखें सिकोड़कर कुछ सोचते हुए इधर-उधर नजर दौड़ाई और फिर गहरी साँस ली।

"वसन्त के सूर्य के प्रभाव को तो आप शायद अपनी नसों में खास तौर पर अनुभव करते हैं। वह भी केवल इसलिये नहीं कि आप जवान हैं, बल्कि – जैसा कि मैं देख रहा हूँ – आपके लिये सारी दुनिया उससे बिल्कुल भिन्न है जैसी कि वह मेरे लिये है। क्यों, ठीक है न?"

"कुछ कह नहीं सकता " श्यामा ने मुस्कराकर जवाब दिया। "लेकिन बहुत लाजवाब है यह जिन्दगी!

"अपनी आशाओं के कारण?" इंजीनियर ने मजाक के अन्दाज में पूछा। इस प्रश्न ने श्यामा को मानो डंक-सा मार दिया, उसने फिर से टोप सिर पर रख लिया और झटपट जवाब दिया –

"मुझे जो कुछ जैसा लगता है उस सभी के लिये लाजवाब

को उस घटना के लिये सैंतीस हजार [illegible] चुकानी पड़ी.

"इस रकम को मजदूरों की मजदूरी में शामिल कर देना कहीं ज्यादा अक्ल की बात होती ..."

"हुंह! गणित में आप बहुत निपुण नहीं हैं। रही अक्ल की बात? तो वह हर जानवर के पास अपनी-अपनी होती है।"

इतना कहकर उसने अपना दुबला-पतला और पीला हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया और मजदूर ने जब उससे हाथ मिलाया तो बोला—

"मैं फिर भी यह दोहराता हूं कि आपको पढ़ना और ज्यादा पढ़ना चाहिये ..."

"मैं तो हर क्षण ही शिक्षा पाता रहता हूं ..."

"आप तो कल्पना की ऊंची उड़ान भरनेवाले इंजीनियर बन सकते हैं।"

"कल्पना तो मेरे जीवन में अब भी आड़े नहीं आती ..."

"नमस्ते, इंजीनियर ..."

इंजीनियर अपनी मुड़ी-तुड़ी और लम्बी टांगों से धीरे-धीरे डग भरता तथा दायें हाथ की उंगलियों [illegible] पर दस्ताना चढ़ाता हुआ अव्यवस्थित वृक्षों के बीच [illegible] बेल-बूटों के बीच से गुजरता जा रहा था। [illegible] सीमा तक जाता [illegible] खड़ा रहकर वह यह [illegible] बंदूक में ताके के [illegible] हुए खड़े मजदूर से कहा—

"हमारा यह नामी इंजीनियर बहुत [illegible]!"

"लेकिन अभी उसमें वहुत दम-खम है!" मजदूर ने विश्वास के साथ ऊंचे स्वर में कहा। "उसकी खोपड़ी में काफ़ी आग धधक रही है..."

"अगली वार आपका भाषण कहां होगा?"

"वहीं, मजदूरों के भर्ती-केन्द्र में। आपने मेरा भाषण सुना है क्या?"

"तीन वार सुन चुका हूं, साथी..."

वड़े तपाक से हाथ मिलाकर वे दोनों विदा हुए। एक तो इंजीनियर की उलटी दिशा में चला गया और दूसरा सोच में डूबकर कुछ गुनगुनाता हुआ मेज से वर्तन उठाने लगा।

सफ़ेद पेशवन्द वांधे हुए स्कूल के छात्र-छात्राओं का एक दल सड़क के वीचोंवीच जा रहा था। उनसे शोर-गुल और ठहाकों की आवाजें चिंगारियों की तरह उड़ती आ रही थीं। आगे-आगे चलनेवाली जोड़ी कागज़ों के विगुल वनाकर उन्हें वजाती जा रही थी, अकासिया के वृक्ष उन पर हिम-धवल पंखुड़िया वरसा रहे थे। यों तो हमेशा ही, लेकिन वसन्त में ख़ास तौर पर वच्चों को देखकर मन हर्षोल्लास से यह चिल्लाने को हुलसता है –

"अरे ओ, वच्चो! तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल हो!"

१८

अगर जिन्दगी ऐसी हो गयी है कि आदमी को अपने बाप-दादों के खून-पसीने से उपजाऊ बनायी गयी धरती पर दो जून की रोटी नहीं मिलती और

इस सीधी-सादी और भयानक घटना को, जो मानो वास्तव से ली गयी है, हमारे समय से सात वर्ष पहले से आरम्भ करके अन्त तक सुनाना चाहिये। सात साल पहले सरासेना नामक पहाड़ी गांव में एर्मीनिया वाक्को नाम की एक हसीना रहती थी। उसका पति अमरीका चला गया था और वह सास-ससुर के पास रहती थी। स्वस्थ और काम में बड़ी चुस्त-फुर्तीली इस सुन्दरी की आवाज़ बड़ी सुरीली थी, खुशमिज़ाजी उसके खून में थी, वह हंसी-मज़ाक करती रहती थी और अपने सौन्दर्य की हल्की शोखी या चंचलता से गांव के नौजवानों तथा पहाड़ी लकड़हारों को अपना दीवाना बना देती थी।

शब्दों का खिलवाड़ करती हुई भी वह शादीशुदा औरत के नाते अपनी इज्जत-आबरू का दामन पाक रखती थी। उसके हंसी-मज़ाक बड़े विलासमय सपनों को जन्म देते, लेकिन कोई भी नौजवान उसका तन-मन जीत लेने की डींग नहीं मार सकता था।

यह तो आप जानते ही होंगे कि शैतान और बुढ़िया — यही सबसे ज्यादा ईर्ष्यालु होते हैं। एर्मीनिया के साथ थी उसकी सास और शैतान तो हमेशा वहां आ ही धमकता है जहां किसी बुराई की सम्भावना हो।

"पति के बिना तो तुम कुछ ज्यादा ही खुश रहती हो मेरी प्यारी बहू रानी, शायद मैं उसे यह लिख भेजूंगी। ध्यान रखना, तुम्हारी हर हरकत पर मेरी कड़ी नजर रहती है। भूलना नहीं कि तुम्हारी इज्जत-आबरू — हमारी इज्जत-आबरू है "

एमीलिया समझती थी कि पति के मौजूदगी पर उसके बड़ा बुरे हालत होनेवाले हैं।

अगले दिन सास मुर्गी खरीदने जाने के लिये बाजार को गयी और अपने कपड़े के नीचे कुल्हाड़ा छिपाकर एमीलिया भी उसके पीछे-पीछे चल दी। बाद में इस हसीना ने खुद ही आकर पुलिसवालों को यह बता दिया कि उसने अपने हाथों से सास की हत्या की है।

"बेकुसूर होते हुए भी कलंकिनी कहलाने के बजाय मुझे बन जाना कहीं ज्यादा अच्छा है," उसने कहा।

इस पर चलाये गये मुकदमे में उसी की जीत हुई – शहर की लगभग सारी आबादी ने उसी के हक में गवाही दी और बहुत-से लोगों ने तो रो-रोकर जूरी से कहा –

"वह बिल्कुल निर्दोष है, अकारण ही उसे बरबाद किया जा रहा है!"

किस्मत की मारी इस नारी के विरुद्ध केवल बड़े पादरी कोन्स्की ने ही आवाज़ बुलन्द की। एमीलिया का दामन पाक है, उसने इस पर यकीन करने से इनकार कर दिया, इस बात पर जोर दिया कि लोगों में प्राचीन परम्पराओं को बनाये रखना चाहिये, इस बात की चेतावनी दी कि चरित्रहीन औरत के सौन्दर्य के जादू में बंधकर उसे क्षमा कर देनेवाले एमीलिया की तरह वे भी भूल न करें। थोड़े में यह कि यह सब कुछ कहा जो कहना चाहिये था और शायद इसी की बदौलत एमीलिया को चार साल की कैद की सज़ा दे दी गयी।

एमीलिया के पति की भांति उसी साल का एक अन्य नौजवान

उस पर, वह चाहे मां ही क्यों न हो, यकीन नहीं करना चाहिये।

लगभग आधी गर्मी किसी भी तरह के झगड़ा-झगड़े के बिना शान्ति से बीत गयी। शायद सारी जिन्दगी ही ऐसे बीत जाती। लेकिन जब बेटा कुछ देर को भी घर में न होता तो बाप फिर से बहू के साथ छेड़-छाड़ करता। बहू ने जब लम्पट बूढ़े की ऐसी तंग करनेवाली हरकतों का विरोध किया तो वह जल-भुन गया – जवान बहू के शरीर का मजा लूटने से वह अचानक ही जो वंचित हो गया था। चुनांचे उसने बदला लेने की ठान ली।

"तुम तबाह हो जाओगी," उसने लेंज्का को धमकी दी।

"तुम भी," उसने जवाब दिया।

हमारे यहां बात कम की जाती है।

एक दिन के बाद पिता ने बेटे से कहा –

"तुम्हें यह मालूम है या नहीं कि तुम्हारी बीवी ने तुम्हारे साथ बेवफाई की है?"

बेटे के चेहरे का रंग उड़ गया और उसने सीधे उसकी आंखों में देखते हुए पूछा –

"आपके पास इसका कोई सबूत है क्या?"

"हां, जिन लोगों ने उसके साथ मजे लूटे हैं, उन्होंने मुझे बताया है कि उसके पेट के नीचे बड़ा-सा मस्सा है। है न ऐसा ही?"

"अच्छी बात है," दोनालो ने कहा। "चूंकि आप

दोनातो लपककर घर में गया, उसने बन्दूक ली और पिता जिधर मैन में गया था, उसी तरफ भाग चला। वहां उसने उससे वह सभी कुछ कहा जो ऐसे क्षण में एक पुरुष दूसरे पुरुष से कह सकता है और दो गोलियां चलाकर उसका काम तमाम कर दिया, लाश पर थूका और बन्दूक के दस्ते से उसकी खोपड़ी फोड़ डाली। कहते हैं कि वह देर तक मुर्दे की मिट्टी पलीद करता रहा, उसकी पीठ पर कूदता रहा और उस पर प्रतिशोध का नाच नाचता रहा।

इसके बाद उसने घर जाकर बन्दूक में गोलियां भरते हुए बीवी से कहा—

"चार कदम पीछे हट जाओ और भगवान का नाम ले लो ."

वह रोने-धोने और गिड़गिड़ाने लगी कि उसकी जान बख्श दी जाये।

"नहीं " उसने जवाब दिया, "मैं वैसे ही कर रहा हूं जैसे कि इन्साफ मांग करता है और जैसे मेरे अपराधी होने पर तुम्हें मेरे साथ करना चाहिये था "

उसने गोली चलाकर उसे पक्षी की भांति मार डाला और फिर जाकर अपने को पुलिस के हवाले कर दिया। जब वह गांव की सड़क पर से गुज़र रहा था तो लोग बड़ी इज्जत से उसे रास्ता दे रहे थे और बहुतों ने तो यह भी कहा—

"तुमने वही किया है, दोनातो, जो किसी बाइज्जत आदमी को करना चाहिये था "

अदालत में उसने आदिमकालीन आत्मा के विषादपूर्ण

जोश और असभ्य व्यक्ति की भद्दी वाक-पटुता से अपनी सफ़ाई पेश की –

"मैंने शादी इसलिये की थी कि बच्चे के रूप में अपने और उसके प्यार का सुफल पाऊं, जिसमें हम दोनों – वह और मैं जीवित रहें। जब आदमी प्यार करता है तो उसके लिये न पिता और न मां का ही कोई अस्तित्व होता है, अस्तित्व होता है प्यार का – और यह कि प्यार ही शाश्वत रहे। और जो मर्द तथा औरतें इस प्यार को कलंकित करते हैं, वे शापित होकर सन्तानहीन रह जायें, भयानक बीमारियों के शिकार हों और एड़ियां रगड़-रगड़कर मरें..."

सरकारी वकील ने जूरी से इस बात की मांग की कि वह दोनातो को गुस्से और झल्लाहट में हत्या करनेवाला हत्यारा घोषित करे, किन्तु जूरी ने उसे बरी कर दिया जिस पर लोगों ने खुशी से ज़ोरदार तालियां बजायीं और वह एक वीर, एक नायक की तरह सेनेर्किया लौटा। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उसका स्वागत किया गया जिसने इज़्ज़त पर बट्टा लगाने के लिये खून कर डालने की प्राचीन लोक परम्पराओं का कड़ाई से अनुकरण किया था।

दोनातो के मुक्त कर दिये जाने के कुछ समय बाद उसी के गांव की रहनेवाली एमीलिया ब्राक्को भी जेल से छूटकर आ गयी। जाड़े के उदास दिन थे, ईसा के जन्मदिन का पर्व निकट आ रहा था। इन दिनों में लोग खास तौर पर यह चाहते हैं

कि वे अपने लोगों के बीच, अपने प्यारे घर में ही हों। लेकिन एमीलिया और दोनातो एकाकी थे, क्योंकि उनकी ख्याति ऐसी ख्याति नहीं थी जिसके लिये लोगों के मन में स्थायी आदर की भावना पैदा हो। हत्यारा तो आखिर हत्यारा ही होता है, यह अचम्भे में डाल सकता है, किन्तु इससे अधिक कुछ नहीं। उसकी सफाई पेश की जा सकती है, लेकिन उससे प्यार कैसे किया जा सकता है? उन दोनों के हाथ खून से रंगे थे और दिल टूटे हुए। दोनों मुकदमे के भयानक नाटक का भी सामना कर चुके थे। इसलिये दुर्भाग्य के मारे इन दोनों व्यक्तियों में जब दोस्ती हो गयी, जब दोनों ने एक-दूसरे की तबाह जिन्दगी में कुछ रस भरना चाहा तो सेर्नारिया में किसी को जरा भी हैरानी नहीं हुई। दोनों जवान थे दोनों में प्यार की प्यास थी।

"अतीत की दुखद स्मृतियां लेकर हमारे यहां रहने से क्या तुक है?" पहले कुछ चुम्बनों के बाद दोनातो ने एमीलिया से कहा।

"अगर मेरा पति लौट आया तो वह मेरी हत्या कर डालेगा क्योंकि मैं मन ही मन तो अब उससे बेवफाई कर चुकी हूं" एमीलिया बोली।

इन दोनों ने यह तय किया कि जैसे ही सफर खर्च के लिये काफी पैसे जमा हो जायेंगे, वे महासागर पार चले जायेंगे। शायद उन्हें इस दुनिया में कहीं कुछ सुख और अमन-चैन की बंसी बजाने की कोई जगह भी मिल जाती लेकिन उनके आस-पास कुछ इस तरह से सोचनेवाले लोग भी थे—

"भावनाओं के वश होकर किसी की हत्या कर देने के लिये हम क्षमा भी कर सकते हैं, अपनी इज़्ज़त-आबरू को बचाने के लिये किये गये अपराध पर हमने तालियां भी बजायीं, लेकिन क्या अब ये लोग उन्हीं परम्पराओं का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं जिनकी रक्षा के लिये इन्होंने इतना अधिक रक्त बहाया?"

इस प्रकार के कठोर और विषादपूर्ण विचार दिन प्रति दिन अधिकाधिक ज़ोर पकड़ते गये और आख़िर एमीलिया की मां – सेराफ़ीना अमातो – के कानों तक जा पहुंचे। पचास साल की हो जाने पर भी उस गर्वीली और सख़्त जान औरत में पहाड़ी लोगों का सौन्दर्य सुरक्षित था।

शुरू में तो उसने इन अपमानजनक अफ़वाहों पर विश्वास नहीं किया।

"यह तो सिर्फ़ कीचड़ उछाला जा रहा है," उसने लोगों से कहा, "क्या आप भूल गये हैं कि अपनी इज़्ज़त-आबरू को बचाने के लिये मेरी बेटी ने कैसी-कैसी मुसीबतें सही हैं!"

"नहीं, हम तो नहीं, मगर वह यह भूल गयी है," लोगों ने जवाब दिया।

तब दूसरे गांव में रहनेवाली सेराफ़ीना अपनी बेटी के पास पहुंची और बोली –

"मैं यह नहीं चाहती हूं कि तुम्हारे बारे में ऐसी बातें कही जायें, जैसी कि कही जा रही हैं। अतीत में तुमने जो कुछ किया था, वह हत्या के बावजूद एक अच्छा और इज़्ज़त का काम था। उसे एक सबक़ की तरह लोगों के लिये ऐसे ही बने रहना चाहिये।"

बेटी यह कहती हुई रो पड़ी –

"सारी दुनिया लोगों के लिये है, लेकिन अगर लोग खुद अपने लिये नहीं हैं तो उनके अस्तित्व का अर्थ ही क्या है?"

"अगर तुम इतनी बुद्धू हो कि यह नहीं जानती तो जाकर पादरी से पूछ लो," मां ने जवाब दिया।

इसके बाद वह दोनातो के पास गयी और उसे भी एक जोरदार चेतावनी दी –

"मेरी बेटी से दूर रहो, वरना तुम्हारा बुरा हाल होगा!"

"मेरी बात सुनिये," दोनातो उससे गिड़गिड़ाने लगा। "अपनी ही तरह सिल्वना को सारी दुनिया से ज्यादा सदा के लिये प्यार करने लगा हूं। आप मुझे इसे किसी दूसरी जगह पर कहीं दूर अपने साथ ले जाने की अनुमति दे दें और तब सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा।

उसके इन शब्दों ने तो जलती आग में तेल डालने का ही काम किया।

"तुम लोग भाग जाना चाहते हो?" मंगार्दीना चीखी और हताशा से चिल्ला उठी। "नहीं, यह नहीं होगा!"

वे दरिन्दों की भांति चीखने-चिल्लाने और अंगारों के समान जलती आंखों से एक-दूसरे को देखते हुए चार दुश्मनों की तरह अलग हुए।

इस दिन से मंगार्दीना इन प्रेमियों पर ऐसे ही नजर रखने लगी जैसे समझदार कुत्ता शिकार पर। लेकिन इससे प्रेम करने वालों को चुपके-छिपकर मिलने में बाधा नहीं पड़ती, [illegible] जानवर जैसी चालाकी और होशियारी होती है।

वह कई मिनट तक ऐसे ही खड़ी रही और लोगों ने सम्भलने पर जब उसे पकड़ लिया तो वह किसी उन्मादी के समान खुशी से चमकती आंखों को आसमान की ओर उठाकर ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना करने लगी—

"सन्त मादवन्न, तुम्हें धन्यवाद देती हूँ! तुम्हीं ने मुझे, एक नारी, अपनी बेटी की इज्जत पर लगे कलंक के दोषी का बदला लेने की शक्ति दी!"

जब उसे यह पता चला कि डोनातो जिन्दा है और उसे कुर्सी पर बिठाकर उसके भयानक घावों पर मरहम-पट्टी करने के लिये दवाखाने में ले जाया गया है तो वह थरथर कांपने लगी और भय से ओत-प्रोत, पागलों जैसी आंखों को इधर-उधर घुमाते हुए कह उठी—

"नहीं, नहीं, मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है, वह मर जायेगा, यह आदमी जरूर मर जायेगा! मेरे हाथ जानते हैं कि मैंने कितने ज़ोरदार प्रहार किये हैं। भगवान न्यायशील है और इसलिये इस व्यक्ति को अवश्य ही मर जाना चाहिये!"

जल्द ही इस औरत पर मुकदमा चलाया जायेगा और जाहिर है कि उसे कड़ी सजा भी दी जायेगी। लेकिन ऐसे व्यक्ति को कोई भी दण्ड क्या सबक देगा जो दूसरों पर प्रहार करने और उन्हें घायल कर देने को अपना अधिकार मानता है? बात यह है कि हथौड़े की चोटें पड़ने से लोहा नर्म तो नहीं हो जाता।

लोगों का निर्णय किसी व्यक्ति से कहता है—

"तुम अपराधी हो!

यह व्यक्ति इसे स्वीकार कर सकता है या इससे इन्कार कर सकता है और स्थिति वैसी ही रहती है जैसे पहले थी।

और प्यारे महानुभावो, अन्त में यह भी तो कहना चाहिये कि आदमी को वहीं बढ़ना और फूलना-फलना चाहिये जहां भगवान ने उसे जन्म दिया हो, जहां की धरती और जहां पर उसकी प्रियतमा उसे प्यार करती हो...



२६

बूढ़े जियोवान्नी तूया ने जवानी के शुरू में ही धरती से बेवफाई करके सागर को अपना दिल दे दिया था। उस नीले विस्तार को जो कभी तो लड़की की

यह व्यक्ति इसे स्वीकार कर सकता है या इससे इन्कार कर सकता है और स्थिति वैसी ही रहती है जैसे पहले थी।

और प्यारे महानुभावो, अन्त में यह भी तो कहना चाहिये कि आदमी को वहीं बढ़ना और फूलना-फलना चाहिये जहां भगवान ने उसे जन्म दिया हो, जहां की धरती और जहां पर उसकी प्रियतमा उसे प्यार करती हो...



१६

बूढ़े जियोवान्नी तूवा ने जवानी के शुरू मे ही धरती मे वेवफाई करके सागर को अपना दिल दे दिया था [illegible] उस [illegible] विस्तार को जो कभी न [illegible] हो

नज़र की भांति स्नेहपूर्ण और शान्त होता है, कभी प्यार के दीवाने नारी-हृदय की भांति अत्यधिक उद्विग्न। उसने अपना दिल दे दिया था रेगिस्तान जैसे सागर-विस्तार को जो मछलियों के लिये सर्वथा अनावश्यक सूर्य-किरणों को निगल जाता है, जो सजीव सुनहरी रवि-किरणों के घनिष्ठ सम्पर्क से सौन्दर्य और आंखों को चौंधियाती चमक के अतिरिक्त अन्य किसी भी चीज को जन्म नहीं देता। वह प्यार करने लगा था उस कपटी सागर को जो निरन्तर कुछ न कुछ गाता-गुनगुनाता रहता है और अपने विस्तारों में दूर-दूर तक जाने की अदम्य चाह उत्पन्न करता है। अनेक लोगों को वह पथरीली और मूक धरती से अलग कर देता है जो आकाश से इतनी अधिक नमी की मांग और लोगों से इतने अधिक फलप्रद श्रम की अपेक्षा करती है और बदले में कम, बहुत कम खुशी देती है।

तूबा अभी छोकरा ही था और जब पहाड़ी ढाल पर भूरे पत्थरों की दीवारों से मज़बूत किये गये अंगूरों के बगीचे में, इजीरों के फैले शाखा-करों, जैतून की गढ़ी-सी पत्तियों, सन्तरों के गहरे हरे पेड़ों और अनारों की उलझी-उलझायी डालों के बीच, तेज धूप में, जलती धरती पर और फूलों की सुगन्ध में काम करता था, उस समय भी वह नथुनों को फुलाकर एक ऐसे व्यक्ति की दृष्टि से सागर की नीलिमा को देखता था जिसके पांव धरती पर मज़बूती से न जमे हों, जिसके पैरों तले धरती डोलती हो, पिघलती और तैरती हो। वह सलोनी हवा को सांसों में भरता हुआ सागर को ताकता रहता, उस पर नशा तारी हो जाता, वह खोया-सा रहने लगा, काहिल और मनमानी करने-

वाला होता गया जैसा कि उनके साथ होता है जिन पर सागर का जादू चल जाता है, जिन्हें सागर पुकारता है और जो जी-जान से उसको प्यार करने लगते हैं

और छुट्टियों के दिन तो सूरज जब पहाड़ों के पीछे से मोरेन्टी के ऊपर उठता ही था और आकाश खूबानियों के फूलों से बुना हुआ-सा गुलाबी-गुलाबी होता था, झबरीले कुत्ते की तरह अस्त-व्यस्त बालोंवाला युवा कंधों पर बंसिया रखे हुए एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदता और ऐसा करते समय अस्थिहीन लचीली मांस-पेशियों का बंडल-सा प्रतीत होता हुआ नीचे सागर की तरफ भागता जाता। झाइयों के कारण लाल हुए उसके चेहरे पर बड़ी-सी मुस्कान खिल उठती, और सुबह की स्वच्छ हवा में पलक खोलनेवाले फूलों की मधुर सुगन्ध को दबाती हुई सागर की तेज गन्ध और तट के पत्थरों से गले मिलती लहरों की धीमी मर्मर ध्वनि उसकी ओर उड़ आती और वे लहरें युवतियों की तरह ही उसे अपनी ओर खींचती थे लहरें

लीजिये अब वह गुलाबी झलक लिये भूरी चट्टान पर बैठा है, उसकी फार्म के रंग जैसी टांगें लटक रही हैं कांचे आलूबुखारों जैसी काली और बड़ी-बड़ी आंखें पारदर्शी तथा तनिक हरे पानी की थाह ले रही हैं। उसके तरल शीशे से वे ऐसी अनूठी-अद्भुत दुनिया को देख रही हैं जो सभी परी-कथाओं से बढ़-चढ़कर है। वे देख रही हैं सागर-तल में [illegible] में हरे पत्थरों के बीच लाल-सुनहरी पतझाड़ियां। [illegible] वे घने वन में से तरह-तरह की मछलियां तैरती दिखाई [illegible]

है। सागर के जीवित पुष्प कहलानेवाली रंग-बिरंगी "बायोली" मछलियां, भोंदुओं जैसी आंखों, चित्रित नाक और पेट पर हल्की नीली चित्तियोंवाली "पेर्कीया" मछली नशे में धुत्त पियक्कड़ की तरह सामने आती है, सुनहरी "सार्पा" अपनी झलक दिखाती है, धारीदार और साहसी "कान्यी" नजर आती हैं, खुशमिज़ाज नन्हे-नन्हे शैतानों की तरह काले रंग की "ग्वर्री-चीनी" मछलियां तेज़ी से इधर-उधर लपकती दिखाई देती हैं, चांदी की तश्तरियों की तरह चमकती हैं "स्पराल्योनी" तथा "ओक्याती" मछलियां और अनेकानेक अन्य सुन्दर मछलियां भी दिखाई देती हैं जिनकी गिनती करना सम्भव नहीं! ये सभी बहुत चालाक हैं और कांटे पर लगे कीड़े को अपने गोल मुह में लेने के पहले बड़ी होशियारी से उसमें अपने छोटे-छोटे दांत गड़ाकर उसे आजमाती हैं। बहुत ही समझदार हैं ये मछलियां!

इस उजले और सुखद पानी में मूंछोंवाले झींगे हवा में उड़नेवाले पक्षियों की तरह तैरते हैं, बेल-बूटोंवाले सीपी-घर को अपने पीछे-पीछे खींचते हुए तपस्वी केकड़े पत्थर पर रेंगते हैं, रक्त की तरह लाल समुद्री तारे धीरे-धीरे चलते हैं, बैंगनी छत्रिक चुपचाप झूलते हैं, तीखे दांतोंवाले मुरेन की भयंकर सूरत कभी-कभार किसी पत्थर के पीछे से सामने आती है, उसका रंग-बिरंगा और लाल चित्तियोंवाला सांप जैसा शरीर बल खाता दिखाई देता है। वह लोक-कथाओं की चुड़ैल के समान है, किन्तु उससे भी अधिक भयानक और बदसूरत। अचानक भूरा ओक्टोपस एक गन्दे चिथड़े की तरह पानी में फैल

जाता है और शिकारी परिन्दे की तरह किसी दिशा में भागता है। लेकिन लोब्स्टर नाम की बागुरियों जैसी अपनी बहुत ही लम्बी-लम्बी मूंछों को हिलाता-डुलाता हुआ धीरे-धीरे चलता है। और सागर की तरह निर्मल, किन्तु उसकी तुलना में कहीं अधिक स्निग्ध आकाश के नीले पारदर्शी जल में अनेकानेक अन्य अजूबे भी विद्यमान हैं।

सागर साँस ले रहा है—उसका आसमानी रंग का वक्ष लयबद्ध ढंग से ऊपर उठता है। श्वेत फेन से ढकी हरी लहरें उस चट्टान से टकराती हैं जिस पर तूबा बैठा है, ये खिलवाड़ करती हैं, चट्टान से टकराकर बिखरती हैं और मचलती हैं। वे लड़के के पाँव छू लेना चाहती हैं, कभी-कभी उन्हें इसमें सफलता भी मिल जाती है, लीजिये, वह सिहरकर मुस्करा दिया—लहरें खुश हैं, वे भी हँसती हैं, चट्टान से ऐसे पीछे भागती हैं मानो डर गयी हों और फिर से चट्टान की ओर दौड़ती हैं। सूरज की एक किरण चटक रंग की डोर-सी बनाती लहरों के वक्ष को प्यार से चीरती हुई पानी में गहरी उतर गयी है। कुछ भी न सोचती, कुछ भी समझने की चाह न रखती, चुपचाप और खुशी से उसी के आनन्द में लीन होती हुई जो वह देख रही है, तूबा की आत्मा भी मीठी नींद सो रही है। उसमें भी सुख उजली लहरें उठ रही हैं और सर्वव्यापी यह आत्मा सागर की भांति ही सीमाहीन रूप से स्वतन्त्र है।

ऐसे बिताता था तूबा अपनी छुट्टियां और फिर तो सागर हर दिन ही उसे अपनी ओर बुलाने लगा। बात यह है कि जब सागर आदमी के दिल में जगह बना लेता है तो खुद वह भी

उसका वैसे ही अंग बन जाता है जैसे दिल ज़िन्दा इन्सान का। चुनांचे अपनी ज़मीन भाई को सौंपकर तूबा सागर-विस्तारों के अपने जैसे दीवानों के साथ मूंगे निकालने का काम करने के लिये सिसली के तट पर चला गया। यह कठिन, किन्तु बहुत प्यारा काम है। दिन में दस बार आदमी के डूब जाने का ख़तरा पैदा हो सकता है, लेकिन जब किनारों पर लौह-दन्ती अर्ध-चक्राकार भारी जाल ऊपर आता है तो उसमें आश्चर्यचकित करनेवाली कितनी चीज़ें देखी जा सकती हैं। मस्तिष्क के विचारों की भांति उसमें तरह-तरह के आकार-प्रकार और रंगों की चीजें हिलती-डुलती रहती हैं और उनके बीच में होती हैं बहुमूल्य मूंगों की गुलाबी डालियां। यही तो होता है सागर का उपहार!

सागर के जादू से बंधा हुआ तूबा सदा के लिये धरती से विरक्त हो गया। नारियों को भी वह मानों ऊंघते-ऊंघते, कुछ ही देर को और चुपचाप प्यार करता। वह उनके साथ उन्हीं चीजों की बातें कर पाता जिनसे परिचित था यानी मछलियों और मूंगों की, लहरों के खिलवाड़, हवा की सनकों और अनजाने सागरों में जानेवाले जहाज़ों की। धरती पर वह झेंपता, फूंक-फूंककर कदम रखता, लोगों पर भरोसा न करता, उनके साथ मछली की तरह ख़ामोश रहता, उन्हें ऐसे व्यक्ति की पैनी नज़रों से देखता, जो कपटी गहराइयों को देखने और उन पर भरोसा न करने का अभ्यस्त हो। लेकिन सागर में वह शान्त और प्रसन्न रहता, साथियों का ध्यान रखता और डेल्फ़िन की तरह चुस्त-फुर्तीला बन जाता।

यों इन्सान अपने लिये चाहे कितनी भी अच्छी जिन्दगी न चुने, वह कुछ ही सालों तक चल पाती है। समुद्री पानी में पूरी तरह रचे-बसे तूबा ने जब अस्सी वर्ष की आयु-सीमा लांघी तो गठिये से नाकाम हुए उसके हाथों ने काम करने से इन्कार कर दिया और मानो कहा – बस काफी है! उसकी टेढ़ी-मेढ़ी हो चुकी टांगें बड़ी मुश्किल से ही उसकी भूरी चमड़ेवाले शरीर का बोझ सम्भाल पाती थीं। तब सागर में सभी तरह के तूफानों का सामना कर चुका बूढ़ा तूबा दुखी मन से द्वीप पर उतरा और पहाड़ पर अपने भाई के झोंपड़े में उसके बेटे-बेटियों और नाती-पोतों के बीच पहुंचा। ये लोग इतने अधिक गरीब थे कि इनसे उदारता की आशा ही नहीं की जा सकती थी। इसके अलावा तूबा अब पहले की भांति उनके लिये लजीज मछलियां भी नहीं ला सकता था।

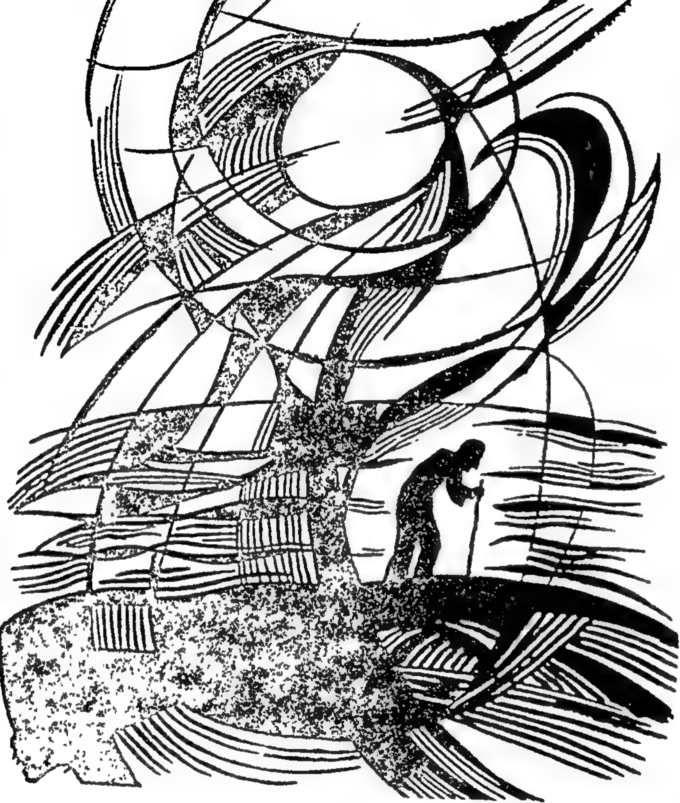
इन लोगों के बीच बूढ़े को अपनी जिन्दगी बोझ-सी लगने लगी। अपने टेढ़े-मेढ़े और सांवले हाथ से दांतों के बिना पोपले मुंह में वह रोटी के जो टुकड़े डालता, उन पर इन लोगों की कड़ी नजर रहती। शीघ्र ही वह समझ गया कि इन लोगों के बीच उसके लिये कोई जगह नहीं है। उसकी आत्मा पर काली घटा-सी छा गयी, दुख ने हृदय को दबोच लिया, धूप से गहरी हुई उसकी त्वचा पर झुर्रियां और अधिक गहरी हो गयीं तथा हड्डियां अनजानी-अपरिचित पीड़ा से टीसने लगीं। सुबह से शाम तक वह झोंपड़े के दरवाजे के पास पत्थरों पर बैठा हुआ बुढ़ापे की मारी मन्द ज्योतिवाली अपनी आंखों से चमचमाते सागर को देखता रहता जहां उसकी जिन्दगी बीती थी। उस

नीलिमा को, सूरज की चमक में सपने की तरह सुन्दर सागर को निहारता रहता।

बहुत दूर था वह सागर से और बहुत कठिन था उसके लिये उसके तट तक पहुंचना। किन्तु उसने हिम्मत जुटाई और एक शान्त शाम को नुकीले पत्थरों पर कठिनाई से रेंगनेवाली घायल छिपकली की तरह पर्वत से नीचे उतर चला। जब वह लहरों के निकट पहुंचा तो उन्होंने लोगों की आवाज़ों से कहीं अधिक स्नेहपूर्ण चिरपरिचित मरमर ध्वनि और पृथ्वी के मृत पाषाणों पर खुशी से उछलते-कूदते हुए उसका स्वागत किया। तब जैसा कि लोगों ने बाद में अनुमान लगाया, बूढ़े ने घुटने टेककर आसमान और दूरी की ओर देखा, कुछ देर तक तथा चुपचाप सभी लोगों के लिये, जो उसके हेतु समान रूप से पराये थे, प्रार्थना की, अपनी हड्डियों पर से चिथड़े उतारे, अपनी होते हुए भी परायी चमड़ी को पत्थरों पर रखा और पानी में प्रवेश किया। सफ़ेद बालोंवाले सिर को झटककर लहरों पर चित लेट गया और आसमान को ताकता हुआ वहां दूर तैर चला, जहां आकाश का गहरा नीला आवरण अपने छोर से सागर की लहरों के काले मखमल को छूता है और सितारे सागर के इतने अधिक निकट होते हैं कि ऐसे लगता है—हम आसानी से उन्हें हाथ से पकड़ सकते हैं।

गर्मियों की शान्त रातों में सागर ऐसे ही चैनभरा होता है जैसे दिन भर खेलने-कूदने के कारण थके हुए बालक की आत्मा। वह धीमी-धीमी सांसें लेता हुआ निद्रामग्न होता है और शायद प्यारे-प्यारे सपने देखता है। अगर उसके गाढ़े और गुनगुने पानी

में तैरा जायें तो हाथों के नीचे नीली चिनगारियाँ-सी जलती हैं, सभी ओर से नीली लपट-सी घेर लेती है और मानव की आत्मा इस स्नेहमयी लपट में ऐसे ही लीन हो जाती है जैसे माँ द्वारा सुनायी जानेवाली परी-कथा में।



२०

पावन शान्ति में सूर्योदय हो रहा है और सुनहरे भटकटैया पुष्पों की मधुर सुरभि से लहका-महका हुआ नीलगूं कुहासा पाषाणी द्वीप से ऊपर, आकाश की ओर

उड़ रहा है।

आकाश के पीले चदवे के नीचे, अलसाये-उनींदे पानी के काले मखमल विस्तार में द्वीप सूर्य भगवान की बलि-वेदी जैसा लगता है।

सितारों की झिलमिलाती पलकें अभी-अभी मुंदी हैं, किन्तु शुभ्र शुक्र तारा धुंधले-धूमिल आकाश के ठण्डे विस्तार में नोंकदार बादलों की पारदर्शी पात के ऊपर अभी भी जगमगा रहा है। बादलों में हल्का-हल्का गुलाबी रंग घुला हुआ है और पहली सूर्य किरणों में वे हल्के-हल्के चमक रहे हैं। सागर के शान्त वक्ष पर उनका प्रतिबिम्ब बिल्कुल ऐसे लग रहा है मानों कोई सीपी पानी की नीली गहराइयों में से निकलकर ऊपर सतह पर आ गयी हो।

रुपहले ओसकणों से बोझिल हुए घास के डण्ठल और फूलों की पंखुड़ियां सूर्य के स्वागत को सिर ऊपर उठाती हैं। शबनम की चमकती हुई बूंदें डण्ठलों के सिरों पर लटकती हैं, बड़ी होती हैं और नींद की गर्मी में पसीने से तर हुई भूमि पर गिर जाती हैं। मन होता है कि उनकी धीमी-धीमी टपटप सुनायी देती रहे और ऐसा न होने पर जी उदास हो जाता है।

पक्षी जाग गये हैं, जैतून के पत्तों के बीच वे इधर-उधर उड़ रहे हैं, चहचहाते हैं और नीचे से सूर्य द्वारा जगा दिये गये सागर की भारी-भारी उसांसें ऊपर पर्वत तक पहुंच रही हैं।

फिर भी नीरवता है—लोग अभी सो रहे हैं। सुबह की ताजगी में फूलों और घासों की गन्ध-सुगन्ध को ध्वनियों की तुलना में अधिक अच्छी तरह से अनुभव किया जा सकता है

सागर की हरी लहरों से घिरी नाव की भांति अंगूर-लताओं में घिरे हुए सफ़ेद घर के दरवाजे से एत्तोरे चेक्को नाम का बूढ़ा सूर्य-स्वागत को बाहर आता है। लोगों से कतरानेवाले इस एकाकी बूढ़े के हाथ बन्दरों की तरह लम्बे हैं, उसकी नंगी चांद किसी बड़े बुद्धिमान जैसी है और उसके चेहरे पर समय ने ऐसा हल चलाया है कि पिलपिली, गहरी झुर्रियों में उसकी आंखें लगभग दिखाई नहीं देती हैं।

अपने काले बालों से ढके हाथ को धीरे-धीरे माथे तक उठाकर वह गुलाबी होते हुए आकाश को देर तक देखता है, इसके बाद अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ाता है। उसके सामने, द्वीप की भूरी-बैंगनी चट्टानों पर विस्तृत हरी और सुनहरी रंग-छटा फैली हुई है, गुलाबी, पीले और लाल फूल अपनी चमक दिखा रहे हैं। बूढ़े का सांवला चेहरा मृदुल-मधुर मुस्कान से सिहर उठता है, वह अपने गोल और भारी सिर को झुकाकर अपनी प्रसन्नता प्रकट करता है।

बूढ़ा चेक्को पीठ को तनिक झुकाये और पैरों को फैलाये हुए ऐसे खड़ा है मानो उसने कोई बोझ उठा रखा हो। उसके इर्द-गिर्द नवोदित दिन अधिकाधिक सजता-संवरता जाता है, अंगूर-लताओं की हरियाली में कुछ अधिक चमक आ गयी है, गोल्डफिंच और सिसकिन चिड़िया अधिक ज़ोर से अपना तराना गा रहे हैं, करौंदों और स्पर्ज के झुरमुटों में बटेर अपने पंख फड़फड़ा रहे हैं तथा नेपल्सवासियों की तरह बांका-छैला और मस्त-फक्कड़ ब्लैकबर्ड कहीं पर अपनी तान छेड़ रहा है।

बूढ़ा चेक्को अपने थके हुए लम्बे हाथों को सिर के ऊपर

उठाकर ऐसे अगड़ाई लेता है मानो नीचे सागर की ओर उड़ जाना चाहता हो जो जाम में ढली हुई शराब की भांति शान्त है।

पुरानी हड्डियों को ऐसे सीधा करने के बाद वह दरवाज़े के निकट एक पत्थर पर बैठा जाता है, जाकेट की जेब से एक पोस्टकार्ड निकालता है, पोस्टकार्ड थामे हुए हाथ को आंखों से दूर हटाता है, आंखें सिकोड़ लेता है और कुछ कहे बिना होंठों को हिलाते हुए पोस्टकार्ड को बहुत गौर से देखता है। उसके बड़े, बहुत दिनों से बिना दाढ़ी बने, सफ़ेद खूंटियों के कारण रुपहले-से प्रतीत होनेवाले चेहरे पर एक नई मुस्कान खिल उठती है। इस मुस्कान में प्यार, दुख-दर्द और गर्व—ये सब अजीब ढंग से घुल-मिल गये हैं।

पोस्टकार्ड पर नीली स्याही से चौड़े-चकले कंधोंवाले दो नौजवानों के चित्र बने हुए हैं। वे कंधे से कंधा मिलाये हुए बैठे हैं और मुस्करा रहे हैं। उनके बाल घुंघराले हैं और सिर चेक्को के सिर की तरह बड़े-बड़े। उनके सिरों के ऊपर मोटे-मोटे और साफ अक्षरों में यह छपा हुआ है—

"आर्तूरो और एनरीको चेक्को अपने वर्ग-हितों के लिये संघर्ष करनेवाले दो उदात्त योद्धा। उन्होंने कपड़ा-मिलों के उन २५,००० मजदूरों को संगठित किया जिनकी मजदूरी ६ डालर प्रति सप्ताह थी और इसके लिये उन्हें जेल भेज दिया गया। सामाजिक न्याय के लिये संघर्ष करनेवाले जिन्दाबाद!"

बूढ़ा चेक्को अनपढ़ है और उक्त शब्द लिखे भी हुए हैं पराये भाषा में। किन्तु जो कुछ लिखा हुआ है, उसे वह ऐसे

ही जानता है मानो हर शब्द से परिचित हो और वह बिगुल की तरह ऊंचे-ऊंचे और गा-गाकर अपना अर्थ बताता हो।

इस नीले पोस्टकार्ड ने बूढ़े के लिये काफ़ी चिन्ता और परेशानी पैदा कर दी थी। यह पोस्टकार्ड उसे दो महीने पहले मिला था और पिता की सहज अनुभूति से उसने उसी क्षण यह अनुभव कर लिया था कि लक्षण कुछ अच्छे नहीं हैं। कारण यह कि गरीब लोगो के फ़ोटो तो तभी छापे जाते हैं जब वे क़ानून का उल्लंघन करते हैं।

कागज़ के इस टुकड़े को चेक्को ने अपनी जेब में छिपा लिया, लेकिन वह उसके दिल पर एक बोझ-सा बन गया और यह बोझ हर दिन बढ़ता चला गया। कई बार उसका मन हुआ कि पादरी को यह पोस्टकार्ड दिखा दे, किन्तु जीवन के लम्बे अनुभव ने उसे इस बात का विश्वास दिला दिया था कि जनता का यह कहना बिल्कुल सही है—"हो सकता है कि लोगों के बारे में पादरी भगवान को तो सचाई बताता है, किन्तु लोगों से कभी सच नहीं बोलता।"

इस पोस्टकार्ड का रहस्यपूर्ण अर्थ उसने सबसे पहले लाल बालोंवाले एक विदेशी चित्रकार से ही पूछा। लम्बा-तड़ंगा और दुबला-पतला यह जवान चित्रकार अक्सर चेक्को के घर के पास आता था और चित्र-फलक को सुविधाजनक ढंग से टिकाकर आरम्भ किये हुए चित्र की चौकोर छाया में उसके पास ही लेटकर सोया करता था।

"महानुभाव," उसने चित्रकार से पूछा, "इन लोगों ने क्या हरकत की है?"

चित्रकार ने बूढ़े के बेटों के छिपे हुए चेहरों को ध्यान से देखा और बोला –

"जरूर कोई हँसी-मजाक की बात कही है।"

"इसके बारे में यहाँ क्या छपा हुआ है?"

"यह तो अंग्रेजी भाषा में है। अंग्रेजों के अलावा उनकी भाषा केवल भगवान ही समझता है। हाँ, मेरी पत्नी भी समझती है, अगर वह इस मामले में सचाई बताने की कृपा करेगी। बाकी दूसरे सभी मामलों में तो वह झूठ ही बोलती है."

चित्रकार सिस्किन पक्षी की तरह ही बातूनी था और शायद किसी भी चीज की गम्भीरता से चर्चा नहीं कर सकता था। बूढ़ा उदास होकर उसके पास से चला गया और अगले दिन उसकी बीवी के पास पहुँचा। बड़ी मोटी-सी यह श्रीमती चौड़ा और पारदर्शी सफेद फ्रॉक पहने हुए बाग में झूलेवाली खाट पर लेटी हुई मानो गर्मी से पिघल-सी रही थी और उसकी नीली आँखें नीले आकाश को नाराजगी से ताक रही थी।

"इन लोगों को जेल भेज दिया गया है," उसने टूटी-फूटी इतालवी भाषा में बताया।

बूढ़े के पाँव ऐसे काँप उठे मानो किसी झटके से सारा शरीर ही डोल उठा हो। फिर भी उसने हिम्मत बटोरकर पूछ ही लिया –

"इन्होंने चोरी की है या हत्या?"

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं। वे तो बस, समाजवादी हैं।

"कौन होते है ये समाजवादी?"

"यह – राजनीति की बात है," श्रीमती ने मट्ठी-सी आवाज में जवाब दिया और आंखें मूंद लीं।

चेक्को जानता था कि विदेशी सबसे ज़्यादा बुद्धू लोग हैं, कलाब्रिया के लोगों से भी अधिक नासमझ। किन्तु वह अपने बेटों के बारे में सचाई जानना चाहता था और इसलिये देर तक यह प्रतीक्षा करता हुआ श्रीमती के पास खड़ा रहा कि कब वह अपनी बड़ी-बड़ी और अलसायी आंखों को खोलती है। और आखिर जब ऐसा हुआ तो उसने पोस्टकार्ड पर उंगली रखकर पूछा –

"यह ईमानदारी का काम है न?"

"मुझे मालूम नहीं," उसने खीझा-सा जवाब दिया। "मैं तुमसे कह चुकी हूं कि यह राजनीति है, समझे?"

नहीं, बूढ़ा चेक्को यह समझने में असमर्थ था। बात यह थी कि रोम में मन्त्री और धनी-मानी लोग राजनीति का इसलिये उपयोग करते थे कि गरीब लोगों से ज़्यादा कर ऐंठ सकें। लेकिन उसके बेटे तो मजदूर थे, अमरीका में रहते थे, भले नौजवान थे – उन्हें क्या मतलब हो सकता था राजनीति से?

बेटों का चित्र हाथ में लिये हुए वह रात भर बैठा रहा। चांदनी में वह और भी अधिक काला लगता था तथा उसके मन में और भी ज्यादा बुरे-बुरे ख्याल आते थे। सुबह को उसने पादरी से समाजवादी का मतलब पूछने का निर्णय किया। काला लबादा पहने पादरी ने बड़ी कड़ाई से और नपा-तुला यही उत्तर दिया –

"समाजवादी – वही लोग हैं जो भगवान की इच्छा से

इन्कार करते है। तुम्हारे लिये इतना जान लेना ही काफी है।"

इसके बाद पहले से भी ज्यादा कड़ाई के साथ इतना और जोड़ दिया –

"तुम्हारी उम्र मे ऐसी बातो मे दिलचस्पी लेना शर्म की बात है! "

"यही अच्छा हुआ कि मैने उसे चित्र नही दिखाया," चेक्को ने सोचा।

तीन दिन और बीत गये। तब वह बांके-छैले और चचल मिजाजवाले नाई के पास गया। जवान गधे की तरह हट्टे-कट्टे इस नौजवान के बारे मे यह कहा जाता था कि वह पैसो के बदले मे उन बूढी अमरीकी औरतो के साथ प्रेम-क्रीडा करता था जो मानो सागर-सौन्दर्य का रसपान करने के लिये यहा आती थी, किन्तु जिनका वास्तविक उद्देश्य गरीब इतालवी जवानो के साथ गुलछर्रे उड़ाना होता था।

"हे भगवान!" शीर्षक पढते ही यह घटिया आदमी खुशी से चिल्ला उठा और उसके गालो पर प्रसन्नता की लाली दौड गयी। "ये तो मेरे मित्र आर्तूरो और एनरीको है! चाचा एत्तोरे, मै आपको और खुद अपने को भी सच्चे दिल से बधाई देता हू! मेरे अपने ही नगर के दो अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति है – कैसे कोई इन पर गर्व किये बिना रह सकता है?"

"फालतू बाते नही करो," बूढे ने उसे डाटा।

लेकिन वह हाथो को जोर से हिलाता-डुलाता हुआ चिल्ला उठा –

"कमाल ही हो गया!"

"उनके बारे में क्या छपा हुआ है?"

"मैं पढ़ तो नहीं सकता, लेकिन मुझे यक़ीन है कि सचाई ही छपी हुई है। गरीबों के बारे में अगर आख़िर सचाई छापी गयी है तो वे अवश्य ही बड़े वीर होंगे!"

"चुप रहो, तुम्हारी मिन्नत करता हूं," चेक्को ने कहा और पत्थरों पर अपने खड़ाऊंओं को जोर से बजाता हुआ वहां से चला गया।

वह उस रूसी महानुभाव के पास गया जिसके बारे में कहा जाता था कि वह दयालु और ईमानदार आदमी है। वह उसकी चारपाई के पास बैठ गया जिस पर लेटा हुआ वह धीरे-धीरे मृत्यु-द्वार की ओर बढ़ रहा था। उसने रूसी से पूछा–

"इन लोगों के बारे में यहां क्या कहा गया है?"

बीमारी से कान्तिहीन हुई और दुख में डूबी आंखों को सिकोड़कर रूसी ने धीमी-धीमी आवाज में वह पढ़ा जो पोस्टकार्ड में लिखा हुआ था और फिर बूढ़े की ओर देखकर खूब खुलकर मुस्करा दिया। बूढ़े ने रूसी से कहा–

"महानुभाव, आप देख रहे हैं कि मैं बहुत बूढ़ा हो चुका हूं और शीघ्र ही अपने भगवान के पास चला जाऊंगा। वहां जब मदोन्ना मुझसे यह पूछेगी कि मेरे बच्चों का क्या हालचाल है, तो मुझे सब कुछ सच-सच और सविस्तार बताना होगा। इस पोस्टकार्ड में अंकित ये मेरे बेटे हैं, लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा कि उन्होंने क्या किया है और क्यों वे जेल में हैं?"

तब रूसी ने बहुत गम्भीरता से उसे यह सीधी-सादी सलाह दी–

'मदोन्ना से कह दीजियेगा कि आपके बेटों ने उनके बेटे के मुख्य आदेश का सार बहुत अच्छी तरह समझ लिया है – वे अपने निकटवालों को सच्चे मन से प्यार करते हैं .. "

झूठ को सीधे-सादे ढंग से नहीं कहा जा सकता – उसके लिये भारी-भरकम शब्दों और अनेक अलंकारों की आवश्यकता होती है। इसलिये बूढ़े ने रूसी की बात पर यकीन कर लिया और उसके छोटे-से, श्रम से अछूते हाथ से अच्छी तरह हाथ मिलाया।

"तो इसका यह अर्थ है कि जेल में होना उनके लिये कोई शर्म की बात नहीं है?"

"नहीं," रूसी ने उत्तर दिया। "आप तो जानते ही हैं कि अमीरों को सिर्फ तभी जेल भेजा जाता है जब वे बहुत ही ज्यादा बुराइयां करते हैं और उन पर पर्दा नहीं डाल पाते। लेकिन गरीब जब जरा-सी भी बेहतरी चाहते हैं तो उसी वक्त जेल में बन्द कर दिये जाते हैं। आपसे मैं सिर्फ यही कह सकता हूं कि आप बहुत खुशकिस्मत बाप हैं!"

और अपनी क्षीण आवाज में वह देर तक बेप्पो को यह बताता रहा कि सच्चे और ईमानदार लोगों के दिमागों में कैसी-कैसी बातें हैं, कैसे वे निर्धनता, मूर्खता-अज्ञानता और उस सभी कुछ को खत्म करना चाहते हैं जो भयानक और बुरा है और जो मूर्खता और निर्धनता को जन्म देता है

अग्नि-पुष्प की भांति सूर्य आकाश में चमक रहा है चट्टानों के भूरे वक्ष पर अपनी किरणों का स्वर्ण पराग बिखेर रहा :

मित और पुष्पित-पल्लवित हुए हैं जो उसके हृदय में छिपे रहे हैं। उसे बड़ा गर्व है इस बात पर, किन्तु यह जानते हुए कि हर दिन खुद अपने द्वारा गढ़े गये किस्सों में लोग कितना कम विश्वास करते हैं, वह कुछ कहता नहीं, चुप रहता है।

हां, कभी-कभी उसका बूढ़ा विशाल हृदय अपने बेटों के भविष्य से सम्बन्धित विचारों से ओतप्रोत हो उठता है और तब बूढ़ा नेस्को अपनी थकी और श्रम से झुकी हुई पीठ को सीधा करता है, छाती तानता है और अपनी बची-बचायी शक्ति बटोरकर सागर की ओर मुंह करके बहुत दूर, अपने बेटों को सम्बोधित करते हुए चिल्लाता है –

"वाल्यो-ओं!"*

उस क्षण सागर के गाढ़े और कोमल पानी के ऊपर अधिकाधिक ऊंचा उठता हुआ सूरज हंस देता है तथा अंगूर-बगीचों में काम करनेवाले लोग बूढ़े की आवाज का उत्तर देते हुए जोर से कहते हैं –

"ओह-हो-हो!"

---

* हिम्मत न हारना! (इतालवी)

पत्थर की हर दरार में से जीवन के लिये लालायित हरी घास और आकाश की तरह आसमानी रंग के फूल सूर्य की ओर उठ रहे हैं। सूर्य-प्रकाश की स्वर्ण-रश्मियां चमचमा उठती हैं और स्फटिक ओस की मोटी-मोटी बूंदों में लुप्त हो जाती हैं।

बूढ़ा देखता है कि कैसे उसके इर्द-गिर्द सभी कुछ सूर्य के जीवनदायी प्रकाश को अपनी सांसो में भरता है, उसका पान करता है, पक्षी कैसे दौड़-धूप करते है और नीड़ बनाते हुए गाते-चहचहाते हैं। उसे अपने बेटों की याद आती है, जो महा-सागर के पार महानगर की जेल में बन्द हैं। उनके स्वास्थ्य के लिये यह बुरा है, हां, बहुत बुरा है

किन्तु वे इसलिये जेल में है कि वैसे ही ईमानदार बने है जैसा कि वह वृद्ध यानी उनका पिता जीवन भर रहा है। यह उनके लिये और उनके पिता की आत्मा के लिये अच्छा है।

और बूढ़े का सावला चेहरा गर्वीली मुस्कान में पिघलता-सा प्रतीत होता है।

'धरती समृद्ध है लोग दरिद्र है, सूर्य दयालु है, मानव क्रूर है। जिन्दगी भर मैं इसी के बारे में सोचता रहा हूं और यद्यपि मैंने उनसे कभी कुछ नही कहा, फिर भी वे मेरे विचारो को समझ गये। हफ्ते में छ डालर – ये तो चालीस लीरा हुए, अरे वाह ! लेकिन उन्हे लगा कि यह मजदूरी कम है और उनके जैसे पच्चीस हजार अन्य मजदूर भी उनसे सहमत हो गये कि जो लोग ढग से रहना चाहते है, उनके लिये छ डालर कम है

उसे विश्वास है कि उसके बच्चो के रूप मे वे विचार विक-

खिल और पुष्पित-पल्लवित हुए हैं जो उसके हृदय में छिपे रहे हैं। उसे बड़ा गर्व है इस बात पर, किन्तु यह जानते हुए कि हर दिन खुद अपने द्वारा गढ़े गये किस्सों में लोग कितना कम विश्वास करते हैं, वह कुछ कहता नहीं, चुप रहता है।

हां, कभी-कभी उसका बूढ़ा चिन्तित हृदय अपने बेटों के भविष्य से सम्बन्धित विचारों में ओतप्रोत हो उठता है और तब बूढ़ा लेवको अपनी थकी और श्रम से झुकी हुई पीठ को सीधा करता है, छाती तानता है और अपनी बची-खुची शक्ति बटोरकर सागर की ओर मुंह करके बहुत दूर, अपने बेटों को सम्बोधित करते हुए चिल्लाता है—

"बाल्यो-ओ!"*

उस क्षण सागर के गाढ़े और कोमल पानी के ऊपर अधिकाधिक ऊंचा उठता हुआ सूरज हंस देता है तथा अंगूर-बगीचों में काम करनेवाले लोग बूढ़े की आवाज का उत्तर देते हुए जोर से कहते हैं—

"ओह-हो-हो!"

---

* हिम्मत न हारना! (इतालवी

है, नीला मुब्धक तारा भभकता और बुझ जाता है और गिरजे के दरवाजे में आर्गन बाजे की प्रभावपूर्ण ध्वनि सुनाई दे रही है। बादलों की दौड़, सितारों की झिलमिलाहट, इमारत की दीवारों और चौक के पत्थरों पर छायाओं की थिरकन—यह सब भी धीमा-धीमा संगीत-सा लगता है।

गम्भीर संगीत की लय के साथ सारा चौक, जो किसी ऑपेरा की मंच-सज्जा जैसा प्रतीत होता है, मानो कांपता-डोलता है, कभी सकरा और अन्धकारपूर्ण हो जाता है, कभी विस्तृत और मायावी ढंग से प्रकाशमय।

मृगशिरा नक्षत्र मोते-मोल्यारो पर अपनी अनूठी छवि दिखा रहा है पर्वत शिखर मानो सफेद बादल के मुकुट से सुशोभित है और दीवार जैसी उसकी खड़ी ढाल, जिसमें दरारें पड़ी हुई हैं, मानो दुनिया और उसके लोगों के बारे में महान विचारों से व्यथित-पीड़ित कोई प्राचीन कृष्णवर्णी मुखाकृति हो।

वहा, छ सौ मीटरों की ऊंचाई पर भूला-बिसरा हुआ एक छोटा-सा मठ है जिसे बादलों ने अपने आवरण में छिपा रखा है। वहा छोटा-सा कब्रिस्तान भी है जिसकी कब्रें फूलों की क्यारियों जैसी हैं। उनकी सख्या अधिक नहीं है और वहा, फूलों के नीचे चिर-निद्रामग्न है उसके सभी साधु-सन्यासी। मठ की भूरी दीवारें कभी-कभी बादलों में से झाकती हैं मानो नीचे जो कुछ हो रहा है, उसे देख-सुन रही हो।

शोर मचाते और छोटे-छोटे पटाखे चलाते हुए बच्चे चौक में इधर-उधर भाग-दौड़ रहे हैं। ऊपर को उछलते अग्नि-सर्प तड़-तड़ की आवाज करते हुए पत्थरों पर लाल-लाल चिंगारिया

उत्तर ध्रुवीय प्रकाश जैसी चमक है, दमियों अग्नि-बाण और अग्नि-शिखायें उसमें फटती हैं, चमकते-दमकते अग्नि-पुष्प खिलते हैं और क्षण भर को प्रकाश के कांपते बादल में बने रहकर भारी आवाज करते हुए बुझ जाते हैं।

खाड़ी के पूरे अर्धचक्र में यह सुन्दर अग्नि-खिलवाड़ हो रहा है। सेवस्तोपोल बन्दरगाह का सफेद आकाश-दीप शीतल प्रकाश फैला रहा है, मानो दि मिर्जेना की लाल आग चमक रही है और प्रोचिदा तथा इस्किया के दामन में चमक रही रोशनियां अंधेरे की कोमल मखमल पर जड़े हुए बड़े-बड़े हीरों की पांत-सी प्रतीत होती है।

खाड़ी में ढेरों-ढेर श्वेत लहरें तट से आ रही हैं। उनकी लयबद्ध गुनगुनाती छपछपाहट में दूरी पर फटनेवाले अग्नि-बाणों की आवाज धीमी-धीमी सुनाई देती है। आर्गन बाजे की स्वर-लहरी अभी भी गूंज रही है और बच्चे हंस रहे हैं। किन्तु सीजिये घण्टा-घर की घड़ी अचानक बड़ी गम्भीरता से पहले चार और फिर बारह बार बज उठती है।

प्रार्थना समाप्त हो गयी और गिरजाघर के दरवाजे से लोगों की रंग-बिरंगी भीड़ चौड़ी सीढ़ियों पर बाहर आने लगी है। बल खाते हुए लाल-लाल अग्नि-सर्प लोगों की ओर उछलते हैं। महिलाएं डरकर चीखती हैं, लड़के खिलखिलाकर हंसते हैं। यह तो इन्हीं का पर्व है और कोई भी इन्हें इस सुन्दर अग्नि-खिलवाड़ से रोक नहीं सकता।

समारोही पोशाक पहने, किसी धीर-गम्भीर वयस्क को तनिक डरा देते, फुफकारते हुए और उसके बूटों पर चिंगारियां

चिढ़ाते हुए उसका पीछा करनेवाले पटाखे से इस तानाशाह को चौक में उछलने-कूदने के लिये विवश कर देने में कितना मजा है! और बालक यह आनन्द लूट पाते हैं साल में केवल एक बार ...

ईसा के जन्म की रात को, जो उन्हें प्यार करता था, अपने को बादशाह और जीवन के स्वामी अनुभव करनेवाले बच्चे हंसी-खुशी के अपने इन सत्ता-क्षणों में वयस्कों द्वारा उन पर साल भर में किये गये ऊबभरे शासन का बदला चुकाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ते। वयस्क लोग आग से बचने की कोशिश करते हुए खूब उछलते-कूदते हैं और खुशमिजाजी से दया की भीख मांगते हुए यह कहते हैं—

"बस करो, शैतानो, बस करो!"

जांपोनियर यानी अब्रूत्से के चरवाहे तेजी से क़दम बढ़ाते हुए आते हैं। वे नीले रंग के छोटे-छोटे लबादे और चौड़े-चौड़े टोप पहने हुए हैं। उनकी सुगठित-सुडौल टांगों पर सफ़ेद ऊनी जुराबें हैं और उन पर आड़ी-तिरछी रेखायें बनाते हुए काले तसमे बंधे हैं। दो चरवाहों के लबादों के नीचे मश्कबीनें और चार के हाथों में बहुत ऊंची आवाजवाली लकड़ी की तुरहियां हैं।

ये लोग हर साल इस द्वीप पर आते हैं और महीना भर यहीं रहते हैं तथा हर दिन अपने विचित्र, किन्तु प्यारे संगीत से ईसा मसीह और पावन प्रभु-मां का स्तुति-गान करते हैं।

उषावेला में इन्हें देखना तो बहुत ही मर्मस्पर्शी होता है जब ये अपने टोपों को पैरों के निकट फेंककर मदोन्ना की मूर्त्ति के सामने खड़े हो जाते हैं और प्रेरणा से अभिभूत होकर उसके

दयालु मुख को निहारते हुए उसके सम्मान में मन को अन्तर्धार छूनेवाली ऐसी धुन बजाते हैं जिसे किसी ने एक बार "भगवान की भौतिक अनुभूति" की बहुत ही उचित संज्ञा दी थी।

चरवाहे अब उस नाद की ओर जाते हैं जिसमें शिशु ईसा है। यह नाद पाओलीनो नाम के बूढ़े बढ़ई के घर में है और उसे वहां से सन्त मेरिया के गिरजे में लाया जाना चाहिये।

बच्चे गड़रियों के पीछे-पीछे भागते हैं, तंग गली में उनकी काली-काली आकृतियां मानो लुप्त हो जाती हैं और कुछ मिनट के लिये चौक बिल्कुल खाली हो जाता है। हां, गिरजे के निकट जुलूस की प्रतीक्षा करती लोगों की सटी हुई भीड़ सीढ़ियों पर खड़ी है और इमारत की दीवारों पर तथा मानो लोगों को दुलारती-सहलाती हुई उनके सिरों पर बादलों की स्नेहिल मूक छायायें तैरती चली जा रही हैं।

सागर गहरी सांस लेता है। पतली-पतली टांग पर टिके हुए विराट फूलदान के समान एक चीड़ वृक्ष द्वीप की संधि-भूमि पर अंधेरे में दिखाई देता है। लुब्धक नक्षत्र आंखों को चौंधियाता हुआ चमक रहा है, मोंते-सोलारो पर से बादल हट गया है, पर्वत के गढ़ के ऊपर भूरा-विरान मठ अब साफ दिखाई दे रहा है और उसके सामने सन्तरी की तरह खड़ा है एकाकी चीड़ वृक्ष।

गड़रियों के गीत गली की मेहराब में से अन्तर्धार मधुर जल-धाराओं की भांति मानो बहते चले आ रहे हैं। नंगे सिर, गरुड़ जैसी नाकोंवाले और लबादे पहने हुए ये चरवाहे पक्षियों जैसे लगते हैं। वे बाजे बजाते चल रहे हैं, ...

हुए बालिकाएं है। गीत-संगीत, रोशनियां, मुस्कानभरी किलकारियां और बच्चों की हंसी का रंग और गाढ़ा हो गया है, पूरे मन मे पर्व की अनुभूति होने लगी है।

इस शिशु को पुराने गिरजे मे ले जाया जाता है। वहा जर्जरता के कारण एक अरसे से प्रार्थना नही होती, और वह साल भर खाली पडा रहता है। किन्तु आज उसकी प्राचीन दीवारे फूलो, झाड के पत्तो और नीबुओं-नारंगियो के गोलो से सजी है और पूरे गिरजे मे ईसा के जन्म से सम्बन्धित कलात्मक झांकियां बनी हुई है।

कागज के बडे-बडे टुकडो से पर्वत, गुफाये, बेथलेहेम और पर्वत-शिखरो पर अजीब-से दुर्ग बनाये गये है। ढालो पर बल खाती पगडडी नीचे आ रही है, वन-प्रागणो मे भेड़-बकरियों के रेवड चर रहे है, शीशे से बने हुए जलप्रपात चमकते है, गडरियो का दल आकाश को ताक रहा है जहा स्वर्ण-सितारा जगमगा रहा है फरिश्ते उड रहे है जो एक हाथ मे बेथलेहेम के सितारे और दूसरे हाथ से उस गुफा की ओर सकेत कर रहे है जिसमे पावन माता और जोजफ है तथा आकाश की तरफ हाथ उठाये हुए शिशु लेटा है। रग-बिरगी और समारोही पोशाके पहने हुए राजाओं-महाराजाओ का जुलूस चला जा रहा है और उनके ऊपर हाथो मे ताड की टहनिया और गुलाब के फूल लिये हुए फरिश्ते रुपहले धागो के सहारे चक्कर काट रहे है। चटक रग के रेशमी जामे पहने और ऊटो पर सवार लम्बी-लम्बी दाढ़ियोंवाले जादूगर, कमखाब की पोशाके डाटे और घोडो पर सवार शानदार सुनहरे बालोवाले बादशाह घुघराले बालोवाले

नुमिदियन, अरब और यहूदी तथा पक्की मिट्टी की बनी और चित्र-विचित्र पोशाकें पहने सैकड़ों अन्य मूर्त्तियां इस सुन्दर झांकी में शामिल हैं।

इसी चित्र में सफ़ेद लबादे पहने अरबों ने तो नांद के इर्द-गिर्द दुकानें भी खोल ली हैं और वे हथियार, रेशमी कपड़ा और मोम की बनी हुई मिठाइयां बेच रहे हैं. किसी अज्ञात जाति के लोग यहीं पर शराब भी बेचते हैं. कंधों पर कलस रखे हुए स्त्रियां पानी लाने के लिये चश्मे की ओर जा रही हैं. किसान गधे को हांकता जा रहा है जिस पर सूखी लकड़ियां लदी हुई हैं. शिशु के इर्द-गिर्द घुटने टेके हुए लोगों की भीड़ है और सभी जगह बच्चे खेल-कूद रहे हैं।

इस झांकी के सभी पात्रों को इतने कलात्मक और सुन्दर ढंग से पोशाकें पहनाई गयी हैं, रंगा-चुना गया है और क़रीने से सजाया गया है कि सभी कुछ सजीव और बोलता-बतियाता-सा प्रतीत होता है।

बच्चे इस झांकी या दृश्य के सामने खड़े हैं जिसे उन्होंने पिछले वर्ष भी देखा था. बहुत ग़ौर से इसे देख रहे हैं और उनकी पैनी तथा सभी चीज़ों को याद रखनेवाली आंखें तत्काल उस सब को ताड़ जाती हैं जो इसमें नया है, इस बार जोड़ा गया है। अपने द्वारा खोजी गयी इन नयी चीज़ों की वे अपने साथियों से चर्चा करते हैं. बहसते हैं, हंसते और चीख़ते-चिल्लाते हैं। कोने में वे लोग खड़े हैं जिन्होंने यह सुन्दर झांकी बनायी है और इन बाल-पारखियों की प्रशंसा सुनकर उनकी बाछें खिल जाती हैं।

जाहिर है कि ये कारीगर बालिग लोग हैं, बीवी-बच्चोंवाले हैं और उनकी वह उम्र नहीं है कि खेल-खिलौनों में दिलचस्पी लें। वे ऐसा दिखावा करते हैं कि इस सब से उनका दूर का भी सरोकार नहीं है। लेकिन बालक अक्सर बड़ों से ज्यादा समझदार और हमेशा ही अधिक निश्छल-निष्कपट होते हैं। वे जानते हैं कि प्रशंसा से तो बूढ़ों का भी मन बाग-बाग हो उठता है और इसलिये वे खुले मन से उनकी तारीफ करते हैं और कारीगरों को अपने सन्तोष तथा खुशी की मुस्कान को छिपाने के लिये मूछों और दाढ़ियों पर हाथ फेरना पड़ता है।

कहीं-कहीं पर बालक दल बनाकर खड़े हैं, गम्भीरतापूर्वक सोच-विचार करते हुए अपने "सिरोह" बना रहे हैं। नववर्ष की पूर्ववेला में वे फर-वृक्ष और सितारा लिये हुए बड़ी-बड़ी टोलियों में शहर का चक्कर लगायेंगे। वे अपने साथ बहुत ही ज़ोर से बजने डमडमाने और गूंजनेवाले अजीब-से बाजे लिये हुए होंगे और इन हास्यास्पद ध्वनियों की संगत में बच्चों के समूह ऐसे उल्लासपूर्ण गाने गायेंगे जिन्हें स्थानीय कवि इसी दिन के लिये विशेष रूप से रचते हैं।

सुनो देवियो और सज्जनो
नये साल की तुम्हें बधाई!
शुभ-सन्देश सुनो जो टोली
हम बच्चों की लेकर आई।

दोनों कान हृदय के पट भी
और थैलियों के मुंह खोलो

दिवस खुशी का, पर्व ईसा का
तुम भी आज सभी खुश हो लो!

इस सब का उद्धारक जन्मा
नंगे बदन और वह निर्धन,
बैलों ने अपनी सांसों से
गर्माया उसका नन्हा तन।

सारे दुख-दर्दों से हमको
मुक्त करे यह लक्ष्य बनाया,
दुखियों और गरीबों के हित
अपना जीवन-दीप बुझाया।

ईसा के अनुरूप आज हम
उसका यह स्मृति-पर्व बनायें,
जितनी भी हो सके खुशी से
हास-हर्ष का दिवस मनायें।

बच्चों का एक गिरोह जब नाचता हुआ यह उल्लासपूर्ण गाना गाता है, उसी बीच दूसरा गिरोह इससे भी ज्यादा मनोरंजक गाना गाकर पहले गिरोह की आवाज दबा देता है—

याद कीजिये, चरवाहों ने,
जादूगरों ने, औ' शाहों ने
शिशु-नाद के सम्मुख जाकर
घुटने टेके, शीश झुकाकर!

"ढम, ढम," ढोल जोर से ताल देता जाता है, लेकिन

कोई पतली-सी बांसुरी बालकों की आवाज़ का साथ नहीं दे पाती और मानो बुरा मानकर हास्यास्पद ढंग से अपनी अलग ही तान छेड़ देती है

और दुष्ट हेरोद बादशाह
शिशु से डर, कैसे घबराया
उसने सारे राज्य देश में
सब बच्चों को ही मरवाया।

किन्तु मिटा हेरोद और हम
जीवित, बीती बात पुरानी,
ईसा की स्मृति में अब केवल
मुर्गों की होती कुर्बानी।

पैरों में गति लानेवाली गीत की तेज लय बड़ों को भी उदासीन नहीं रहने देती। लीजिये, मोटा कोचवान शार्गो वास्योल्का बच्चों की भीड़ में आ घुसा और तेहरा सुर करके बच्चों की आवाज को दबाता हुआ गला फाड़-फाड़कर यह चिल्ला रहा है –

सब दुख-दर्द दूर हो जायें
मिट जायें सारी चिन्तायें
करें न शिकवा और शिकायत
रोग हमारे पास न आयें।

देखो कैसे चमक रहे हैं
नभ में जगमग झिलमिल तारे
इसी तरह जीवन भर चमकें
सुख-सुविधा में भाग्य हमारे।

बच्चों को निहारती हुई नारियों की आंखों में स्वप्निल-सी चमक आ जाती है। हंसी-खुशी का रंग अधिकाधिक गाढ़ा होता जाता है और चेहरे खुशी से अधिकाधिक खिलते-चमकते जाते हैं। समारोही पोशाकें पहने हुए लड़कियां लड़कों की तरफ़ देखकर शरारती ढंग से मुस्कराती हैं। आकाश में सितारों की पलकें मुंदती चली जा रही हैं। कहीं ऊपर से, खिड़की में से या छत पर से किसी अदृश्य व्यक्ति का पंचम स्वर गूंजता है –

स्वस्थ रहें, सब कुछ सुखी रहें,
मिले शेष सब, यही कहें!

पुराने मठ में बच्चों की हंसी, जो धरती का सर्वश्रेष्ठ संगीत है, अधिकाधिक सजीवता से गुंजित हो रही है। द्वीप के ऊपर आकाश फीका पड़ता जा रहा है, उषावेला निकट आती जा रही है, सितारे आकाश की गहन नीलिमा में अधिकाधिक ऊंचे होते जा रहे हैं।

द्वीप के गहरे हरे रंग के बाग़-बगीचों में सुनहरी नारंगियां पहले से ज्यादा चमकने लगी हैं, झुटपुटे में से पीले नीबू बड़े-बड़े उल्लुओं की आंखों की तरह झांक रहे हैं। नारंगियों के पेड़ों की फुनगियां पीली-हरी कोंपलों से चमक रही हैं, ज़ैतून के पत्ते धीमी-धीमी रुपहली झलक दिखा रहे हैं, अंगूरों की पातहीन बेलों के जाल हिल-डुल रहे हैं।

कार्नेशन फूल और सेज की लाल-लाल टहनियां अरुण मुस्कान से उषा का स्वागत करती हैं। नरगिस के फूलों की

तेज सुगन्ध सागर की सलोनी साँसों के साथ घुल-मिलकर सुबह की ताजा हवा में बसती चली जा रही है।

लहरों की छपछपाहट अधिक तीव्र हो गयी है, उनकी पारदर्शिता बढ़ गयी है और उनका फेन हिम के समान श्वेत-धवल है।

फुरसत का वक्त बिताना पसन्द करता था और महान चित्रकार साल्वातोर रोजा ने उसे कई बार बहुत बडे-बडे चित्रपट पर उतारा था। तोमाजो अनियेल्लो भी, जो उसका दोस्त था और जिसे आम लोग, जिनकी आजादी के लिये उसने संघर्ष किया और प्राणो की बलि दी, मजानियेल्लो के नाम से पुकारते थे, हमारे ही मुहल्ले मे जन्मा था।

कुल मिलाकर यह कि अनेक जाने-माने लोगों ने हमारे मुहल्ले मे जन्म लिया और वे यहा रहे। अब की तुलना मे पुराने वक्तो मे ऐसे लोग कही अक्सर जन्म लेते थे और उनका बडप्पन भी कही ज्यादा नजर आता था। अब, जब सभी कोट पहने घूमते है और राजनीति मे टाग अडाते हैं, किसी के लिये भी दूसरो से अधिक ऊपर उठना कठिन हो गया है और फिर अखबारी कागज मे लिपटी हुई आत्मा का विकास भी आसानी से नही होता।

पिछले साल की गर्मी तक क्रुजडिन नूंचा पर भी हमारे मुहल्ले को गर्व था। वह दुनिया की सबसे ज्यादा खुशमिजाज नारी और हमारे मुहल्ले की सबसे बढ-चढकर सुन्दरी थी। हमारे उस मुहल्ले की जिसके ऊपर शहर के दूसरे हिस्सो की तुलना मे सूरज ज्यादा देर तक चमकता रहता था। जहा तक फव्वारे का सम्बन्ध है तो वह आज भी वैसा ही है जैसा हमेशा था। समय के बीतने पर अधिकाधिक पीला पडता हुआ वह अपने अनूठे सौन्दर्य मे बहुत अरसे तक विदेशियो को चकित करता रहेगा। बात यह है कि संगमरमर की सन्तानें न तो बढती है और न खेल-खिलवाडो से ही थकती हैं।

और यह प्यारी नूंचा पिछली गर्मियों में नाच के समय गली में ही चल बसी। ऐसी मौत तो बहुत कम ही होती है और इसीलिये यह कहानी सुनाने लायक़ है।

नूंचा इतनी अधिक रंगीली और मनमौजी थी कि पति के साथ चैन से जीना उसके लिये असम्भव था। उसका पति बहुत समय तक इस बात को समझ नहीं पाया – चीखता-चिल्लाता और उसे कोसता रहा, हाथों को झटकता-पटकता रहा, लोगों को छुरा दिखाकर डराता-धमकाता रहा। आखिर एक दिन उसने किसी की बग़ल में सचमुच ही छुरा भोंक दिया। लेकिन इस तरह के मज़ाक़ पुलिस को अच्छे नहीं लगते और नूंचा का पति स्तेफ़ानो कुछ समय तक जेल की हवा खाकर अर्जेनटाइना चला गया। तुनुकमिजाज लोगों को जलवायु के परिवर्तन से बहुत लाभ होता है।

तेईस साल की उम्र में पांच साल की बिटिया के साथ नूंचा अकेली रह गयी। गधों की जोड़ी, सब्ज़ियों का बगीचा और छोटी-सी गाड़ी – यही उसकी कुल जमा-पूंजी थी और खुशमिजाज व्यक्ति को इससे अधिक की जरूरत भी नहीं थी। काम करना वह जानती थी, उसकी मदद करने को उत्सुक लोगों की कुछ कमी नहीं थी और जब इनकी मजदूरी चुकाने के लिये उसके पास पैसे न होते तो वह हंसी-मजाक़, गीतों-गानों और उन अन्य सभी चीजों से उनका ऋण चुका देती जो पैसों से हमेशा ही अधिक मूल्यवान होते हैं।

उसके जीवन-ढंग से सभी नारियां, और जाहिर है कि सभी पुरुष भी प्रसन्न नहीं थे। लेकिन चूंकि उसके पास निष्कपट

दिल था, इसलिये वह शादीशुदा लोगो को न केवल अपने पास न फटकने देती, बल्कि अक्सर बीवियो से उनकी सुलह भी करवा देती। वह कहती –

"जो पुरुष नारी को प्यार करना छोड देता है, वह तो वास्तव मे प्यार करना ही नही जानता।"

मछुआ आर्तुर लानो, जो अपनी किशोरावस्था मे धार्मिक विद्यालय मे शिक्षा पाता रहा था, किन्तु सागर, शराबखानो और मौज-मेले की सभी जगहो के फेर मे पडकर धर्म और जन्नत की राह भूल गया था, अश्लील गीतो की रचना करने मे कमाल रखनेवाले इसी लानो ने नूचा मे एक दिन कहा –

"तुम शायद यह समझती हो कि प्रेम-विद्या धर्म-विद्या की तरह ही कठिन है?"

"विद्या तो मै जानती नही, लेकिन तुम्हारे गीत सभी जानती हू," उसने जवाब दिया।

और उसने पीपे की तरह मोटे उस आर्तुर लानो को उसकी निम्न पक्तिया गा सुनायी –

नही कहानी नई कि यह तो
सबको जानी बात है,
गर्भ रहा था जब मरियम को
था वसन्त, यह ज्ञात है।

जाहिर है कि वह अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण आखो को गालो की लाल चर्बी मे छिपाकर जोर से हस दिया।

17-716

तो ऐसे ही जी रही थी वह खुद खुश रहती, बहुतों को खुशी देती और सभी को प्यारी लगती हुई। उसकी सहेलियों ने भी यह समझकर कि हर आदमी का स्वभाव तो उसकी घुट्टी में ही होता है और सन्त-महात्मा तक भी हमेशा अपने को नहीं जीत पाते, उसे क्षमा कर दिया था। इसके अलावा पुरुष तो कोई भगवान नहीं होते और हमें केवल भगवान से ही दगा नहीं करना चाहिये ...

दस साल तक नूंचा एक उज्ज्वल सितारे की तरह चमकी, हर किसी ने उसे मुहल्ले की बेजोड़ सुन्दरी और नर्तकी माना और अगर वह कुंवारी होती तो उसे बाजार की महारानी चुन लिया जाता जो वह सभी की नज़रों में सचमुच थी भी।

नूंचा को विदेशियों तक को दिखाया जाता और उनमें से अनेक उससे एकान्त में बातचीत करने की इच्छा प्रकट करते। यह सुनकर तो वह हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाती और कहती –

"यह बना-ठना महानुभाव मुझसे किस भाषा में बात करेगा?"

"अरी बुद्धू, सोने के सिक्कों की भाषा में," संजीदा लोग उसे समझाते। लेकिन वह यही जवाब देती –

"परायों को मैं प्याज़, लहसुन और टमाटरों के अलावा और कुछ नहीं बेच सकती .. "

ऐसे मौक़े भी आये जब सच्चे दिल से भलाई चाहनेवाले लोगों ने बहुत ज़ोर देकर उससे यह कहा –

"नूंचा, बस, कोई महीने भर का मामला है और तुम मालामाल हो जाओगी। इस बात पर खूब अच्छी तरह से सोच-

विचार कर लो और याद रखो कि तुम्हारी बिटिया भी है ..."

"नही," उसने उनकी बात नहीं मानी, "मै अपने तन को प्यार करती हू और उसका अपमान नही करवा सकती! मैं जानती हू कि अपनी इच्छा के विरुद्ध एक बार भी कुछ करने पर मै सदा के लिये खुद अपनी ही नजरो मे गिर जाऊगी ."

"लेकिन तुम दूसरो को तो इन्कार नही करती!"

"अपनो को, और वह भी जब मेरा मन चाहता है ..."

"'अपनो' से क्या मतलब है तुम्हारा?"

और वह इसका मतलब जानती थी।

"वे लोग, जिनके बीच मेरी आत्मा का विकास हुआ और जो मुझे समझते है ..."

फिर भी एक विदेशी, एक अग्रेज के प्रेम-जाल मे वह फस ही गयी। बडा अजीब और चुप्पा-सा आदमी था वह, गो इतालवी भाषा अच्छी तरह से जानता था। जवान होते हुए भी उसके बाल सफेद हो चुके थे, चेहरे पर एक दाग फैला हुआ था, सूरत थी उठाईगीरे जैसी किन्तु आखे देवता जैसी। कुछ लोगो का कहना था कि वह लेखक है, किताबे लिखता है और दूसरे कहते थे कि जुआरी है। नूचा तो उसके साथ सिसली भी चली गयी और वहा से बहुत दुबली-पतली होकर लौटी। लेकिन वह अग्रेज तो शायद ही अमीर आदमी हो क्योकि नूचा न तो पैसे लेकर लौटी और न उपहार ही। वह फिर से हमेशा की तरह अपनो के बीच हसी-खुशी से रहने लगी सभी तरह की खुशियो का मजा लूटने लगी।

17*

किन्तु एक पर्व के अवसर पर जब लोग गिरजे से बाहर आये तो किसी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा –

"देखिये तो – नीना बिल्कुल अपनी मां जैसी बनती जा रही है!"

हां, यह बात बिल्कुल सही थी, मई के दिन की तरह। पता भी नहीं चला और नूंचा की बेटी मां की भांति ही एक जगमगाता तारा बन गयी। वह सिर्फ़ चौदह साल की थी, लेकिन डील-डौल में लम्बी-चौड़ी, घने-घने बालों और गर्वीली आंखोंवाली। वह अपनी उम्र से कहीं ज्यादा बड़ी लगती थी और नारीत्व के पूरी तरह योग्य थी।

खुद नूंचा भी बेटी को ग़ौर से देखकर हैरत में आ गयी –

"पावन मदोन्ना! अरी नीना, तुम क्या खूबसूरती में मुझसे इक्कीस होना चाहती हो?"

बेटी ने मुस्कराकर जवाब दिया –

"नहीं, सिर्फ तुम्हारे जैसी। मेरे लिये इतना ही काफ़ी है।"

और तब उस खुशमिज़ाज औरत के चेहरे पर लोगों को उदासी की छाया दिखाई दी और शाम को उसने अपनी सहेलियों से कहा –

"तो यह है हमारी जिन्दगी! हम अपना गिलास आधा भी नहीं पी पाते कि कोई नया हाथ उसकी ओर बढ़ जाता है..."

जाहिर है कि शुरू में मां-बेटी के बीच किसी तरह की प्रतिद्वन्द्विता की झलक भी नहीं मिली। बेटी बड़ी नम्रता और सावधानी बरतती, झुकी-झुकी पलकों से दुनिया को देखती

और पुरुषों के सामने तो मन मारकर ही कुछ बोलती। दूसरी ओर मा की आंखों मे जीवन की प्यास अधिक तीव्र होती जाती थी और उसकी आवाज मे प्रेम-पुकार अधिक जोर से गूजती थी।

नूचा की निकटता मे लोगो के चेहरो पर वैसे ही लाली छा जाती जैसे पौ फटने पर पहली सूर्य-किरण के गालो को छूने पर उनके साथ होता है। निश्चय अनेको के लिये वह प्रेम-प्रभाव की पहली किरण के समान थी। अनेक उसके सौन्दर्य से अभिभूत होकर मन ही मन उसके प्रति उस समय आभार प्रकट करते, जब उसे, मस्तूल की तरह सुडौल और सीधी-सतर नूचा को अपनी छोटी-सी गाडी के साथ सड़क पर भागते देखते और उसकी आवाज घरो की छतो तक गूजती। [illegible] के चटकीले रगो की सब्जियो के ढेर के सामने जब वह बाजार मे खडी होती तो भी खूब जचती और गिरजाघर की सफेद दीवार की पृष्ठभूमि मे किसी महान चित्रकार द्वारा चित्रित चित्र-सी प्रतीत होती। सन्त जाकोमो के गिरजे के निकट, सीढियो के बायी ओर उसकी जगह थी और वहा से तीन कदमो की दूरी पर ही उसने अन्तिम सास ली। वह जहा कही होती तो जगमगाती ज्योति-सी लगती और उसके विलक्षण मजाक तथा चुटकुले, उसके ठहाके और गाने, जो सभी इलाके को सख्या मे याद थे, खुशी की फुलझडियो की तरह लोगो के सिरो के ऊपर गूजते।

वह ऐसे सलीके से पोशाक पहनना जानती थी कि उसके रूप को वैसे ही चार चाद लग जाते, जैसे सुन्दर शीशेवाले [illegible] मे अच्छी मूरत और अधिक सुन्दर हो जाती है। [illegible]

अधिक पारदर्शी होता है, सुरा की आत्मा को वह उतनी ही अधिक अच्छी तरह से झलकाता है। रंग हमेशा ही गन्ध और स्वाद का पूरक होता है और वह उस शब्दहीन लाल गीत को अन्त तक गा देता है जिसे हम केवल इसलिये पीते हैं कि अपनी आत्मा में सूर्य के रक्त की कुछ बूंदें उतार सकें। क्या चीज़ है सुरा, हे भगवान! अगर आदमी को अपनी बेचारी आत्मा को लाल शराब के अच्छे जाम से तरोताज़ा करने की मधुर सम्भावना भी न मिलती तो यह दुनिया सारे शोर-गुल और दौड़-धूप के साथ गधे के सुम के बराबर भी मूल्य न रखती। शराब ही तो पावन-भोज की भांति हमारी आत्मा को पापों की गन्दगी से मुक्त करती है और हमें इस दुनिया को प्यार तथा क्षमा करने की सीख देती है जिसमें काफ़ी कूड़ा-कबाड़ भरा हुआ है... आप अपने जाम में से सूर्य पर दृष्टि डालें और सुरा आपको ऐसे क़िस्से-कहानियां सुनायेगी कि क्या कहने...

नूंचा धूप में खड़ी चमकती होती, लोगों में मधुर भाव यह इच्छा जागृत करती हुई कि वे भी उसे अच्छे लगें। सुन्दर नारी के सामने कोई भी पुरुष उपेक्षित नहीं रहना चाहता और उसे प्रभावित करने के लिये वह हमेशा अपनी शक्ति से कुछ अधिक ही कर दिखाना चाहता है। नूंचा ने बहुत कुछ अच्छा किया था, बहुत-सी शक्ति जागृत की थी, जीवन को समृद्ध किया था। अच्छाई और अधिक अच्छा करने की इच्छा को जन्म देती है।

हां, अब बेटी अपनी मां के निकट अधिकाधिक नज़र आती, संन्यासिनी की तरह विनम्र या फिर म्यान में बन्द कटार

की तरह। पुरुष इन दोनों को देखते, तुलना करते और शायद उनमें से कुछेक वह समझ पाते जो नारी कभी अनुभव करती है और कितना कटु लगता होगा तब उसे अपना जीवन!

अपने छोटे-छोटे, तेज कदमों को और अधिक तेज करता हुआ वक्त बीतता जाता है और समय की इस दौड़ में लोग सूर्य की लाल किरण में सुनहरे रजकणों की तरह झलक दिखाते हैं। नूचा अब अपनी घनी भौंहों को अधिकाधिक ऊपर चढ़ाती और कभी-कभी होंठ काटती हुई बेटी की ओर वैसे ही देखती जैसे कोई जुआरी अपने प्रतिद्वन्द्वी के पत्तों का अनुमान लगाने के लिये उसकी तरफ देखता है

एक साल, फिर दूसरा साल बीता—बेटी मा के अधिकाधिक निकट और साथ ही दूर हो गयी। अब तो किसी से भी यह छिपा नहीं था कि जवान लोगों के लिये यह तय कर पाना मुश्किल होता है कि वे दोनों में से किसकी तरफ प्यारभरी नजर से देखें। और सहेलियां—वे हमेशा दुखती रग पर ही चोट करती हैं—हां, सहेलियां उससे पूछतीं—

"कहो, बेटी तुम्हारा रंग फीका कर रही है न?"

नूचा हंसते हुए जवाब देती—

"चांद के होते हुए भी बड़े तारे जगमगाते रहते हैं"

मां के नाते वह बेटी के रूप पर गर्व करती थी किन्तु औरत के नाते वह बेटी की जवानी से ईर्ष्या किये बिना नहीं रह सकती थी। नीना उसके और सूरज के बीच खड़ी हो गयी थी और छाया बनकर जीना मां को अच्छा नहीं लगता था।

लानो ने एक नया गीत रच डाला जिसका पहला पद यह था –

होती यदि मैं पुरुष, तो अपनी बिटिया से
ऐसी बेटी जनवाती,
उसके गालों में जैसी
स्वयं नजर थी मैं आती...

नूंचा ने यह गीत गाना नहीं चाहा। कुछ ऐसी अफ़वाह भी फैली मानो नीना अपनी मां से कई बार यह कह चुकी है–

"अगर तुम अधिक समझदारी से काम लो तो हम कहीं ज़्यादा अच्छी ज़िन्दगी बिता सकती हैं।"

आख़िर वह दिन भी आ गया जब बेटी ने मां से कहा –

"अम्मां, तुम मुझे लोगों से बहुत दूर रखती हो। मैं अब बच्ची नहीं रही और अपने हिस्से का ज़िन्दगी का रस लेना चाहती हूं! तुम लम्बे अरसे तक और बड़े मज़े की ज़िन्दगी बिता चुकी हो। क्या अब मेरे जीने का वक़्त नहीं आ गया?"

"आख़िर मामला क्या है?" मां ने दोषी की भांति आंखें झुकाकर पूछा। उसे मालूम था कि मामला क्या है।

इसी समय एंरीको बोर्बोने आस्ट्रेलिया से लौटा था। उस अद्भुत देश में, जहां इच्छा होने पर कोई भी आसानी से बड़ी रक़म कमा सकता है, वह लकड़हारे का काम करता रहा था। वह मातृभूमि की धूप में तन गर्माने आया था और फिर से वहीं लौट जाना चाहता था जहां ज़िन्दगी अधिक स्वतन्त्र थी। उसकी उम्र छत्तीस साल थी – दढ़ियल, हट्टा-कट्टा और ख़ुश-

मिज़ाज वह बड़े दिलचस्प ढंग से वहां के कारनामे, घने जंगलों में अपनी जिन्दगी के किस्से सुनाता जिसे बाकी लोग तो मनगढ़न्त कहानियां ही मानते, लेकिन मां-बेटी हकीकत समझतीं।

"मैं देखती हूं कि एरीको को अच्छी लगती हूं," नीना ने एक दिन कहा, "किन्तु तुम उसके साथ चोंचलेबाज़ी करती हो जिससे वह चंचल हो उठता है और इस तरह तुम मेरे आड़े आती हो।"

"मैं समझ गयी," नूचा ने कहा। "अच्छी बात है, अब तुम्हें अपनी मां के विरुद्ध मदोन्ना से शिकायत नहीं करनी पड़ेगी "

और यह औरत बड़ी ईमानदारी से उस आदमी से दूर हट गयी जो, जैसा कि सभी को स्पष्ट था, उसे दूसरों से ज्यादा अच्छा लगता था।

लेकिन यह तो जानी-मानी बात है कि आसानी से हासिल हो जानेवाली जीत विजेता को घमण्डी बना देती है और अगर विजेता अभी बच्चा या कमउम्र हो तो मामला बिल्कुल चौपट हो जाता है।

नीना अपनी मां से ऐसे अन्दाज़ में बातचीत करने लगी जो नूचा के लायक नहीं था। चुनाचे सन्त जाकोमो के दिन, हमारे मुहल्ले के पर्व दिवस पर, जब सभी लोग हंसी-खुशी के रंग में डूबे हुए थे और नूचा बहुत बढ़िया ढंग से तारानतेल्ला नृत्य नाच चुकी थी, बेटी ने सभी को सुनाकर मां से कहा—

"तुम क्या कुछ ज्यादा ही नहीं नाच रही हो? शायद तुम्हारी उम्र में यह अच्छा नहीं, वक्त आ गया है कि तुम अपने दिल पर रहम करो "

छोटे मुंह वड़ी वात कहनेवाले इन शव्दों को, जो प्यार से कहे गये थे, जिस किसी ने भी सुना, वह क्षण भर को स्तम्भित होकर चुप रह गया, मगर नूंचा अपनी पतली कमर पर हाथ रखकर गुस्से से फुंकार उठी –

"मेरा दिल ? तुम उसकी चिन्ता कर रही हो न ? अच्छी वात है, शुक्रिया वेटी ! लेकिन आओ, हम देखें कि किसका दिल ज्यादा मज़वूत है !"

और कुछ क्षण तक सोचकर उसने यह सुझाव दिया –

"हम सांस लिये विना यहां से फ़व्वारे तक तीन वार इधर-उधर दौड़ लगायेंगी .."

वहुतों को नारियों की ऐसी दौड़ मज़ाक़-सी प्रतीत हुई, कई लोगों को यह वेहूदा और शर्मनाक वात लगी। किन्तु अधिकतर लोग नूंचा का आदर करनेवाले थे और उन्होंने नूंचा के प्रस्ताव का गम्भीर विनोद के रूप में समर्थन करते हुए नीना को मां की चुनौती स्वीकारने के लिये विवश किया।

निर्णायक तय किये गये, दौड का अधिकतम समय निश्चित किया गया यानी सभी कुछ सविस्तार और विल्कुल ठीक-ठीक वैसे ही निर्धारित किया गया जैसे घुड़दौड़ के समय होता है। वहुत-से मर्द-औरतें ऐसे थे जो सच्चे दिल से मां की जीत चाहते थे, उन्होंने उसे आशीर्वाद दिये, मदोन्ना की मिन्नतें मानीं कि वह नूंचा की मदद करे, उसे जीतने की शक्ति दे।

अव मां और वेटी एक-दूसरी से नज़रें न मिलाती हुई अगल-वग़ल खड़ी थी, खंजड़ी झनझनायी और वे दोनों दो वड़े-वड़े सफ़ेद पक्षियों की भांति गली से चौक की तरफ़ उड़ चलीं।

मा के सिर पर लाल और बेटी के सिर पर आसमानी रंग का रूमाल बंधा था।

दौड के शुरू मे ही यह स्पष्ट हो गया कि फुर्ती और शक्ति की दृष्टि मे बेटी मा की बराबरी नही कर पा रही। नूचा ऐसे हल्के-फुल्के और सुन्दर ढग मे दौड रही थी मानो धरती स्वयं उसे अपने हाथो पर वैसे ही उठाये लिये जा रही हो जैसे मा अपने बच्चे को। लोग खिडकियों और पटरियो से नूचा के पैरों पर फूल बरसाने तथा तालिया बजाने लगे और चिल्ला-चिल्लाकर उसकी हिम्मत बढाने लगे। एक सिरे से दूसरे सिरे तक के चार की दौड मे ही मा बेटी की तुलना मे चार से कुछ अधिक मिनट की बाजी मार गयी और हारी-टूटी, असफलता से [illegible] हाफती और आसू बहाती हुई नीना सिरने की [illegible] [illegible] गिर पडी। वह तीसरी बार दौड नही पायी।

बिल्ली की तरह चुस्त-फुर्तीली नूचा [illegible] [illegible] [illegible] के साथ हसती हुई उसपर झुक गयी।

एंरीको सामने आया, उसने अपना टोप उतारा और कमाल की इस औरत के सामने सिर को बेहद झुकाकर आदर प्रकट किया। वह देर तक यही मुद्रा बनाये रहा।

खंजड़ी पर थाप पड़ी, वह गूंजी, झनझनायी और पुरानी, काली, तेज़ शराब जैसा नशा पैदा कर देनेवाला यह उन्मादक नाच शुरू हो गया। नागिन की तरह बल खाती और चक्कर काटती हुई नूंचा नाच रही थी, अत्यधिक तीव्र भावावेशोंवाले इस नृत्य की आत्मा को वह अच्छी तरह से समझती थी और उसका सुन्दर-सुडौल तथा अजेय शरीर कैसे थिरक रहा था, अठखेलियां कर रहा था, यह तो देखते ही बनता था!

नूंचा अनेक पुरुषों के साथ देर तक नाचती रही, पुरुष थक जाते थे, मगर नूंचा की नृत्य-प्यास बुझने का नाम नहीं लेती थी। आधी रात हो चुकी थी, जब उसने पुकारकर कहा –

"एंरीको, आओ, एक और बार, आख़िरी बार नाच हो जाये!" उसके साथ फिर धीरे-धीरे नाच शुरू हुआ, नूंचा की विस्फारित, प्यार से चमकती आंखों ने उससे बहुत कुछ कह दिया, बहुत-से क़रार कर लिये, किन्तु अचानक वह तनिक चीख़ी, उसने हाथ झटके और ऐसे गिर पड़ी मानो किसी ने उसकी टांगें काट डाली हों।

डाक्टर ने कहा कि दिल की धड़कन बन्द हो जाने से उसकी मौत हो गयी।

शायद यह ठीक ही है...



२३

गहरी खामोशी की चादर में लिपटा हुआ द्वीप सो रहा है, सागर भी निद्रामग्न है। ऐसे लगता है मानो किसी ने अपने बलिष्ठ हाथ में यह द्वीप रूपी काली

सिपाही जवान है और उम्र का तकाजा करनेवाली ही बातें कर रहा है। बूढा मछुआ अनिच्छा से और कभी-कभी झल्लाकर उसकी बात काट रहा है –

"दिसम्बर के महीने में कौन मुहब्बत के फेर में पडता है? इस वक्त तो बच्चे भी होने लगते हैं. "

"अजी रहने दीजिये! जवान लोग इन्तजार नहीं करते "

"इन्तजार करना चाहिये "

"तुमने इन्तजार किया था?"

"मेरे दोस्त, मैं सिपाही नहीं था, काम करता था और आदमी को जो कुछ जानना-समझना चाहिये, अपने जमाने में वह सब कुछ देख-जान चुका हू "

"समझा नहीं "

"बाद में समझ जाओगे "

तट से कुछ ही दूर नीला लुब्धक नक्षत्र पानी में प्रतिबिम्बित हो रहा है। अगर हम इस धुधले-से धब्बे को देर तक बहुत ध्यान से देखते रहे तो उसके निकट ही काग का एक तिरेन्दा नजर आने लगता है, बिल्कुल इन्सान के सिर की तरह गोल और एकदम निश्चल।

"तुम सोते क्यों नहीं?"

बूढे मछुए ने फटी-पुरानी, वर्षों के उपयोग से पीली पड़ी हुई बरसाती के सभी बटन खोल दिये और खांसते हुए जवाब दिया –

"हमने जाल बिछा रखा है, तिरेन्दा देख रहे हो न?"

"अब समझा "

"गीत बढ़िया है न, चाचा पाम्काले?"

"जब साठ की उम्र पार कर जाओगे तो खुद ही जान जाओगे। पूछने में क्या तुक है?"

मूक रात में मूक हो गये संसार की भांति ये दोनों भी चुप रहे। इसके बाद बूढ़े ने मुंह से पाइप निकालकर उसे पत्थर पर खटखटाया, खटखट की सूखी और संक्षिप्त ध्वनियों को सुना और बोला –

"तुम नौजवान लोग हंसते तो खूब हो, लेकिन नहीं जानता कि वैसे ही अच्छी तरह से प्यार भी कर सकते हो जैसे पहले वक्तों में लोग करते थे "

"ओह! वही पुराना गाना मेरे ख्याल में प्यार तो हमेशा समान रूप में ही किया जाता रहा है "

"ऐसा तो तुम्हारा ख्याल है! मगर तुम जानते नहीं। वहां, पहाड़ी के पीछे सेन्त्सामाने का परिवार रहता है – उनसे जाकर दादा कार्लो का किस्सा सुनाने को कहो। तुम्हारी बीवी का इसमें भला होगा।"

"जब तुम खुद ही मुझे यह किस्सा सुना सकते हो तो किसलिये मैं अनजाने लोगों से इसके बारे में कहने जाऊं "

निशा-पक्षी कहीं अदृश्य रूप में उड़ा। हवा एक अजीब और खास किस्म की ऐसी आवाज से कांप उठी मानो कोई ऊनी कपड़े से सूखे पत्थरों को जल्दी-जल्दी रगड़ रहा हो।

धरती पर अन्धेरा घना, नम और गर्म हो गया, आकाश मानो कुछ ऊपर चला गया और आकाश-गंगा के रुपहले कुहासे में सितारे अधिक तीव्रता से चमकने लगे।

"पुराने वक़्तों में औरतों को अधिक महत्त्व दिया जाता था ..."

"सच? मैंने तो नहीं सुना।"

"मर्द लोग अक्सर जंग के मैदान में जाते थे ..."

"बहुत बड़ी संख्या में विधवायें रह जाती होंगी ..."

"डाकुओं और सिपाहियों का लगातार ख़तरा बना रहता था और नेपल्ज़ में हर पांच साल के बाद बदशाह बदल जाते थे। औरतों को ताले में बन्द रखना पड़ता था।"

"ऐसा करना तो अब भी कुछ बुरा नहीं होगा ..."

"उन्हें मुर्ग़ियों की तरह चुराया जाता था ..."

"वैसे वे लोमड़ियों से ज़्यादा मिलती-जुलती हैं ..."

बूढ़ा ख़ामोश हो गया, उसने पाइप जलाया – ठहरी-ठहरी हवा में मीठे-मीठे धुएं का सफ़ेद बादल-सा लटक गया। पाइप की आग चमकी और उसकी रोशनी में बूढ़े की टेढ़ी, काली नाक और उसके नीचे छोटी-छोटी मूंछें रोशन हो उठीं।

"तो आगे क्या हुआ?" सिपाही ने अलसायी-सी आवाज़ में पूछा।

"कुछ सुनना हो तो चुप रहना चाहिये ..."

लुब्धक नक्षत्र ऐसे ज़ोर से चमक उठा मानो गर्वीला नक्षत्र शेष सभी तारों के प्रकाश को मन्द कर देना चाहता हो। सागर स्वर्ण-रज से चमक रहा था और आकाश के इस लगभग अदृश्य प्रतिबिम्ब ने अन्धकार में लिपटी मूक निर्जनता को चमक प्रदान करके उसे तनिक सजीव बना दिया। ऐसे लग रहा था मानो

सागर की गहराई में से हजारों-हजार अत्यधिक चमकती आंखें झांक रही हों

"मैं सुन रहा हूं," सिपाही ने मछुए की मछली जैसी और खीझभरी खामोशी को धीरे से भंग करते हुए कहा। बूढ़े ने इतमीनान से और धीमी-धीमी आवाज में ऐसी कहानी का ताना-बाना बुनना शुरू किया जिसे सभी लोग हमेशा बड़े ध्यान से सुनते।

"कोई एक सौ साल पहले, उस पहाड़ पर जहां सनोबरों के घने झुरमुट हैं, एकेल्लानी नाम का एक कुबड़ा, जादू-टोने करनेवाला और चुगी-चोर यूनानी रहता था। उसका एक बेटा था अरिस्तीदो। वह शिकारी था—तब हमारे द्वीप पर पहाड़ी बकरे होते थे। उस जमाने में यहां गाल्यार्दी परिवार सबसे अधिक धनी था। अब इस परिवार के लोग अपने दादा के सेल्सामाने उपनाम से जाने जाते हैं। अंगूरों के आधे बगीचे इस परिवार के हाथ में थे, इसके आठ तहखाने और उनमें एक हजार से ज्यादा शराब के पीपे थे। तब तो हमारी सफेद शराब की फ्रांस में भी बड़ी धाक थी जहां, जैसा कि मैंने सुना है, शराब से ज्यादा किसी भी दूसरी चीज की कद्र नहीं की जाती। ये फ्रांसीसी तो सभी जुआरी और शराबी होते हैं, वे तो शैतान के साथ बाजी खेलते हुए अपने बादशाह का सिर तक हार चुके हैं "

सिपाही धीरे से हंस दिया और मानो उसकी हंसी के जवाब में कहीं निकट ही पानी छपछपाया। दोनों की गर्दनें सागर की ओर बढ़ गयीं और चुप रहते हुए दोनों के कान खड़े

हो गये। सागर-तट से भंवर बनाती हुई छोटी-छोटी लहरियां बढ़ चलीं।

"यह तो कोई मछली कांटे पर मुंह मार रही है..."

"कहानी जारी रखो..."

"हां... तो मैं गाल्यार्दी परिवार की बात कर रहा था। वे तीन भाई थे और यह क़िस्सा मंझले भाई के बारे में है जिसे बहुत बड़े मुंह और गरजती आवाज़ के कारण कार्लोने कहा जाता था। उसने लुहार की बेटी ग़रीब जूलिया को अपने दिल की रानी के रूप में चुन लिया। वह बहुत ही समझदार लड़की थी और तगड़े, ताक़तवर लोग आम तौर पर समझदार नहीं होते। कोई चीज़ उनकी शादी में रोड़ा बनी हुई थी और शादी के दिन का इन्तज़ार करते हुए दोनों तड़पते रहते थे। यूनानी का बेटा भी जूलिया पर लट्टू था और चैन से नहीं बैठा था। शुरू में उसने इस बात की बड़ी कोशिश की कि जूलिया उसे चाहने लगे। लेकिन जब कामयाबी नहीं मिली तो यह सोचते हुए उसने लड़की को बदनाम करने की ठानी कि कार्लोने गाल्यार्दी ऐसी लड़की से इन्कार कर देगा और तब वह बड़ी आसानी से उससे शादी कर लेगा। आज के मुक़ाबले में उन दिनों लोग नैतिक दृष्टि से ज्यादा कठोर थे.."

"आज भी..."

"ऐयाशी करना – ये अमीर लोगों के चोंचले हैं और यहां हम सभी ग़रीब लोग हैं," बूढ़े ने कड़ाई से कहा और मानो अतीत की याद ताज़ा करते हुए उसने कहानी आगे जारी रखी –

"एक दिन क्या हुआ कि जूलिया अंगूर-लताओं की कटी

हुई टहनिया जमा कर रही थी। यूनानी के वेटे ने यह ढोंग करते हुए मानों जूलिया के अंगूर-वगीचे की दीवार के कुछ ऊपर-वाली पगडडी पर ठोकर खा गया है, वह सीधे उसके पैरो के पास आ गिरा। ईसाई धर्म की एक अच्छी अनुयायी के नाते जूलिया यह जानने के लिये उस पर झुक गयी कि कही उसे चोट तो नही लग गयी। दर्द से कराहते हुए उसने जूलिया से अनुरोध किया –

"'भगवान के लिये किसी को मदद के लिये नही पुकारना! मुझे डर लगता है कि वेहद डाह करनेवाला तुम्हारा मगेतर अगर मुझे तुम्हारे साथ देख लेगा तो मेरी हत्या कर डालेगा थोडी देर तक आराम करके मैं यहा से चला जाऊगा '

"जूलिया के घुटनो पर सिर रखकर अरिस्तीदो ने ऐसा नाटक किया मानो वेहोश हो गया हो। जूलिया ने घबराकर मदद की गुहार की। किन्तु जब लोग भागते हुए आये तो वह उछलकर ऐसे खडा हो गया मानो विल्कुल भला-चगा हो। वेहद परेशानी जाहिर करते हुए वह अपने प्रेम, अपने सच्चे इरादो की दुहाई देने लगा, कसमे खाकर यह कहने लगा कि शादी करके लडकी को इस वदनामी के धव्वे को धो डालेगा। उसने मामले को ऐसे पेश किया मानो जूलिया के लाड-प्यार मे वेसुध होकर उसे उसकी गोद में ही नीद आ गयी। लडकी के वेहद नाराजगी जाहिर करने पर भी भोले-भाले लोगो ने अरिस्तीदो की वातो पर यकीन कर लिया और वे यह तक भूल गये कि खुद जूलिया ने ही उन्हे मदद के लिये पुकारा था। वे नही जानते थे कि यूनानी की तो नस-नस मे मक्कारी वसी

सनोबरो की टहनियो से भरी छोटी-सी टोकरी और उनके बीच कार्लोने गाल्यार्दी की कटी हुई बायी कलाई। यह उसी हाथ की कलाई थी जिससे उसने जूलिया के मुह पर थप्पड मारा था। जूलिया के माता-पिता सकते मे आ गये और बेटी को साथ लिये, भागते हुए उसके घर पहुचे। कार्लोने ने अपने घर के दरवाज़े पर घुटने टेके हुए उनका स्वागत किया, उसके कटे हुए हाथ पर खून से लथ-पथ कपडा बधा था और वह बालक की तरह बिलख-बिलखकर रो रहा था।

"'यह तुमने क्या कर डाला?' उससे पूछा गया।

"उसने जवाब दिया –

"'मैंने वही किया है जो करना चाहिये था। मेरे प्यार का अपमान करनेवाला आदमी जिन्दा नही रह सकता था – मैंने उसे मार डाला है मेरी निर्दोष प्रेयसी को थप्पड मारने-वाले हाथ ने भी मेरा अपमान किया था – मैंने उसे काट डाला। मैं अब यही चाहता हू कि जूलिया तुम और तुम्हारे सभी लोग मुझे माफ कर दे '

"जाहिर है कि उन्होंने तो उसे माफ कर दिया, मगर कमीनो की रक्षा करनेवाला कानून भी तो है। यूनानी की हत्या करने के जुर्म मे गाल्यार्दी को दो साल तक जेल मे बैठे रहना पडा और उसे वहा से रिहा करवाने के लिये उसके भाइयो को काफी बडी कीमत चुकानी पडी

"इसके बाद उसने जूलिया से शादी कर ली और वे बुढापे तक सुख-चैन की बसी बजाते रहे। इस तरह हमारे द्वीप पर एक नये कुलनाम – मेन्त्सामाने यानी 'हथकटे' का जन्म हुआ।"



२४

मखमली कपडे पहने हुए रात दबे पाव मैदान से नगर मे प्रवेश कर रही है। नगर सुनहरी, जगमगाती बत्तियो मे उसका स्वागत कर रहा है। दो नारियां

ज़ोर से पाइप के कश खींचते हुए बूढ़ा खामोश हो गया।

"तुम्हारा यह क़िस्सा मुझे अच्छा नहीं लगा," सिपाही ने धीरे से कहा। "तुम्हारा यह कार्लोने जंगली था... और यों भी सारी बात बेवक़ूफ़ी की है..."

"सौ साल बाद तुम्हारी ज़िन्दगी भी बेवक़ूफ़ी की ही लगेगी," बूढ़े ने संजीदगी से कहा और अन्धेरे में सफ़ेद धुएं का बड़ा-सा बादल उड़ाते हुए इतना और जोड़ दिया –

"वह भी तब, अगर किसी को यह याद रहा कि कभी तुम इस धरती पर सांस लेते रहे थे..."

नीरवता में फिर से पानी की छपछपाहट हुई, इस बार पहले से कहीं अधिक ज़ोरदार और उतावलीभरी। बूढ़े ने अपनी बरसाती उतार फेंकी, झटपट खड़ा हुआ और ऐसे ग़ायब हो गया मानो काले-काले पानी ने उसे निगल लिया हो। मछली की केंचुली जैसी नीली झलक लिये हुए छोटी-छोटी रुपहली लहरियां मचल रही थीं।



२४

मखमली कपडे पहने हुए रात दबे पाव मैदान मे नगर मे प्रवेश कर रही है। नगर सुनहरी, जगमगाती बत्तियो से उसका स्वागत कर रहा है। दो नारियां

और एक युवक भी मानो रात का अभिनन्दन करते हुए मैदान में चले जा रहे हैं। उनके पीछे-पीछे दिन भर की दौड़-धूप से थका-हारा हुआ ज़िन्दगी का धीमा-धीमा शोर सुनाई दे रहा है।

रोम के अनेक क़बीलों के ग़ुलामों द्वारा बनायी गयी प्राचीन सड़क की काली-काली टाइलों पर तीन व्यक्तियों के पैरों की धीमी-धीमी आहट सुनाई दे रही है। प्यारी ख़ामोशी में एक नारी की स्नेहमयी और दृढ़ आवाज़ सुनाई देती है –

"लोगों के साथ तुम्हें कड़ाई से पेश नहीं आना चाहिये ..."

"क्या तुमने मुझ में कभी कोई ऐसी बात देखी है, मां?" युवक ने पूछा।

"तुम बहुत ही जोश से बहस करते हो ..."

"अपनी सचाई को भी बहुत जोश से प्यार करता हूं ..."

युवक के बायीं ओर पत्थरों पर खड़ाउंओं को घसीटती और सिर को ऊपर उठाकर आकाश को ऐसे ताकती हुई, मानो अंधी हो, एक युवती चल रही है। आकाश में सन्ध्या का बड़ा-सा सितारा चमक रहा है, उसके नीचे डूबते सूरज की हल्की-सी लाल धारी है और इस लाली की पृष्ठभूमि में चिनार के दो पेड़ बिना जली मशालों जैसे लग रहे हैं।

"समाजवादियों को अक्सर जेलों में बन्द कर दिया जाता है," मां ने आह भरकर कहा।

"हमेशा ऐसा ही नहीं होगा। आखिर इससे कोई फ़ायदा तो होता नहीं ..." बेटे ने शान्तिपूर्वक जवाब दिया।

"सो तो ठीक है, लेकिन फ़िलहाल ..."

"न तो ऐसी ताकत आज है और न कभी होगी जो दुनिया के जवान दिल को कुचल सके "

"गीत के लिये ये शब्द बड़े सुन्दर है, मेरे बेटे . "

"लाखो-करोड़ो कण्ठ अब इस गीत को गाते है और पूरी दुनिया ही अधिकाधिक ध्यान से इसे सुन रही है जरा याद करके बताओ – क्या तुम भी पहले कभी इतने धीरज और प्यार से मेरी या पाओलो की बाते सुनती थी?"

"यह ठीक है। लेकिन हड़ताल ने तुम्हे अपना जन्म-नगर छोड़ने को मजबूर कर दिया न "

"दो के लिये वह काफी बड़ा नही। अच्छा है कि पाओलो ही यहा रहे। लेकिन हड़ताल तो हमने जीत ली "

"जीत ली," युवती ने जोर देकर कहा, "तुमने और पाओलो ने "

अपनी बात अधूरी छोड़कर वह धीरे से हस दी और फिर क्षण भर को तीनो चुपचाप चलते रहे। अन्धेरे में एक टीला-सा उभरकर सामने आ गया। वास्तव में वह किसी इमारत के खण्डहरो का ढेर था। उसके ऊपर सफेदे के पेड की पतली-पतली शाखाये विचारमग्न-सी लटकी थी। ये तीनो जब पेड़ के करीब पहुचे तो उसकी शाखाये मानो धीरे-से सिहरी।

"लो – वह रहा पाओलो," युवती ने कहा।

लम्बे कद की काली-सी आकृति खण्डहरो में से निकलकर सड़क के बीच आ खड़ी हुई।

"मन की आखो से देख लिया या क्या?" युवक ने हसते हुए पूछा।

धीरे नगर की बस्तियों की ओर चल दी और एक आकृति तेजी से कदम उठाती हुई आगे, पश्चिम की ओर बढ़ चली जहां सन्ध्या की लाली लुप्त हो चुकी थी और नीले आकाश में अनेकानेक उज्ज्वल सितारे जगमगा उठे थे।

"तो विदा!" रात में दुखद आवाज में धीरे से यह सुनाई दिया।

दूरी से आशा पैदा करती हुई यह आवाज आयी –

"विदा! उदास नहीं होना, जल्द ही मिलेंगे "

लड़की के खड़ाऊ ठक-ठक की आवाज करते हुए बज रहे थे, खरखरी आवाजवाले ने तसल्ली देते हुए ये शब्द कहे –

"उसके साथ सब कुछ ठीक-ठाक ही रहेगा, दोन्ना फिलोमेना। मेरी इस बात पर आप वैसे ही विश्वास कर सकती है जैसे अपनी मदोन्ना की कृपा पर। उसके पास अच्छा दिमाग और मजबूत दिल है, वह खुद प्यार करना जानता है और आसानी से दूसरों को अपने से प्यार करने को विवश कर सकता है और लोगों के प्रति प्यार ही तो वे पंख है जो आदमी को सबसे अधिक ऊंचाई पर पहुंचा देते है "

नगर अन्धेरे में अपनी छोटी-छोटी और मन्द रोशनीवाली बत्तियों को बढ़ाता जा रहा था और लंबे कद के व्यक्ति के शब्द भी रोशनियों की तरह ही चमकते थे।

"जब किसी व्यक्ति के हृदय में दुनिया को एकजुट करनेवाले शब्द होते है तो उसे हर जगह उसका ऊंचा मूल्य आंकनेवाले लोग भी मिल जाते है – हर जगह ही!"

नगर की रक्षा-दीवार से सटा हुआ एक छोटा-सा सफेद

"हा," युवती ने धीमे से कहा। "बेशक ठीक है "

मा तनिक हस दी –

"ओह, मेरे बच्चो!. जब तुम्हारी बातें सुनती हू और तुम लोगों को देखती हू तो यह यकीन हो जाता है कि तुम लोगों की जिन्दगी हमसे बेहतर होगी . "

और तीनो पास ही से नगर की सडक पर आखो से ओझल हो गये जो पुरानी और घिसी-फटी पोशाक की आस्तीन की तरह तग और खस्ताहाल थी .

धूम-धुआरे टुकड़ों को हवा सागर की ओर उड़ा ले गयी, जहां वह फिर से नीलगूं घटा बन गयी और बारिश के कारण शान्त हुए सागर पर घनी छाया डालने लगी।

पूरब की ओर आकाश तिमिराच्छन्न था, अंधेरे में बिजली कौंधती थी, मगर द्वीप के ऊपर आंखों को चौंधियाता हुआ प्रखर सूर्य खूब चमक रहा था।

द्वीप को अगर दूर से, सागर से देखा जाये तो वह पर्व के दिन भव्य मन्दिर जैसा लगता था—अच्छी तरह से धुला-धुलाया, चटक फूलों से खूब सजा-सजाया। सभी ओर बारिश की मोटी-मोटी बूंदें चमक रही थीं—अंगूर-लताओं की हल्की पीली, कोमल पत्तियों पर पुखराजों की तरह, विस्टारिया के गुच्छों पर एमेथिस्टों की तरह, सुर्ख जिरानियम पर लाल मणियों की तरह और घास, हरीभरी घनी झाड़ियों और वृक्षों के पत्तों पर मरकत मणियों की तरह।

जैसा कि बारिश के फौरन बाद होता है, निस्तब्धता छाई थी। पत्थरों के बीच और मेहुड, काली रसभरी तथा सुगन्धित, उलझी-उलझायी क्लेमाटिस की जड़ों के नीचे छिपे सोते की धीमी-धीमी कलकल ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। नीचे सागर धीरे-धीरे मरमर कर रहा था।

भटकटैया के सुनहरे डंठल आकाश की ओर सिर उठाये हुए थे, नमी से बोझल होने के कारण धीरे-धीरे हिलने-डुलने थे और जलकणों को अपने अद्भुत फूलों पर से धीरे-धीरे नीचे गिरा रहे थे।

रस-भीगी हरी पृष्ठभूमि में हल्के बैंगनी रंग के विस्टारिया

फूल मानो लाल जिरानियम पुष्पों और गुलावों से होड़ कर रहे थे, क्लेमाटिस के गुच्छों का ललछौंही, पीला कमखाव मानो इरिस तथा गिली फूलों की काली मखमल से घुला-मिला हुआ था। सव कुछ इतना उज्ज्वल और चटकीला था कि सभी फूल मानो वायलिनों, वांसुरियों और भाव-भीने वायलिनचेलो की तरह गूंजते हुए प्रतीत हो रहे थे।

नम हवा पुरानी और तेज़ सुरा की भांति महकी हुई और नशीली थी।

विस्फोटों से जहां-तहां टूटी-चटखी, कटी-फटी भूरी चट्टान के नीचे, जिसके सुराखों में मोर्चा खाये लोहे के वड़े-वड़े धव्वे थे, और पीले तथा भूरे पत्थरों के वीच जिनसे डाइनोमाइट की खट्टी-खट्टी गन्ध आ रही थी, गीले चिथड़े और चमड़े की चप्पलें पहने हुए चार हट्टे-कट्टे खनिक दोपहर का भोजन कर रहे थे।

वे एक ही कटोरे में से आलुओं और टमाटरों के साथ ज़ैतून के तेल में तले हुए आक्टोपस के कड़े मांस को वड़े इतमीनान से और मज़े ले लेकर खा रहे थे और एक ही वोतल को मुंह लगाकर वारी-वारी से लाल शराव पीते थे।

इनमें से दो सफ़ाचट चेहरोंवाले और एक-दूसरे से वहुत ही मिलते-जुलते, यहां तक कि जुड़वां भाइयों जैसे लगते थे। तीसरा नाटा, काना और लंगड़ा था और उसके दुवले-पतले शरीर की तेज़ गतिविधियां वूढ़े, जर्जर पक्षी की याद दिलाती थीं। चौथा था चौड़े-चकले कंधों, लम्वी दाढ़ी, और हुकदार नाक-

वाला अधेड उम्र का व्यक्ति जिसके बालो मे खूब सफेदी थी।

वह रोटी के बडे-बडे टुकडे तोड़ता, उनमे शराब के कारण भीगी हुई मूछो को पोछता, कानों-से मुह मे रोटी का टुकडा डालता और बालदार जबड़ो को लयबद्ध ढग मे हिलाते-डुलाते हुए अपनी बात कहता --

"यह सब बकवास है, झूठ है! मैंने कोई बुरा काम नही किया "

घनी-घनी भौहो के नीचे से उसकी भूरी आखे दुख की छाया और व्यग्य की झलक लिये देखती थी, आवाज उसकी भारी और खरखरी-सी थी और वह बोलता था धीरे-धीरे और मानो मन मारकर। उसका टोप, चोर-लुटेरो जैसा बालो से ढका चेहरा, बडे-बडे हाथ और गाढे का नीला सूट जिस पर नीचे से ऊपर तक पत्थरो के चूरे की सफेद परत चढी हुई थी – हर चीज से यह पता चलता था कि वही बारूद बिछाने के लिये चट्टान मे सूराख कर रहा था।

उसके तीनो साथी उसे टोके बिना बडे ध्यान से उसकी बात सुन रहे थे, बारी-बारी से उसकी आखो मे ऐसे झाक लेते थे मानो कह रहे हो –

"आगे सुनाते जाओ "

और अपनी सफेद भौहो को ऊपर-नीचे हिलाते-डुलाते हुए वह कहानी कहता जा रहा था –

"यह आदमी जिसका नाम अन्द्रेआ ग्राम्सो था, रात के वक्त चोर की तरह हमारे गाव मे आया। भिखारियो की तरह फटेहाल, बूटो के रग का ही टोप पहने हुए और उनकी तरह से

वह उनके मुह पर ही हसता हुआ यह कहकर उनकी बात काटता, 'जब मैं गरीब था तो मुझ पर भी कोई रहम नही करता था।' वह पादरियो और फौजी पुलिसवालो से हेल-मेल रखता और दूसरे लोग तो अपनी बहुत ही मुश्किल घडी में उससे मिल पाते और उस वक्त वह जैसे चाहता, उन्हे अपने इशारो पर नचाता।"

"ऐसे लोग भी है इस दुनिया में," लगड़े ने धीरे से अपने इन्ही शब्दो को दोहराया। तीनों व्यक्तियों ने उसकी ओर सहानुभूति से देखा, सफाचट चेहरेवाले एक खनिक ने चुपचाप उसकी तरफ बोतल बढा दी, बूढे ने बोतल ले ली, प्रकाश में उसको देखा और पीने से पहले कहा—

"मदोन्ना के पावन हृदय के नाम पर पीता हू!"

"वह अक्सर यह कहता 'गरीब हमेशा अमीरो के लिये और बेवकूफ अक्लमन्दो के लिये काम करते रहे हैं। सदा ऐसा ही होना भी चाहिये।'"

कहानी कहनेवाला तनिक हसा, उसने बोतल की ओर हाथ बढाया,—वह खाली हो चुकी थी। उसने लापरवाही से उसे पत्थरों पर फेंक दिया जहा हथौडे, कुदाले और बारूद की बत्ती का टुकडा काली नागिन की तरह टेढा-मेढा पडा था।

"उसके उक्त शब्द सुनकर मुझ नौजवान और मेरे ऐसे ही साथियों को बहुत बुरा लगा। वे बेहतर जीवन की हमारी आशाओं और आकाक्षाओं पर पानी फेरते थे। तो एक शाम को क्या हुआ कि मेरी और मेरे मित्र लुकीनो की एक मैदान में

उससे भेंट हो गयी जब वह घोड़े पर सवार उतावली के बिना कहीं जा रहा था। हमने बड़ी शिष्टता से, किन्तु दृढ़तापूर्वक उससे कहा: 'आपसे अनुरोध करते हैं कि आप लोगों के साथ अच्छे ढंग से पेश आया करें।'"

सफ़ाचट चेहरोंवाले ठठाकर हंस दिये, काना भी धीरे से हंसा और कहानी सुनानेवाले ने गहरी सांस ली।

"निश्चय ही यह मूर्खता की बात थी! लेकिन जवानी तो निष्कपट होती है। वह शब्दों की शक्ति में विश्वास करती है। मैं तो कहूंगा कि जवानी हमारे जीवन में आत्मा की आवाज़ होती है..."

"तो उसने क्या जवाब दिया?" बूढ़े ने पूछा।

"वह बड़ी दिलेरी से हम पर चिल्लाया: 'मेरे घोड़े की लगाम छोड़ दो, लुटेरो!' और पिस्तौल निकालकर कभी मुझे तो कभी मेरे साथी को दिखाने लगा। हमने उससे कहा: 'ग्रास्सो, आपको हमसे डरने की ज़रूरत नहीं, हम पर बिगड़ने-बरसने की भी आवश्यकता नहीं। हम तो आपको सिर्फ़ सलाह दे रहे हैं!'"

"यह समझदारी की बात थी!" सफ़ाचट चेहरेवालों में से एक ने कहा और दूसरे ने सिर झुकाकर समर्थन किया। लंगड़े ने होंठों को कसकर भींच लिया और अपनी टेढ़ी-मेढ़ी उंगलियों से एक पत्थर को छूते हुए उसे ताकने लगा।

खाना ख़त्म हो गया था। इनमें से एक पतली-सी शाखा लेकर घास के डंठलों से शीशे की तरह चमकती हुई पानी की बूंदें नीचे गिराने लगा, दूसरा इसे देखते हुए सूखे तिनके से दांतों

को साफ करने लगा। मौसम अधिकाधिक खुश्क और गर्म होता जा रहा था। दोपहर की छोटी-छोटी परछाइयां जल्दी-जल्दी लुप्त होती जा रही थीं। सागर धीरे-धीरे मरमर कर रहा था, गम्भीर कहानी धीमे-धीमे आगे बढ़ रही थी।

"लुकीनो के जीवन पर इस भेंट का बुरा प्रभाव पड़ा। उसके पिता और चाचा ग्राम्स्रो के ऋणी थे। बेचारा लुकीनो दुबला हो गया, दांत पीसता रहता और उसकी आंखें भी वे नहीं रहीं जिन पर लड़कियां फिदा होती थीं। 'ओह,' उसने एक दिन मुझसे कहा, 'हमने सामी बेवकूफी की। साली के भूत भी कभी बातों से मानते हैं।' मैंने सोचा—'लुकीनो तो उसकी हत्या कर सकता है।' मुझे उस पर और उसके परिवार के भले लोगों पर तरस आया। और मैं एकाकी तथा गरीब आदमी था। मेरी मां का तभी देहान्त हुआ था।"

हुक जैसी नाकवाले खनिक ने चूने से सफेद हुए हाथों से अपनी मूछों और दाढ़ी को सवारा। ऐसा करते समय उसके बायें हाथ की तर्जनी पर चांदी की अगूठी, जो शायद काफी भारी थी, चमक उठी।

"अगर मैं मामले को सिरे चढ़ा सकता तो हमारे लोगों का कुछ भला भी हो जाता। लेकिन मेरा दिल नर्म है। एक दिन सड़क पर ग्राम्स्रो से मेरी मुलाकात हो गयी। मैंने उसके साथ-साथ चलते हुए, जहां तक सम्भव हो सका, बड़ी नम्रता से उससे यह कहा 'आप बड़े लालची और क्रूर हैं आपके साथ निर्वाह करना लोगों के लिये बड़ा मुश्किल है। आप किसी को हाथ उठाने के लिये मजबूर कर देंगे और उस हाथ में छुरा ...

है,' मैंने जजो से कहा, 'लेकिन मैं मामले को यही खत्म नहीं मानता हू।'"

उसने पत्थरो के बीच मे शराब की नई बोतल निकाली और मूछो के बीच उसे मुह मे लगाकर देर तक शराब पीता रहा। उसका बालो से ढका हुआ टेटुआ जल्दी-जल्दी ऊपर-नीचे होता रहा और दाढ़ी के बाल तन गये। शेष तीनो व्यक्ति चुपचाप और कड़ाई से उसे देखते रहे।

"ऊब महसूस होती है यह चर्चा करते हुए," बोतल साथियो को देते और शराब की बूदो से भीगी दाढ़ी को पोंछते हुए उसने कहा।

"गाव लौटने पर मुझे यह समझते देर न लगी कि वहा अब मेरे लिये जगह नही है—सभी मुझसे डरते थे। लुकीनो ने मुझे बताया कि इस एक साल के दौरान जिन्दगी और भी ज्यादा मुश्किल हो गयी है। वह बेचारा तो बिल्कुल मुर्दा-सा होकर रह गया था। *'अच्छी बात है,' मैंने सोचा और उस ग्राम्सो के* यहा पहुच गया। मुझे देखकर उसके चेहरे पर हवाइया उड़ने लगी। 'मै लौट आया हू,' मैंने कहा, 'अब तुम यहा से चलते बनो!' उसने बन्दूक उठाई और चला दी, लेकिन उसमें पक्षियों को मारनेवाले छर्रे भरे हुए थे और फिर उसने निशाना भी साधा तो मेरे पैरो का। मैं तो गिरा भी नही। 'अगर तुम मुझे मार डालते तो मैं कब्र से उठकर भी तुम्हारे पास आ जाता। मैंने मदोन्ना की कसम खाई है कि तुम्हे यहा से निकालकर ही छोड़ूगा। तुम जिद्दी हो और मैं भी!' हमारे बीच हाथापाई शुरू हो गयी और अनजाने ही मैंने उसका हाथ तोड़ डाला। मै ऐसा

चाहता था, वही मुझ पर पहले टूट पड़ा था। लोग आ गये, मुझे पकड़ लिया गया। इस वार मैं तीन साल और नौ महीने तक जेल में बैठा रहा और जव मेरे दण्ड की अवधि समाप्त हुई तो जेल के वार्डन ने, जो यह सारा क़िस्सा जानता था और मुझे चाहता था, मुझे वहुत समझाया-बुझाया कि मैं घर न लौटूं और अपूलिया में उसके दामाद के यहां काम करने चला जाऊं। उसके दामाद की वहां काफ़ी ज़मीन और अंगूरों का बगीचा भी था। लेकिन, ज़ाहिर है, कि मैं शुरू किये हुए काम को अधूरा ही कैसे छोड़ सकता था। मैं पक्का इरादा बनाकर घर लौटा कि फ़ालतू शब्द बोलने के चक्कर में नहीं पड़ूंगा, क्योंकि तब तक यह समझ चुका था कि दस में से नौ शब्द बेकार होते हैं। मेरे दिल-दिमाग़ में बस, यही शब्द समाये हुए थे—'चलते बनो यहां से!' मैं इतवार के दिन गांव में पहुंचा, सीधा गिरजे की प्रार्थना में चला गया। ग्रास्सो वहीं था, उसने फ़ौरन मुझे देख लिया, उछलकर खड़ा हुआ और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा—'भाइयो, यह आदमी मेरी हत्या करने के लिये ही यहां आया है, शैतान ने ही मेरी जान लेने को उसे यहां भेजा है!' इससे पहले कि मैं उस पर हाथ उठाता, उससे कुछ कह पाता, लोगों ने मुझे घेर लिया। लेकिन इसके बावजूद वह धड़ाम से फ़र्श पर गिर पड़ा—उसके शरीर के दायें हिस्से और ज़बान को लक़वा मार गया। इस घटना के सात हफ़्ते बाद वह इस दुनिया से कूच कर गया। बस, इतनी ही बात है। लेकिन लोगों ने मेरे बारे में कैसा क़िस्सा गढ़ डाला। बहुत ही भयानक, मगर सरासर झूठा।"

वह तनिक हंसा, उसने सूरज की तरफ़ देखा और कहा—

"अब काम शुरू करना चाहिये ..."

सूरज सिर पर आ गया था और सभी परछाइयां लुप्त हो गयी थीं।

क्षितिज पर जमा बादल सागर में उतर गये थे, उसका पानी अधिक शान्त और नीला हो गया था।

गिनन मूराख्रों में से धूप तथा मैल से काली हुई उसकी त्वचा झाकती रहती है।

पेपे उस सूखे तिनके जैसा लगता है जिसे समुद्र से आनेवाली हवा उसके साथ खिलवाड करते हुए इधर-उधर उडा ले जाती है। पेपे सुबह से शाम तक द्वीप की चट्टानों पर उछलता-कूदता रहता है और हर घडी उसकी कभी न थकनेवाली पतली-सी आवाज़ में कही न कही से ये पंक्तियां सुनाई देती रहती है—

मेरा इटली,
मेरा सुन्दर इटली!

हर चीज़ में उसकी दिलचस्पी रहती है—उपजाऊ धरती पर ढेरों-ढेर उगनेवाले फूलों में, बैगनी-सी छटा लिये चट्टानों के बीच इधर-उधर भागती छिपकलियों में, जैतून के नक्काशीदार पत्तों में, अंगूरों की बेल-बूटोंवाली हरी लताओं में फुदकते पक्षियों में, सागर तल के अन्धेरे में लिपटे बागों की मछलियों में और नगर की तंग तथा टेढ़ी-मेढी सडकों पर आते-जाते विदेशियों में। उसके लिये दिलचस्पी रखता है तलवार के घाव से बिगडी सूरतवाला मोटा जर्मन, वह अंग्रेज भी जो हमेशा जनशत्रु की भूमिका अदा करने के आदी अभिनेता की याद दिलाता है, वह अमरीकी भी जो बड़े हठ से अंग्रेज जैसा बनना चाहता है, किन्तु उसे इसमें सफलता नहीं मिलती वह फ़ांसीसी भी जो बेजोड है और झुनझुने की तरह शोर मचाता रहता है।

"वाह, क्या तोंदा है!" अपनी पैनी नज़रों से जर्मन की

ओर संकेत करते हुए पेपे अपने साथियों से कहता है। यह जर्मन अपनी शान में इस हद तक अकड़ा हुआ है कि उसके सारे रोंगटे खड़े हैं। "यह तोबड़ा तो मेरे पेट से कुछ कम नहीं है!"

पेपे जर्मनों को पसन्द नहीं करता। वह गली-सड़कों, चौक-चौराहों और छोटी-छोटी अंधेरी दुकानों में सुने-सुनाये विचारों और वहां की मनःस्थितियों के अनुसार ही जीता है जहां अपने लोग शराब पीते हैं, ताश खेलते हैं और अख़बार पढ़ते हुए राजनीति की चर्चा करते हैं।

"हमारे लिये, हम दक्षिण में रहनेवालों के लिये," वे कहते हैं, "बाल्कान के हमारे स्लाव उन उदार साथियों से कहीं ज्यादा अच्छे हैं जिन्होंने उनके साथ दोस्ती के इनाम के रूप में हमें अफ़्रीका का रेगिस्तान भेंट कर दिया है।"

दक्षिण के आम लोग अक्सर ऐसा कहते रहते हैं और पेपे यह सब सुनता तथा याद रखता है।

कैंची से मिलती-जुलती टांगोंवाला अंग्रेज़ ऊबभरे डग भरता जा रहा है। पेपे उसके आगे-आगे चलता हुआ कोई मरसिया या शोक-गीत-सा गाता है—

मेरा दोस्त गया दुनिया से
बहुत दुखी मेरी बीवी,
लेकिन मैं यह समझ न पाऊं
क्यों ऐसी हालत उसकी?

पेपे के दोस्त हंसी से लोट-पोट होते हुए पीछे-पीछे आते हैं और जब विदेशी अपनी कान्तिहीन आंखों की शान्त दृष्टि

से उनकी ओर देखता है तो चूहों की तरह झाड़ियों में या दीवारों के कोनों के पीछे छिप जाते है।

पेपे के बारे में अनेक दिलचस्प किस्से सुनाये जा सकते हैं। एक बार किसी श्रीमती ने उसे अपने बाग के मेवों से भरी टोकरी अपनी सहेली के पास पहुचाने का काम सौंपा।

"एक सोल्दो दूगी मैं तुम्हे!" उसने कहा। "कुछ बुरा नही होगा तुम्हारे लिये यह कमाई कर लेना "

पेपे ने बडी खुशी से टोकरी ली, उसे अपने सिर पर रखा और चल दिया। लेकिन सोल्दो लेने के लिये वह शाम को ही आया।

"बहुत जल्दी लौट आये!" महिला ने व्यग्यपूर्वक कहा।

"ओह, मैं तो बेहद थक गया हू, श्रीमती जी!" पेपे ने आह भरकर कहा। "आखिर वे तो दस से ज्यादा थे!"

"ऊपर तक भरी हुई टोकरी मे सिर्फ दस मेव?"

"मेव नही, छोकरे, श्रीमती जी!"

"लेकिन मेवों का क्या हुआ?"

"पहले छोकरो के बारे मे सुनिये – मिकेल, जोवान्नी "

महिला भन्ना उठी, उसने उसे कधो से पकडकर झझोडा।

"यह बताओ कि मेव पहुचा आये या नही?"

"चौक तक तो ले गया था, श्रीमती जी! आप जरा सुन लीजिये कि मैं कितने अच्छे ढग से पेश आया। शुरू मे तो मैंने उन बदमाशो की ओर कोई ध्यान ही नही दिया – अगर ये गधे

मे उनकी ओर देखता है तो चूहो की तरह झाडियो मे या दीवारो के कोनो के पीछे छिप जाते है।

पेपे के बारे मे अनेक दिलचस्प किस्से सुनाये जा सकते है।

एक बार किसी श्रीमती ने उसे अपने बाग के मेवो से भरी टोकरी अपनी सहेली के पास पहुचाने का काम सौपा।

"एक सोल्दो दूगी मै तुम्हे!" उसने कहा। "कुछ बुरा नही होगा तुम्हारे लिये यह कमाई कर लेना "

पेपे ने बडी खुशी से टोकरी ली, उसे अपने सिर पर रखा और चल दिया। लेकिन सोल्दो लेने के लिये वह शाम को ही आया।

"बहुत जल्दी लौट आये!" महिला ने व्यग्यपूर्वक कहा।

"ओह, मै तो बेहद थक गया हू, श्रीमती जी!" पेपे ने आह भरकर कहा। "आखिर वे तो दस से ज्यादा थे!"

"ऊपर तक भरी हुई टोकरी मे सिर्फ दस मेव?"

"मेव नही, छोकरे, श्रीमती जी!"

"लेकिन मेवो का क्या हुआ?"

"पहले छोकरो के बारे मे सुनिये – मिकेल, जोवान्नी "

महिला झल्ला उठी, उसने उसे कधो से पकडकर झझोडा।

"यह बताओ कि मेव पहुचा आये या नही?"

"चौक तक तो ले गया था, श्रीमती जी! आप जरा सुन लीजिये कि मै कितने अच्छे ढग से पेश आया। शुरू मे तो मैने उन बदमाशो की ओर कोई ध्यान ही नही दिया – अगर ये गधे

काश, आपने यह देखा होता! तब आप मुझे एक के बजाय दो मोल्दो देती!"

लेकिन वह फूहड़ औरत विजेता के विनम्र गर्व को नहीं समझ पायी, – उसने तो केवल घूमा दिखाकर उसे धमकी ही दी।

पेपे की बहन, जो उससे कई साल बड़ी थी, मगर अक्ल उससे कम रखती थी, किसी धनी अमरीकी के बंगले पर कमरों को झाड़ने-बुहारने के लिये नौकर हो गयी। देखते ही देखते उसका कायाकल्प हो गया – वह साफ-सुथरी रहने लगी, उसके गालों पर लाली आ गयी और बढ़िया खाने की बदौलत अगस्त के महीने में रस से फूलनेवाली नाशपाती की भांति गदराने लगी।

पेपे ने एक दिन उससे पूछा –

"तुम हर रोज खाना खाती हो?"

"मन होने पर दिन में दो-तीन बार भी," उसने बड़े गर्व से जवाब दिया।

"अपने दांतों पर रहम किया करो!" पेपे ने उसे सलाह दी। वह कुछ देर को विचारों में डूब गया और उसने फिर से सवाल किया –

"तुम्हारा मालिक बहुत अमीर है क्या?"

"मेरा मालिक? मेरे ख्याल में तो बादशाह से भी ज्यादा!"

"तुम किसी और को बेवकूफ बनाना! तुम्हारे मालिक के पास कितने पतलून हैं?"

"यह बताना तो मुश्किल है।"

"दस होंगे ?"
"शायद इससे भी ज़्यादा..."
"तो जाकर एक पतलून ले आओ जो बहुत लम्बा न हो
र गर्म हो," पेपे ने कहा।
"किसलिये ?"
"मेरे पतलून का हाल तो तुम देख ही रही हो ?"
वहां देखने को कुछ था ही नहीं, पतलून की जगह कुछ चिथड़े
ही लटक रहे थे।
"हां, तुम्हारे पास पहनने को तो कुछ ज़रूर होना चाहिये,"
बहन ने सहमति प्रकट की। "लेकिन मेरा मालिक तो यह सोच
सकता है कि हमने चोरी की है ?"
पेपे ने उसे मानो सीख देते हुए कहा –
"लोगों को अपने से अधिक बुद्धू नही समझना चाहिये !
जिसके पास बहुप ज़्यादा हो उससे थोड़ा ले लेना चोरी नहीं,
आपस में बांट लेना होता है !"
"यह तो तुम गाने की बात कर रहे हो !" बहन राज़ी
नहीं हुई। लेकिन पेपे ने उसे जल्द ही मना लिया और जब वह
रसोईघर में भूरे रंग का बढ़िया पतलून लेकर आई और व
पेपे की पूरी लम्बाई से भी ज़्यादा लम्बा निकला तो उसने तुर
यह तय कर लिया कि उसे क्या करना चाहिये।
"तुम मुझे ज़रा छुरी दो न !" उसने कहा।
बहन-भाई ने मिलकर अमरीकी के पतलून से पेपे के
ख़ासा आरामदेह सूट बना लिया। वह कुछ ज़्यादा चौड़ा
के कारण बोरा-सा बन गया, फिर भी सुविधाजनक था

गर्दन पर बांध ली जानेवाली डोंगियों के सहारे कंधों पर लटकना था और पतलून की जेबें आस्तीनों का बढ़िया काम देती थीं।

इन दोनों ने इस सूट को और भी बेहतर और आरामदेह बना लिया होता, किन्तु तभी अमरीकी की बीवी ने वहां आकर उनके काम में बाधा डाल दी। वह सभी भाषाओं में और सो भी ढंग से, जैसा कि अमरीकी करते हैं, भद्दे से भद्दे शब्द कहने लगी।

पेपे उसकी इस शब्द-बौछार को किसी तरह भी नहीं रोक पाया। उसने नाक-भौंह सिकोड़ी, दिल पर हाथ रखा, हताश होकर सिर को हाथों में थामा, थककर आह भरी, लेकिन वह पति के आ जाने तक शान्त नहीं हो पायी।

"क्या किस्सा है?" पति ने पूछा।

तब पेपे बोला –

"महानुभाव, आपकी श्रीमती जितना शोर मचा रही है, मुझे उससे हैरानी हो रही है। मुझे तो आपके लिये भी बुरा लग रहा है। जहां तक मैं समझता हूं, आपकी श्रीमती यह सोचती है कि हमने पतलून का सत्यानाश कर दिया है, किन्तु मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मेरे लिये यह बिल्कुल आरामदेह है! वह शायद यह समझती है कि मैंने आपका आखिरी पतलून ले लिया है और आप नया पतलून नहीं खरीद सकते।"

अमरीकी ने बड़ी शान्ति से उसकी पूरी बात सुनने के बाद कहा –

"और छोकरे, मैं यह समझता हूं कि मुझे पुलिस को बुलाना चाहिये।"

"सच?" पेपे को बड़ी हैरानी हुई। "वह किसलिये?"

तुम्हें जेल ले जाने के लिये ..."

पेपे को यह सुनकर बहुत दुख हुआ, उसकी आंखों में आंसू आते रह गये, उन्हें किसी तरह से पीकर उसने बड़ी गरिमा उत्तर दिया –

"अगर आपको यह अच्छा लगता है, महानुभाव, अगर गों को जेल भिजवाने में आपको मज़ा आता है, तो आप बेशक सा कर सकते हैं! लेकिन अगर मेरे पास कई पतलून होते और आपके पास एक भी न होता, तो मैं कभी ऐसा न करता! मैं आपको दो, शायद तीन पतलून दे देता, यद्यपि वे एक साथ ही नहीं पहने जा सकते! ख़ास तौर पर गर्मी में ..."

अमरीकी ठठाकर हंस दिया। बात यह है कि कभी-कभी अमीर लोग भी ख़ुशी की तरंग में होते हैं।

इसके बाद उसने पेपे को चाकलेट और एक फ़्रैंक भी दिया। पेपे ने सिक्के को दांतों तले दबाकर देखा और अमरीकी को धन्यवाद देते हुए बोला –

"आपका बहुत आभारी हूं, महानुभाव। मैं यह तो मान ही सकता हूं कि सिक्का असली है?"

किन्तु पेपे की सबसे ज़्यादा प्यारी छटा तो तभी होती है जब वह पत्थरों के बीच कहीं अकेला खड़ा हुआ उनकी दर को ऐसे ग़ौर से देखता रहता है मानो उनमें पत्थरों के जी का अन्धकारपूर्ण इतिहास पढ़ रहा हो। ऐसे क्षणों में अ की सुन्दर झिल्ली चढ़ी उसकी आंखें फैल जाती हैं, पतले

हाथ पीठ पीछे बंधे होते हैं और एक ओर को तनिक झुका हुआ सिर खिले हुए फूल की भांति धीरे-धीरे डोलता रहता है। वह धीमे-धीमे कुछ गुनगुनाता रहता है—हमेशा ही वह कुछ गाया करता है।

उस समय भी वह बहुत अच्छा लगता है जब विस्टारिया फूलों की उमड़ती बैंगनी धाराओं के सामने वह तार की तरह तना हुआ खड़ा रहता है और मानो सागर की ओर से आनेवाली हवा की सांसों में रेशमी पंखुड़ियों की धीमी-धीमी फुसफुसाहट सुनता हो।

वह उन्हें देखता हुआ गाता रहता है—

"फिओरीनी फिओरीनो "

बहुत दूर से सागर की दबी-घुटी सांसें ऐसे सुनाई देती हैं मानो कोई विराट खजड़ी बज रही हो। फूलों के ऊपर तितलिया आंख-मिचौनी का खेल खेल रही है—पेपे धूप के कारण आंखे सिकोड़कर उन्हें देखता है, होठो पर तनिक ईर्ष्या और उदासी की मुस्कान लिये हुए उन्हें देखता है, फिर भी यह पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ प्राणी की मुस्कान होती है।

"हो-हो!" वह जोर से चिल्लाता है और हरी छिपकली को ताली बजाकर डराता है।

और जब सागर दर्पण की तरह शान्त होता है और पत्थरों के बीच तट से टकराती लहरों के फेन की सफेद झालर नहीं होती, पेपे किसी पत्थर पर बैठा हुआ अपनी पैनी नजरो से पारदर्शी पानी को ध्यान से देखता रहता है, जहा लाल-लाल पनझाड़ियों में मछलिया धीरे-धीरे तैरती होती हैं, झींगे तेजी से झलक दिखाते है और केकड़े टेढ़े-टेढ़े से रेंगा करते हैं। और

नीरवता में नीले पानी के ऊपर लड़के का विचार में डूबा हुआ स्पष्ट स्वर धीमे-धीमे तैरता रहता है–

“ओ सागर... सागर...”

वयस्क लोग इस लड़के के बारे में कहते हैं–

“यह अराजकतावादी बनेगा!”

किन्तु अधिक दयालु और एक-दूसरे को अधिक अच्छी तरह से समझनेवाले लोग दूसरा ही विचार प्रकट करते हैं–

“पेपे हमारा कवि बनेगा...”

अत्यधिक बुद्धिमान तथा सबका आदर-सम्मान पानेवाला बूढ़ा बढ़ई पास्कवालीनो, जिसका सिर मानो चांदी में ढला हुआ है और चेहरा रोम के पुराने सिक्के पर अंकित चेहरे जैस है, दूसरी ही बात कहता है–

“हमारे बच्चे हमसे बेहतर होंगे और ज़्यादा अच्छा जीव बितायेंगे!”

बहुत-से लोग उसकी बात पर विश्वास करते हैं।

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी।

हमारा पता है

रादुगा प्रकाशन,
१७, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।